श्री

अवधूत ज्ञान चिन्तामणि

अनन्त श्री स्वामी अचलरामजी महाराज के परम शिष्य

सर्व श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज कृत

[सद्उपदेश प्रद छन्द-काव्य एवं भजन मय संगीत पद्य]

परिवर्द्धित एवं संशोधित द्वितीय संस्करण

सम्पादक एवं प्रकाशक

स्वामी रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'

स्वाधिष्ठाता उत्तम आश्रम, सतसंग भवन

कागामार्ग, जोधपुर—६

ॐ राम ॐ

मंगल मंत्र

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानी परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

प्रार्थना मंत्र

ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः ॥२॥

ब्रह्म गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य ।
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥यजु० ३६/३॥

गीता के अट्ठारह नाम पाठ

गीता नामानि वक्ष्यामि गुह्यानि शृणु पाण्डवः ।
कीर्तनात्सर्व पापानि विलयं याति तत्क्षणात् ॥४॥
गंगा, गीता, गायत्री च सीता, सत्या, सरस्वती,
ब्रह्मविद्या, ब्रह्मवलि, त्रिसन्ध्या, मुक्त गहनी ।
अर्धमात्रा. चिदानन्दा, भयघ्नी, भवनाशिनी,
वेदत्रयी, परानन्ता, तत्वार्थ ज्ञान मञ्जरी ॥५॥
इत्येतानि जपेन्नित्यं नरो निश्चल मानसः ।
ज्ञानसिद्धिं लभेच्छिघ्रं तथान्ते परमं पदम् ॥६॥

एक श्लोकी श्री रामायण-पाठ

आदौ राम तपो वनादि गमनं हत्वा मृग कांचनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सभाषणम ॥
बालि निग्रहणं समुन्द्र तरणं लंका पुरी च दाहनम् ।
पश्चात् रावण कुम्भकरण हननं एतद्धि राम यणम् ॥७॥

एक श्लोकी श्री भागवत-पाठ

आदौ देवकी देव गर्भ जननं गोपि गृह वर्द्धनम् ।
माया पूतनं जीवि ताप हरणं गोवर्धनो च धारणम् ॥
कंशच्छेदनं कौरवादि हननं कुन्ती सुताः च पालनम् ।
एतद्धि श्री मद्भागवत पुराण कथनं श्री कृष्ण लीलामृतम् ॥८॥

❀ श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः ❀

श्री

* अवधूत ज्ञान चिन्तामणि *

जिसमें

श्री संतदासोत गुदड़ रामस्नेही सम्प्रदाय जोधपुर खण्डपीठ के पीठाधिश्वर

श्री श्री १०८ श्री मत्परमहंस महामण्डलेश्वर ब्रह्मनिष्ठ

श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज

उपनाम—श्री स्वामी आतमाराम जी महाराज

कृत झूलना, इन्दव छन्दादि काव्य

एवं

श्री स्वामी जी के विरक्त शिष्य सन्तों की पद्यात्मक अनुभव वाणी तथा आप के गद्दीपीठ उत्तराधिकारी कृत शब्द संकलन है।

अर्थात्

सुन्दर उपदेश प्रद उतम भक्ति, ज्ञान वैराग्य, बोंध्द, मय सहज योग संगम जिज्ञासु जन हितार्थ संगीत पद्य प्रकाशन है।

सम्पादक

ब्रह्मलीन ब्रह्मविद्वरियान स्वामी उत्तमराम जी महाराज के परम शिष्य

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्यजी महाराज 'अच्युत'

[भारतीय समाज दर्शनादि अनेक सत्साहित्यक ग्रन्थोंके रचयिता]

महन्त-श्री उत्तम आश्रम, कागामार्ग, जोधपुर-३४२००६

प्रकाशक : स्वामी रामप्रकाश जी महाराज
महन्त–श्री उत्तम आश्रम
कागामार्ग, जोधपुर-३४२००६

द्वितीयावृति : परिंवर्द्धित् एवं संशोधित संस्करण

मूल्य : सात रुपये ७.००
विक्रम २०४४, शकाब्द १९०९, सन् १९८७
रामानन्दाब्द ६८६, उतमरामाब्द ११८,

सुविधा : पुस्तक आर्डर के साथ ५) रुपये अग्रिम आने पर ही V.P.P. भेजी जाती है, डाक खर्च अलग होता है। पत्र व्यवहार जबाबी पत्र से हिन्दी में करें।

मुद्रक : चाँद प्रिण्टर्स, नागौरी गेट, जोधपुर–६

ॐ

श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः

श्री अवधूत-ज्ञान-चिन्तामणि

आशा पाश विनिर्मुक्त आदि मध्यान्त निर्मलः।
आनन्दे वर्तते नित्यमकारं तस्य लक्षणम् ॥१॥
वासना वर्जिता येन वक्तव्यं च निरामयः।
वर्तमानेषु वर्तंत वकारं तस्य लक्षणम् ॥२॥
धूलि धूसर गात्राणि धूत चित निरामयः।
धारणा ध्यानानिर्मुक्तो धूकारस्तस्य लक्षणम् ॥३॥
तत्व चिन्ता धृता येन चिन्ता चेष्ठा विवर्जितः।
तमोऽहंकार निर्मुक्तस्तकारस्तस्य लक्षणम् ॥४॥

विन्दति विन्दति नहिं नहिं यत्र, छन्दोलक्षणं नहिं नहिं तत्र।
सम रसमग्नो भावित पूतः, प्रलपति तत्वं परमवधूतः ॥५॥
न धर्म युक्तो न च पाप युक्तो, न बन्ध युक्तो न च मोक्षयुक्तः।
युक्ततंत्व युक्तं न च मे विभाति, स्वरूप निर्वाण मना मयोऽहम् ।६।

धर्मार्थ काम मोक्षांश्च द्विपदादि चराऽचरम्।
मन्यन्ते योगिनः सर्व मरीचि जल सन्निभम् ॥७॥
पञ्च भूतात्मकं विश्वं मरीचि जल सन्निभम्।
कस्याप्य हो नमस्कुर्याम हमेको निरञ्जनः ॥८॥

प्रकाशक की श्यामानन लेखनी द्वारा

द्वितीय संस्करण की

प्रस्तावना

पूज्यपाद आचार्य स्वामी उत्तमरामजी महाराज की छन्दोमय झूलनादि रचना का प्रस्तुत ग्रन्थ 'अवधूत ज्ञान चिन्तामणि' का प्रथम संस्करण सतगुरू देव की आज्ञानुसार पूर्व (सं २०13 वि०, १९५७ ई. में) रफकागज पर छोटे अक्षरों में (छन्द १६०, भजन ५०) छपवाकर पाठीजनों को दिया था। जिसे वेदान्त-प्रेमी गुरू-भक्त पिपासुओं ने यथावत श्रध्दा का अनुसरण किया।

मूल पुस्तिका को समर्थ सतगुरूदेव जी ने अपने वन्य विचरण के तपो मय वैराग्य कालिक जीवन में "स्वान्त:सुखाय परहिताय" अर्थात् पारमार्थिक उद्देश्य से (वि० स. १९५० से १९८० के बीच) यदा कदा अनुभव-गिरा निसृत भावों को छन्दोबध्द (पद्यात्मक) रचना किया करते थे। जिन में से कतिपय काव्य अद्यावधि पर्यन्त लीला क्षैत्र (भ्रमण-भूमि) सिन्ध/पञ्जाब प्रान्त में (जो क्षैत्र आज भारतीय सीमा से अलग है) लुप्त प्राय: ही हैं। क्योंकि आप अतीत काल से अन्तिमावस्था तक जीवन मुक्तावस्था (फकीरी मौज) से ही रहते रहै और विरक्त शिष्य-संत जनों ने ध्यान नहीं दिया, तदुपरान्त देश विभाजन हो जाने से तथा वृध्द गृहस्थ जिज्ञासु जनों का जीवन नहीं रहने से अब प्राप्त करने में अतीव दुर्बल स्थिति बनी हुई है। तद्यपि हमारे अथक प्रयास स्वरूप गुरू भक्तों द्वारा अत्यन्त आग्रह करने पर हुई पार-पत्र से पाक-यात्राओं (सन् १९८४ एवं १९८६) के परिणाम में शिष्यजनों से प्रात: स्मरणीय सतगुरू देव की कुछ वाणी एवं तपस्वी जीवन मय बाल-योगारूढ सिध्दावस्था के सौम्य मूर्त दर्शनीय चित्रावलोकन प्राप्त हुए जो समयानुकूल उन की अपरोक्षानुभव वाणी में सर्व सुलभार्थ प्रकाशनों के अन्तर्गत जोड़ दिये गये है।

आप की प्राचीन संगीत मय (वाणी-पद्यात्मक) रचना (वि. सं. १९६३ से १९८५) के पूर्वप्रकाशन (सन् १९५६, संवत् २०१३) "श्री उत्तमराम भजन प्रकाश" नामक ग्रन्थ का भी पाठको नें पठन-लाभ किया। जो कि परिवर्द्धित एवं संशोद्धित द्वितीयावृति (सं० २०४३, सन् १९८६) के रूप में सुलभ अर्पित हुआ है।

स्वामी जी का लाक्षणिक स्वाध्याय, विचारमय वैराग्य जीवन की भुमिका का आद्योपान्त स्वाध्याय पठन से पाठी जनों को स्वयं अनुकरणीय आनन्द की उपलब्धि होगी।

अवधूत ज्ञान चितामणि के द्वितीय संस्करण को परिवर्द्धित रूप में प्रस्तुत किया है, इस में कई भजन, छन्द, गुरुवानुज गणों की दुर्लभ दैनन्दनियों से प्राप्त भजनों को भी संकलित किया है और कुछ प्रश्न-उत्तर आदि के बोद्धिक शब्दों को भी स्थान दिया है अर्थात् अब कुल १०२ भजन एवं ३१३ छन्द विविध पद्यात्म भाव का प्रस्तुतीकरण है।

'मङ्गलं लेखकानां च पाठकानां च मङ्गलम्।
'मङ्गलं सर्वलोकानां भुयो भुयोऽस्तु मङ्गलम् ॥ १ ॥

'यहाँ प्रयोजन गण अगण, और द्विगुण को काहि।
ऐकै गुण रधुवीर गुण, त्रिगुण जपत हैं जाहि ॥ २ ॥

आचार्य विहार
(उत्तम प्रकाशन-पुस्तकविभाग)
उत्तम आश्रम, कागामार्ग,
जोधपुर-६

विश्व हितेच्छु
संतरामप्रकाशाचार्य
(महन्त)
दि० २६ फरवरी, १९८७ ई०

ॐ

* श्री अवधूत ज्ञान चिन्तामणि *

विषयानुक्रमणिका (सूचि) प्रारम्भ

क्रमांक	विषय सूचि		पृष्टांक

विषय सूचि

क्रमांक	विषय सूचि	पृष्टांक

क्रमांक	विषय सूचि		पृष्टांक

* आरती *

ॐ जय गुरुदेव हरे, स्वामी जय गुरुदेव हरे।
आर्त जन जिज्ञासू तारे, संकट दूर करे ।।टेर।।
'संतदास' संशय को काटे, समता दूर धरे।
'कृपाराम' कृपा के सागर, प्याला ज्ञान भरे ।।१।।
'केवलराम' केवल मत पूर्ण, भ्रान्ति भ्रम हरे।
'चतुराम' चतुर मति शोधन, निर्मल बोद्ध भरे ।।२।।
'दौलतराम' विश्व की दौलत, अखण्ड भण्डार सरे।
'गंगाराम' गंगवत निर्मल, पाप रू ताप चरे ।।३।।
'हरिराम' हरे अघ सारा, शिव के रूप खरे।
'जीयाराम' जीवन गति मुक्ति, सांख्य वेदांत गरे ।।४।।
सो 'सुखराम' सवं सुखसागर, सत चित आनन्द अरे।
'अचलराम' अचल अज आतम, अनंत अखण्ड़ छरे ।।५।।
'उत्तमराम' उत्तम सत केवल, अपना आप परे।
गूदड़-ज्ञान वैराग्य साधना, भूमि अवतरे ।।६।।
रामानंद स्वामी की गद्दी, सत अवधूत जरे।
धीरज धारणा राघव प्रेम को, विशिष्ठाऽद्वैत करे ।।७।।
गुरु प्रणाली योग अनादि, जानत मुक्ति तरे।
'रामप्रकाश' प्रणाम प्रेम से, हरदम ध्यान वरे ।।८।।

✻ मंगलाचरण ✻

हरिराम ज्ञान गुरु गांदी, सदा अखण्ड अभग।
तिन के शिष्य जीयारामजी, सो सुखराम असंग ॥
सो सुखराम असंग, अचलराम ब्रह्मज्ञानी।
उतमराम ब्रह्मरूप सो, ब्रह्मवेता सुखदानी ॥
तत्व पिछाण्यो आप में, ताहि प्रसाद विराम।
'रामप्रकाश' भ्रम तम हन्यो, ज्ञान गादि हरिराम ॥१॥

हरिराम गुरुदेव को, जीयाराम प्रणाम।
सुखसागर सुखरामजी, अचलराम निष्काम ॥
अचलराम निष्काम, अद्वय अनंत अपारा।
उत्तमराम सोई तत्व लहि, भ्रान्ति भेद विडारा ॥
'रामप्रकाश' निष्ठा करी, गुरु गद्दी विश्राम।
बारम्बार कर जोड़ के, नमो नमो हरिराम ॥२॥

पाराशर हरिरामजी, जीयाराम श्री व्यास।
शुकदेव सुखरामजी, अनुभव रूप अभास ॥
अनुभव रूप अभास, परोक्षत अचलरामा।
जनमेंऽजन उतमरामजी, गुरु पद सरिया कामा ॥
'रामप्रकाश' जन शरण में निश्चय किया अपार।
धन धन गूदड़ गंग को, हरिया ता शिष्य पार ॥३॥

हरिराम हर को नमो, जीयाराम जगदीश।
सो सुखराम अनूंप है, अचलराम शुद्ध ईश ॥
अचलराम शुद्ध ईश, फूल - नारायण दोई।
उतमराम रू दया में, अचल भेद ना कोई ॥
उतम शिष्य गूदड़ गुरु, रामप्रकाश प्रणाम।
बारम्बार कर जोड़ के, नमो नमो हरिराम ॥४॥

श्री उत्तराम-भजन-प्रकाश एवं अवधूत ज्ञान चिंतामणि आदि अनेक ग्रन्थों के रचियता
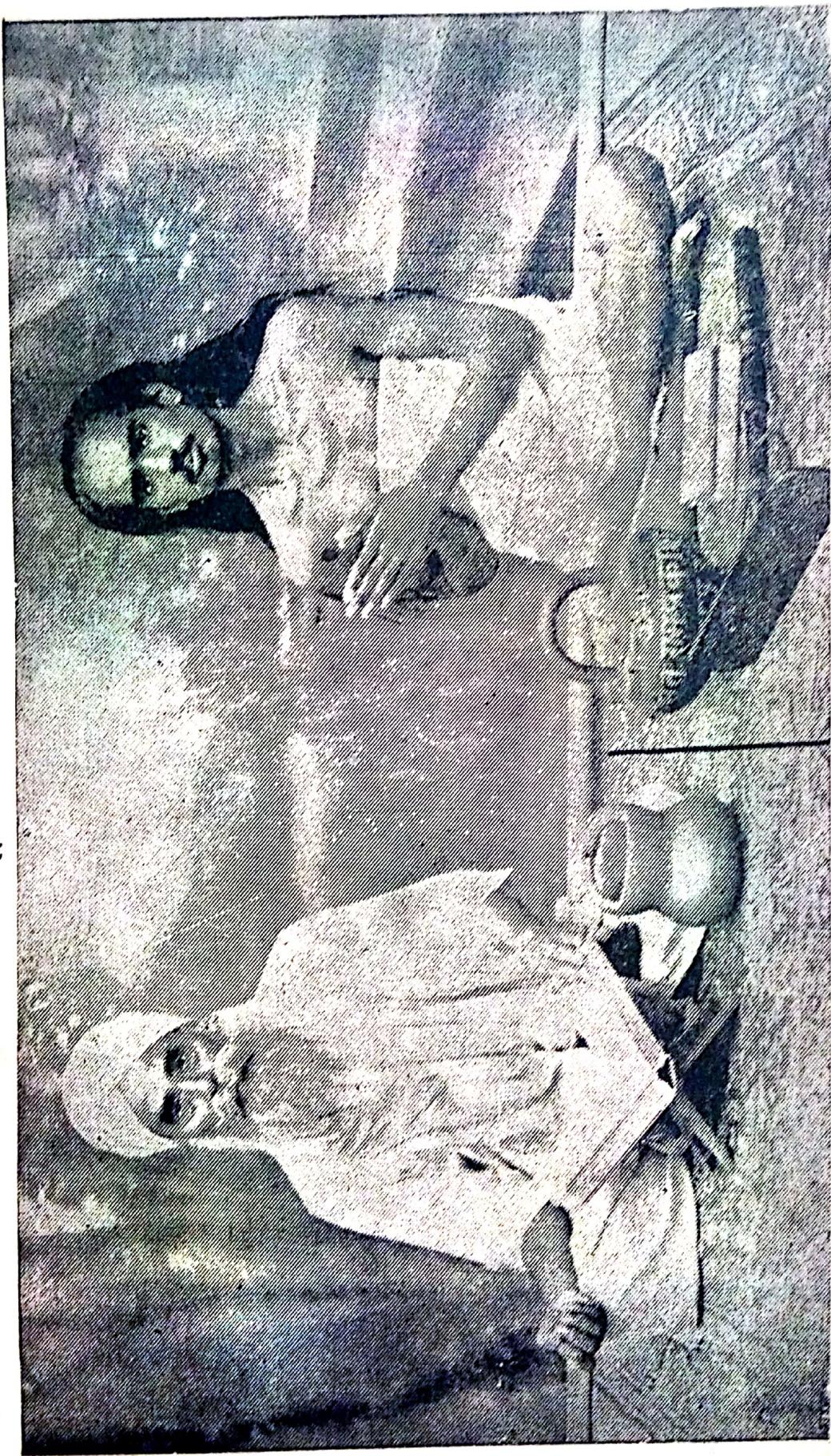
ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज] वि. सं. २०११ [वि० संत रामप्रकाशाचार्य 'अच्युत'

श्री अवधूत ज्ञान चिंतामणि एवं श्री उत्तमराम भजन प्रकाशादि
अनेक ग्रन्थों के रचयिता

अनन्त श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज 'वैरागी'

[योगारूढावस्था चित्र वि. सं. १९६८]

सत्साहित्य संत वाणी ग्रन्थों के रचयिता
अनन्त श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य
[सतगुरूदेव के सान्निध्य में वि. सं. २०२५]
महंत- उत्तम आश्रम कागामार्ग, जोधपुर ६

श्री संतदासोत रामस्नेही गुरू परम्परा दर्शन
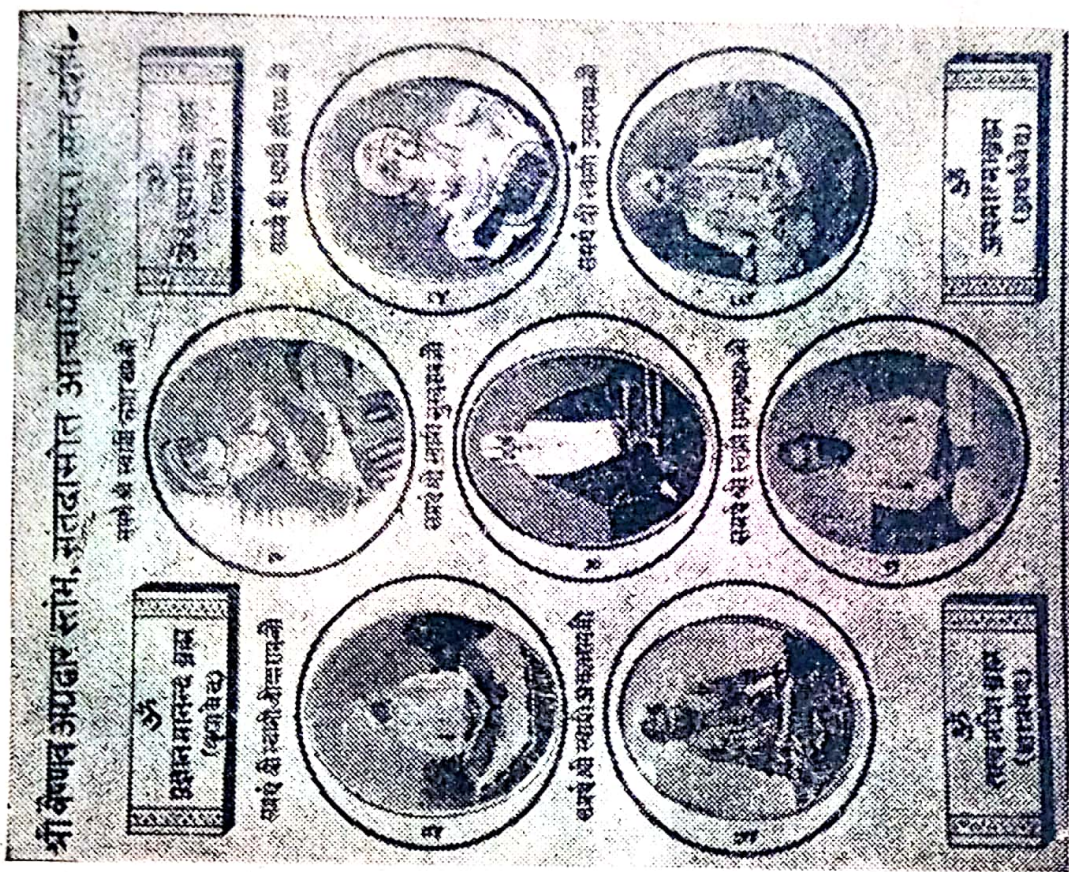
श्री गूदड़ गद्दी जोधपुर खण्ड पीठ के पीठाधिश्वर

श्री उत्तमराम भजन प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज 'वैरागी'

[परम वीतरागी योग विद्वावस्था वि सं. १९५७]

❀ श्री हरि गुरु सच्चिदानन्दाय नमः ❀

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज कृत.

अथश्री

अवधूत-ज्ञान-चिंतामणि

सतसंग-सन्त-महिमा को अङ्ग प्रारम्भ (१)

—❀ दोहा छन्द ❀—

"उत्तमराम" सत संग में, मंगल मौज अपार ।
बड़ भागी मन साच में, अमृत वचन उर धार ॥१॥

"उत्तमराम" सत संग में, संत सदा हुशियार ।
मान गुमानी मेट के, परसे आरो पार ॥२॥

"उत्तमराम" सत संग में, सुधरे कोटि हजार ।
संत ग्रन्थ प्रमाण दे, श्रुति देत पुकार ॥३॥

"उत्तमराम" सत संग में, पापी हो भव पार ।
संत बने केवट महा, ज्ञान जहाज उचार ॥४॥

"उत्तमराम" सत संग निज, आवर्ण काट विकार ।
उंच नीच संशय नहिं, परश्या एक अपार ॥५॥

इन्द्रविजय छन्द

अमृत रूप बणी सत संगत,
संत सुधारण तारण हारा ।
भाग भला बड़भागी सु आवत,
त्याग कुसंग रू कपट विकारा ।।
जीव अनन्त तरे भव सागर,
बैठ सदा सत संग मझारा ।
'उत्तमराम' सत संगत करके,
उँच रु नीच भये भव पारा ।।६।।

संत चरणन में शीश नमावत,
ता तन अघ समाप्त सारा ।
संत सुभाषण चित धरे नर,
ताचित शान्ति सदा सुख धारा ।।
संत दयाल की परम कृपा ते,
परम निजानन्द पावत प्यारा ।
'उत्तमराम' पुकारत प्रकट,
सन्त समागम का उपकारा ।।७।।

बोलत वचन अमोलख साध है,
संत सदा सुख गहर गंभीरा ।
सन्त की संग में प्राणी सु जावत,
पावत ज्ञान अमोलख हीरा ।।

पाप मिटावते पार पठावते,
धन सत संग कल्याण की सीरा।
'उत्तमराम' सत संग में आवते,
जावते हैं भव सागर तीरा ॥८॥
सन्त सदा सुख सागर का हँस,
जा घट ज्ञान विवेक विचारा।
खीर रू नीर जुदै कर देवत,
सत असत को जाणण वारा ॥
अक्रोध अमान समान सुज्ञान है,
जीव सुधारण तारण हारा।
'उत्तमराम' ता सन्त की संग में,
जीवन का नित होत सुधारा ॥९॥
नाव स्वरूप सत संग समागम,
सन्त पठावत सागर पारा।
ऊँच रू नीच सबे तर जावत,
भेद न भाव करे सन्त प्यारा ॥
तीन ही ताप समाप्त थावते,
पावत जीव स्वरूप सुखारा।
'उत्तमराम' सत संग में आनन्द,
भागत है भव दुःख विकारा ॥१०॥
शील सन्तोष दया धर्म धारत,
मेट कामादिक लोभ ठगारा।

सन्त सदा शुद्ध लक्षण धारत,
मारत मोह मिटावत सारा ॥
सन्त व्याख्यान समान सुनावत,
दे उपदेश सु नीति पुकारा ।
'उत्तमराम' महन्त दयाल है,
जीव सुधारण आप पधारा ॥११॥
सन्त पधारत कारज सारत,
बोलत बोल सुधा रस धारा ।
जा घर सन्त की सेव करे नित,
ता घर जम न जोर लिगारा ॥
संत विराजत सो घर पावन,
प्रत्यक्ष देव सदा सन्त सारा ।
'उत्तमराम' सदा सत संग में,
भागत भ्रम अज्ञान अंधारा ॥१२॥
ब्रह्म निजानन्द में सन्त भूलत,
और विषयानन्द लागत खारा ।
कामनि कंचन दोऊ से बेमुख,
मन में लालच नाहिं लिगारा ॥
ऋद्धि रू सिद्धि की आश न उरमें,
जान स्वप्न समान संसारा ।
'उत्तमराम' ता सन्त को वन्दन,
वारम् वार सदा धनकारा ॥१३॥

मात न तात न घात न बात न,
लात न जात न ना घर बारा।
गुरु मर्य्याद सु साधन पूर्ण,
ज्ञान विज्ञान विचार भण्डारा॥
यारी न झूठ रू निन्दा ही व्यशन,
त्याग दशो दुःख दोष विकारा।
'उत्तमराम' सो सन्त सु उत्तम,
वारम् वार सदा धनकारा॥१४॥

कोउक निन्दक निन्दा करे दुष्ट,
कोउक सेवत वारम्वारा।
कोउक सन्मुख सेव करे नित,
कोउक बेमुख मूँढ गँवारा॥
राव रू रंक की शङ्क न मानत,
हर्ष न शोक न जीत न हारा।
'उत्तमराम' चित आनन्द में सन्त,
आठ हूं याम रहे इकसारा॥१५॥

प्रथम ऐसो विचार भयो उर,
सन्त बिना नहिं सज्जन मेरा।
प्रीत से संगत साच करी जब,
कट गया सब करम का केरा॥

सूरज ज्ञान प्रकाश भयो तब,
भाग गया पुञ्ज भ्रम ग्रन्धेरा।
'उत्तमराम' प्रसाद सन्तन की,
जनम रू मरण मिट्या भव फेरा ॥१६॥
सहजे प्रीत लगी सत संगत,
पूर्व भाग भला बड़ भागी।
ग्राश संसार की त्रास तजी सब,
संगत बीच रति ग्रनुरागी॥
सन्त की संगत प्रेम की पंगत,
पल पल प्रीत सदा पक लागी।
'उत्तमराम' सच्चे तर जावत,
शीश नमावत साधन ग्रागी ॥१७॥
मारत तारत शब्द सुनावत,
ग्रावत जाव मिटावत ग्रङ्का।
खट पट झट पट भव दुःख,
भागत भ्रम दे ज्ञान का डङ्का॥
भल हल भानु प्रकाशत नाशत,
तम ग्रज्ञान मन मकर शङ्का।
सत संगत में सुख पावत ग्रावत,
'उत्ताम' सन्त का ज्ञान निशङ्का ॥१८॥
सत संग समान नांहि जग भींतर,
नीर मलीन मिल गंग समाना।

भृङ्ग ही जाय के कीट को ल्यावत,
शब्द सुनावत ओ३म् बखाना ॥
पंख पसार विचार के ऊडत,
भृँग ही रूप भये सब जाना ।
जाति स्वभाव सबे मिट जावत,
'उत्तम' संतन बीच मिलाना ॥१९॥
दे दृष्टांत सिद्धान्त सुनावत,
भिन्न भिन्न अर्थ यथार्थ करता ।
भ्यानक रोचक वचन फरमावत,
परम यथार्थ सन्त उचरता ॥
समझ वाणि सुन मन में मानत,
समझ यथार्थ उर में धरता ।
'उत्तमराम' सत संग महात्म,
ऊँच रु नीच भव सागर तरता ॥२०॥
संगत बीच में सन्त सुधा रस,
तीनों ही ताप मिटावत मूरा ।
संगत बीच में ज्ञान प्रमानन्द,
दुःख प्रमाद का होवत दूरा ॥
उत्तम संगत साध की अमृत,
उत्तम कोउक जानते शूरा ।
'उत्तमराम' की वारता मानत,
उत्तम धाम को पावत पूरा ॥२१॥

उत्तम योगी ही प्रातः में जागत,
ब्रह्म मुहुर्त में ॐ उचारा ।
जाग्रत मांहि है जाग्रत जोगी ही,
स्वप्न बीच में सोहं सारा ।।
सुषुप्ति में साक्षी ही जानत,
झीणी रमझ सु तार में तारा ।
'उत्तमराम' सु उत्तम सन्त को,
दुरस दीदार है आरम्पारा ।।२२।।
कर्म रू भ्रम में जीवड़ा झूलत,
मध्यम कनिष्ठ दो करत है शङ्का ।
उत्तम अधिकृत मध्यम ऊपर,
कनिष्ठ कर्म की जाल दी लङ्का ।।
पुण्य रू पाप के ऊपर लाग ही,
ब्रह्म विज्ञान का पूरण डङ्का ।
'उत्तमराम' के दुरस दीदार में,
हिंदु की गंगा न मोमन मक्का ।।२३।।

○ उल्लाला छन्द ○

'उत्तमराम' समझाविये, अपने मन को आप ही ।
तन मन निर्मल बोलजी, राम नाम सत जाप ही ।।२४।।
कर बिन कर क्या कामका, कर करणी शुभ काम जो ।
'उत्तमराम' लख आपमें, आत्तम अमर अकाम जो ।।२५।।

सत संग महिमा कुछ कही, अपने मुख उचार के।
'उत्तमराम' लख पार ना, गावत कोट हजार के ।।२६।।

सम्वत् सहस इक, शतक नव, सप्त पांच शुभवार ही।
गुरु पूनम इति अंग शुभ, स्वमुख कह्यो उचार ही ।।२७।।

इति श्री सत-संग-सन्त महिमा को अंग सम्पूर्ण (।।१।)

—०—

उपदेश आत्म निष्ठा को अङ्ग आरम्भ (२)

दोहा छन्द

उत्तम सत गुरू आत्तमा, ओ३म् अखण्ड उचार।
सोहं छः सौ सुमरिये, हरदम इक्कीश हजार ।।१।।

ॐ झूलना छन्द ॐ

उत्तम कर मन रु तन को उत्तम कर,
वाणी को उतम कर बोलिये जी।
उतम कर चाल रू माल को उतम कर,
सत असत को तोलिये जी।
उतम कर रहणी रू करणी को उतम कर,
आतम मौज अमोलिये जी।

उतमकर सतगुरू भावना उतम कर,
जीव का बंधन खोलिये जी ।।२।।

जग बाजी यह झूंठ बणी है,
नहिं खोटे खेल में खूलणा जी ।
कनक कामनि जग में, जोर है,
डोली को देख न डूलणा जी ।।

शील विचार को नित सुधारणा,
गुरू को भेद न भूलणा जी ।
'उत्तमराम' कहै सुणो जिज्ञासियों,
हरदम नाम में झूलणा जी ।।३।।

हरि के ध्यान में चित को रोप दे,
जग विषय में न णा जी ।
निवृति नाम नित चित में राखिये,
मोह के जाल को तोड़णा जी ।।

और तरफ से मन को मोड़ के,
हरदम हरि से जोड़णा जी ।
'उत्तमराम' कहै सुणो जिज्ञासियों,
भ्रम की भींत को फोड़णा जी ।।४।।

विषय की वासना मूल से मेट दे,
ज्ञान वैराग्य को धारणा जी ।

बाहिर वृति को उलट अन्दर,
सहजे ही सुमिरण सारणा जी ।।
हरदम तार तो हरदम चालत,
सोहं ॐ उच्चारणा जी ।
'उत्तमराम' कहै सुणो जिज्ञासियों,
हरदम हरि चितारणा जी ।।५।।

प्रथम ओट सत गुरू की आय के,
तन मन भेंट चढावणा जी ।
गुरू का वाक्य सत श्रवण सुण के,
सोहं मन मिलावणा जी ।।
गुरू के ज्ञान से आतम ओलखो,
आप में आप समावणा जी ।
उत्तमराम ! कहै सुणो जिज्ञासियों,
फेर पीछा नहिं आवणा जी ।।६।।

प्रभात को प्रेम से उठके जागिये,
शब्द रू सुरत मिलाविये जी ।
इडा रू पिङ्गला सुषमण तीनों ही,
शशि रू सूर रलाविये जी ।।
हरदम साधो जी सोहं सुमिरण,
त्रिवेणी में ज्योति जगाविये जी ।

'उत्तमराम' सु साधन सारके,
दशवें में दर्शन पाविये जी ॥७॥

मन की कामना मेट दे सारी ही,
हरि से हेत लगावणाजी ।
मोह माया मद मन में मातो ही,
याहि को बेग भगावणा जी ॥
काम क्रोधादिक चित में चोर है,
अपना आप न ठगावणा जी ।
'उत्तमराम' सो हरदम हेत से,
राम ही राम नित गावणा जी ॥८॥

सबर कर सबर कर मन को सबर कर,
मन के दोष को मोड़ियेजी ।
सबर कर सबर कर तन को सबर कर,
तन के दोष को तोड़िये जी ॥
सबरकर सबरकर बाणी को सबर कर,
बाणी के दोष को छोड़िये जी ।
'उत्तमराम' सबर शमसेर से,
दशो हि दोष उखेड़िये जी ॥९॥

भांग दे भांग दे भ्रम को भांग दे,
ज्ञान गुरज के कोर से जी ।

तोड़ दे तोड़ दे मोह को तोड़ दे,
विरह वैराग के तोर से जी ॥
फेर दे फेर दे वृति को फेर दे,
अपने आतम जोर से जी ।
'उत्तमराम' कह तर जा सागर,
गुरू की गम कर डोर से जी ॥१०॥

मोह की जड़ को मूल से काट दे,
निर्मोह निर्मल रेहणा है जी ।
फकर होय के फिकर को फकिये,
सुख दुःख ऊपर सेहणां है जी ॥
ओर एकान्त सत गुरू के आसरे,
सोहं सोहं केहणा है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर को,
सत ब्रह्मानन्द लेहणा है जी ॥११॥

शुद्ध विचार नित मन में राखिये,
कुब्द रु कूड़ को काटणा है जी ।
शील संतोष रू नाम को सुमिरण,
पांच विषय को दाटणा है जी ॥
आत्मानन्द को अमृत प्यालो ले,
नहिं विषय रस चाटणा है जी ।

'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
खोलदे भ्रम कपाटणा है जी ॥१२॥

मोह जड़ काट कुब्द की कड़ियों रू,
त्याग दीवी जग लाजिया है जी।
हाजिर जाय हूवा गुरू आगिल,
धन ऊगो दिन आजिया है जी॥

आतम ज्ञान को हंस प्रकाश्यो रू,
भ्रम अंधकार सो भाजिया है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
जन शिरोमणि ताजिया है जी ॥१३॥

घन फकर सो डोंले डिगे नहिं,
आतम राम न भूलता है जी।
जर जोरू दोऊ जूवा जग में,
खबरदार नहि खूलता है जी॥

आठ हूँ याम वो आतमानन्द में,
नहि सकूचे न फूलता है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
ब्रह्म सागर में झूलता है जी ॥१४॥

नाटक चेटक से सन्त न्यारा है रू,
मेट दिया मन मकर है जी।

हानि रु लाभ के ऊपर आसन,
जपता राम को मन्तर है जी ।।
त्रिगुणातीत रू तुरिया से ताड़ी जु,
फिकर मेटे सोई फक्कर है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फक्कर सो,
जन है शिरोमणि छतर है जी ।।१५।।

ऊगतां ऊगतां ऊगो है सूरज,
अज्ञान अँधार विनाश है जी ।
जाणतां जाणतां जाणी है आतम,
परम स्वरूप प्रकाश है जी ।।
होवत्तां होवतां हूई है एकता,
द्वैत विकार को नाश है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
पाया पद अविनाश है जी ।।१६।।

विचित्र माया को रूप प्रचण्ड है,
यामे न मन अटकणा है जी ।
माया लता बहुफैली है जग में
विषय फल नहिं गटकणा है जी ।।
गुरू गम युक्ति रू निज पुरुषार्थ,
मन को अवश्य हटकणा है जी ।

'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
मन को मार पटकरणा है जी ।।१७।।

एक अखण्ड है ब्रह्म का निश्चय,
नहिं डिगे नहिं डोलता है जी ।
सत असत को भले पिछाणते,
ब्रह्म की वारता बोलता है जी ।।
जीव जिज्ञासी जो शरणे आवते,
भेद ग्रन्थी को खोलता है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर को,
अमृत वाणी अमोलता है जी ।।१८।।

ब्रह्माकार है वृति सु निर्मल,
नहिं को चित में चावना है जी ।
परमानन्द में पूरण है नित,
लोक परलोक न वासना है जी ।।
निन्दा ऽ स्तुती सें नेह न राखत,
मान अपमान न भावना है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
अन्दर बाहिर पावना हैं जी ।।१९।।

उलटे अपने आप को जाणतां,
मिट गयो भव चक्कर है जी ।

अकल एक सकल में सामिल,
निज अखण्डी सो अजर है जी ।।
सोई स्वरूप फकर सो आदू जु,
शुद्ध सनातन सधर है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
आपोई आप अज अमर है जी ।।२०।।

धन फकर सोई जग में धन है,
कस कर बांधी सु कमर है जी ।
दुतिया दोष को त्याग परेरी,
सब में आतम नजर है जी ।।
सार असार को भले विचार के,
खूब करी फिर खबर है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
नहिं को कायर जबर है जी ।।२१।।

एक दम अंग में ऐसी ही उपजी,
त्याग्यो तन असारिया है जी ।
निश्चल आतम निज सतो सत,
त्रिगुण रङ्ग विसारिया है जी ।।
सत ब्रह्मानन्द आनन्द जाणतां,
और विषय रस खारिया है जी ।

'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
अपणा आप विचारिया है जी ॥२२॥

मन का मार रु मार को मार के,
इन्द्रिय जीते सो अतीत है जी।
घट अहंकार विकार को डार के,
मन को जीते रणजीत है जी ॥
आतम ज्ञान की जाण निरवाण जो,
पूर्ण पक परतीत है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
ऊगो ज्ञान अदीत है जी ॥२३॥

कुल के मान अपमान को मेट के,
त्याग दीयो संग सातिया है जी
वर्ण आश्रम की फाँस को काट के,
नँहि को जात जमातिया है जी
जाणणे योग तो जाणी निरवाणी सु
आत्म ब्रह्म अजातिया है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सों,
हंस उदय गई रातिया है जी ॥२४॥

मोह को मेट रु भेंट परमानन्द,
त्रिगुण तागा दू तोड़िया है जी।

पाप पुण्यातीत पूरण पायोजी,
नहिं को लालच लोड़िया है जी ।
लोक परलोक की वासना लोपे सो,
ऐसा को जग में थोड़िया है जी
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो
भ्रम का ठीकरा फोड़िया है जी ॥२५॥

और को आसरो छोड़ दियो सब,
जब आया गुरु ओटिया है जी ।
गुरू मुख ज्ञान विचार सु श्रवण,
मेट दीया मन मोटिया है जी ॥
अन्तर बाहिर निर्मल निश्चल,
लेश लिगार न खोटिया है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
मन को मार के घोटिया है जी ॥२६॥

डिग मिग डोलणो मन को मेट दे,
होय फकर तज फोरणा है जी ।
आठोयाम चित चेतन राखियो,
गाफिल होय न सोवणा है जी ॥
ब्रह्म सागर को नीर जो निर्मल,
दिल सफा कर धोवणा है जी ।

'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
अपणे आप को जोवणा है जी ।।२७।।

जर रू जोरू से चित्त न जोड़ते,
तोड़ दीवी मोह सङ्कल है जी ।
मौज पड़े तहां मौजी ही विचरत,
नगर शिला गृह जङ्गल है जी ।।
दुतिया दोष मिट्यो मन मांहिलो,
भागी भ्रम की अङ्गल है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
जहं तहं आनन्द मङ्कल है जी ।।२८।।

अर्ध रु उर्ध के बीच में खेलते,
मन पवन का घोड़िया है जी ।
ज्ञान रु ध्यान को चौकड़ो चाढ़िके,
शील सजाई सञ्ज जोड़िया है जी ।।
शशि रु सूर दो पागड़ा प्रेम का,
त्रिवेणी ऊपर दौड़िया है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सों,
मन को मार मरोड़िया है जी ।।२९।।

भेद वाणी सब त्याग कीयो वर,
गुरू वाक्य सत मानिया है जी ।

और दिशा कभी वृति न डोलत,
आया असल इमानिया है जी ।।
जड़ चेतन को है ज्यों जाण के,
जानने योग सो जानिया है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञानिया है जी ।।३०।।

सत अधिष्ठान अपार अचल सो,
निश्चय ठान विचारिया है जी ।
अनीह अखण्ड रु सत चित पूर्ण,
घन आनन्द निर्विकारिया है जी ।।
पांच रु तीन को जाल न जोर है,
निज परमानन्द प्यारिया है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
बुद्धि कलेश पंच टारिया है जी ।।३१।।

कोई कहै सन्त है धन शूरमा,
पांच विषय को दाटिया हैं जी ।
कोई कहै यह काहे को सन्त हैं,
मैं तो जानियो ठग साटिया है जी ।।
टुकड़े खातिर डोलता दीसत,
जैसे बाजीगर नाटिया है जी ।

'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
निंद्या ऽस्तूति को काटिया है जी ॥३२

कोऊ कहै धन रहणी रू करणी को,
यह तो आदि को योगिया है जी ।
कोऊ कहै कछु रहणी न करणी को,
भव में डोलत भोगिया है जी ॥

हम तो जाण्यो को निर्मल संत है,
कोई कहै हर्ष शोगिया है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
आतमानन्द आरोगिया है जी ॥३३।

कोऊ कहै केवल वारता करते,
नहिं खोज्यो इन पिण्ड है जी ।
कोई कहै यह ज्ञान को सागर,
पिण्ड खोज्यो ब्रह्मण्ड है जी ॥

कोऊ कहै यह काहे को ज्ञानी है,
यह तो दीखे कोऊ जड है जी ॥
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
निश्चित निज अखण्ड है जी ॥३४।

कोई कहे सन्त मुक्ति खजानो है,
ज्ञान रु योग में स्वामिया है जी ।

दम्भी ये सांग बणायो दम्भ को,
यह तो कोई निकामिया है जी ।।
कोई कहै सत सुमिरण साधके,
पाई सु बेगम धामिया है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
आतमराम आरामिया है जी ।।३५।।

इश्क चाड़ी पर आशिक चढ़ के,
फेर पीछा नहीं मुड़ता है जी ।
माया असार विसार विचार के,
ब्रह्म से वृति सु जुड़ता है जी ।।
ब्रह्मानन्द को आनन्द जाणते,
ज्यों हि गूङ्ग रस गुड़ता है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
अखण्डानन्द अमुड़ता है जी ।।३६।।

त्रिगुण तोड़ के आगे चले सन्त,
फेर पीछा नहि आवता है जी ।
निश दिन पग वो आगे ही देवते,
ब्रह्म के देश में जावता है जी ।।
ब्रह्म सर्व में नभ ज्यों पूर्ण,
निगम नितो नित गावता है जी ।

'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
आप में आप समावता है जी ॥३७॥

धन्य फकर की अगम धाम है,
तहां हरिजन रेवता है जी।
मन रू बाणी को बाण न लागत,
सुख दुःख लेश न सेवता है जी ॥
शीश दीये बिन सार न लाधत,
जाणण हार यों केवता है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर की,
निश्चय धाम अलेवता है जी ॥३८॥

भ्रम को भान के ठीकरा धार के,
मौज अनुसार वो मौजियां है जी।
खान रू पान की चिन्ता न चित में,
प्रारब्ध पर रोजियां है जी ॥
शैल शिला पर रीत विश्राम से,
अपना आतम खोजियां है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर के,
कर्म कटे गत बोजियां है जी ॥३९॥

शील रु शुद्ध विचार को सायक,
काम बलि कों मारिया है जी।

विवेक संयुत्त क्षमा को धार के,
क्रोध कठोर विडारिया है जी ।।
त्याग वैराग दो बाण को धार के,
लोभ रू मोह संहारिया है जी ।
'उत्तमराम' सत ज्ञान धनुष से,
कट्या मन मोह अहंकारिया है जी ।।४०।।

ब्रह्म के सागर में सन्त झूलते,
आनन्द तोय अपारिया है जी ।
मल विक्षेप को नाश कीयो सब,
आवर्ण मूल उखारिया है जी ।।
आठोयाम निज आनन्द पूर्ण,
त्रिगुण ताप निवारिया है जी ।
'उतमराम' अवधूत फकर के,
भेद न खेद लिगारिया है जी ।।४१।।

उर में लागो है ज्ञान को बाण जो,
आठो ही याम खटकता है जी ।
प्रेम पीड़ा से चित चुले नहिं,
और न तर्फ अटकता है जी ।।
निश दिन निज वो ब्रह्म में झूलते,
मन को मार पटकता है जी ।

'उत्तमराम' निज शीश दियो फिर,
भव में नहिं भटकता है जी ॥४२॥

जिसका इश्क राम से लागों है,
सोई सन्त सभागिया है जी।
सब से तरक रू फरक है फक्कर,
भोग ब्रह्मादि को त्यागिया है जी ॥

विषय रु भजनानन्द के ऊपर,
ब्रह्मानन्द अनुरागिया है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर का,
चित चेतन से लागिया है जी ॥४३॥

धन फकर की दृष्टी हैं निरमल,
जहं तहं ब्रह्म वो देखता है जी।
अर्ध रु उर्ध में ब्रह्म को देखता,
ब्रह्म बिना नहिं लेखता है जी ॥
अस्ति रु भाति सु प्रिय सनातन,
नाम न रूप न रेखता है जी।
'उत्तमराम' अवधूत फकर सो,
निज ब्रह्मानन्द पेखता है जी ॥४४॥

अर्ध रू उर्ध के अन्त में आसन,
सहजे ही स्मरण सारता है जी।

दीन दयालु सु दृष्टी फकर की,
आप तरे पुनि तारता है जी ।।
जो कोई प्रेम से संत को सेवते,
तिन का कारज सारता है जी ।
'उत्तमराम' पुकारत प्रगट जु,
धन्य फकर की वारता है जी ।।४५।।

ब्रह्म ज्ञानी रु प्रेमी है पूर्ण,
प्रकट बोल पुकारता है जी ।
अमृत रूप सत बाणी सु उनकी,
निश दिन ब्रह्म की वारता है जी ।।
तीनों ही ताप क्लेश मिटावते,
पांचों ही भेद निवारता है जी ।
'उत्तमराम' गुरू शरण में बोलते,
धन्य फकर की कारता है जी ।।४६।।

आठ हुँ याम धुन वृति है आप में,
रुचि से राम चितारता है जी ।
बोलते चालते बैठते ऊठते,
दिल से नांहि विसारता है जी ।।
ज्ञान रु ध्यान दो : धार खड्ग से,
मन रु मार को मारता है जी ।

'उत्तमराम' यों सन्त बखानते,
धन्य फकर की वारता है जी ॥४७॥

अन्तर मेट कोई शरणे आवते,
तुरन्त उनही को तारता है जी।
दुतिया दोष को लेश न राखते,
भव से पार उकारता है जी॥

कृपा फकर की अति अतोल है,
अधमी जीव उधारता है जी।
'उत्तमराम' यों ग्रन्थ बखानते,
धन्य फकर की वारता है जी ॥४८॥

अचरज बात फकर की आद्द सो,
आनन्द मांहि गुजारता है जी।
दिक्कालादि रु लोकादि ऊपर,
ध्येय न ध्यान न धारता है जी॥

ब्रह्म स्वरूपी सो ब्रह्म में लीन है,
चेतन ब्रह्म अपारता है जी।
'उत्तमराम' सतगुरू के शरणे,
वेद वचन पुकारता है जी ॥४६॥

सब में व्यापक ब्रह्म को जान्यो है,
नहिं को अन्तर अन्तरो है जी।

असम्भावना रु विपरीत न लेश जु,
नहिं को खोट को खतरो है जी ।।
है ज्यों जाण वो जाणी निर्वाणी है,
नहिं को काया में कतरो है जी ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर को,
निश्चय निजानन्द सतरो है जी ।।५०।।

एक अखण्डी सु जाण लीयो निज,
सब में व्यापक ब्रह्म जी हैं रे ।
दशो दिशा सत पूर्ण एक सो,
नहिं लागे कछु कर्म जी है रे ।।
पांच कलेश को लेश न लागत,
भाज गयो सब भ्रम जी है रे ।
'उत्तमराम' अवधूत फकर के,
निर्भय परमानन्द परम जी है रे ।।५१।।

अर्ध रु उर्ध के बीच में झूलनो,
ओहम् सोहम् झोलता है जी ।
इक्कीस हजार रु छः सौ श्वास में,
ओ३म् रु सोहम् बोलता है जी ।।
इडा रु पिंगला सुषुमण सिद्ध में,
दशवें द्वार को खोलता है जी ।

दशवें द्वार में हजार है सोहम्,
'उत्तमराम' अतोलता है जी ।।५२।।

दोहा छन्द

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य में, सच्चिदानन्द अनुभूत ।
'उत्तमराम' सन्त फकर को, अजब मतो अवधूत ।।५३।।

अस्ति भाति प्रिय एक में, फकर रहे भरपूर ।
'उत्तमराम' निष्ठा यही, हस्ति इल्म सरूर ।।५४।।

सम्वत् सहस इक शतक नव, छह व्योम लिख जोय ।
भाद्रवा तेरस सुद्धि, शुभवार इति होय ।।५५।।

इति श्री उपदेश आतम-निष्ठा को अङ्ग सम्पूर्ण

-o-

श्री उपदेश/चेतावनी-पञ्चक प्रारम्भ (३)

इन्दव छन्द

माल खजाना रु मन्दिर मोटा हो,
चाकर जोध जोरावर चेरी ।
बाग बगीचा फुली फुलवारी सो,
सेज पे सुन्दर नार घनेरी ।।

अन्त समय कुछ काम न आवत,
यह सब ठाठ स्वप्न का हेरी।
'उत्तमराम' का सुमिरण आदू है,
राम जपो नित आनन्द केरी ॥१॥

चाल कुचाल तजो सब प्राणी जु,
साच सुचाल हृदय विच धारो।
राम रू धर्म की वारता राख हूँ,
पाप उपाधि को दूर निवारो ॥
ऊठते बैठते बोलते डोलते,
राम सदा सुख धाम उचारो।
'उत्तमराम' आराम जी आप में,
आत्तम चेतन आप विचारो ॥२॥

कोऊक मांगत बात बना कर,
कोऊक मांगत गाय बजाई।
कोऊक मांगत कथा सुना कर,
कोऊक मांगत ठाट्ट लगाई ॥
कोऊक मांगत भस्म रमा कर,
कोऊक मांगत भेष बनाई।
'उत्तमराम' विचार के बोलत,
साच कमाई करो सत भाई ॥३॥

कोऊक मांगत हारमोनि पर,
कोऊक मांगत ढोलक कूटी ।
कोऊक मांगत खप्पर लेकर,
कोऊक मांगे टोपाली जु फूटी ॥
कोऊक मांगत लीर में चीर में,
कोऊक मांगे सरधाई की घूटी ।
'उत्तमराम' विचार के बोलत,
गुरू से मांगी संजीवन बूटी ॥४॥
खोट की बात ले घट में घोटत,
मूढ घणों मांहि बात हलावे ।
न्याय कारी कोई आन मिले जब,
मूढ प्रसाद को बोल न आवे ॥
लप्पर चप्पर में मन राखत,
साच बिना शठ आयु गमावे ।
खण्डन मण्डन मेष ज्यों खोपरी,
पागल श्वान त्यों वाद बढावे ॥५॥

दोहा छन्द

सत सोहं सत सुमरिये, ओ३म् अलख उचार ।
अन्दर बाहर आत्तमा, देख राम दीदार ॥६॥
उतम समझो आप में, करोजी उतम काम ।
उतम रहणी आतमा, रात दिना जप राम ॥७॥

सन्त सेवा सत संग कर, हरि नाम उर धार ।
साधन युत निश्चय लखो, 'उत्तमराम' निराधार ।।८।।

◌ इति श्री उपदेश/चेतावनी-पंचक सम्पूर्ण ◌

—०—

श्री उपदेश कर्म विपाक अष्टक प्रारम्भ (४)

❀ इन्दव छन्द ❀

कोऊ कर्मों से सेज पे सोवत,
कोऊ कर्मों से जऊवां का चारा ।
कोऊ कर्मों से हाथी के होदे है,
कोऊ कर्मन से ढोवत भारा ।।
कोऊ कर्मों से गङ्ग में न्हावत,
कोऊक पीवत नीर ही खारा ।
'उत्तमराम' ये कर्मों की बाजी सो,
ऐसे ही बोलत सन्त सु सारा ।।१।।

कोऊ कर्मों ते पूत खेलावत,
कोऊ कर्मों से बांझ हेलारा ।
कोऊ कर्मों से रोग में रोवत,
कोऊ कर्मों से आनन्द कारा ।।
सुख रू दुःख सो कर्म का काम है,
शुभ अशुभ की चालत धारा ।

'उत्तमराम' ये कर्मो की बाजी सो,
ऐसे ही बोलत संत सु सारा ।।२।।

कोऊ कर्मों से कब्ज कठोर में,
कोऊ कर्मों से अतीयसारा ।
कोऊ कर्मों से अङ्ग निरोग में,
कोऊ कर्मों से सुख है भारा ।।

कोऊ कर्मों से नैन में नूर है,
कोऊ कर्मों से आंख अन्धारा ।
'उत्तमराम' ये कर्मो की बाजी सो,
ऐसे ही बोलत सन्त सु सारा ।।३।।

कोऊ कर्मों से होय विध्द्वान जु,
कोऊ कर्म ते मूढ विचारा ।
कोऊ कर्मों से हो बलवान जु,
कोऊ कर्म बल हीन अपारा ।।
कोऊ कर्मों से पंगु हो डोलत,
कोऊ कर्म से वाहन धारा ।
'उत्तमराम' ये कर्मों की बाजी सो,
ऐसे ही बोलत संत है सारा ।।४।।

कोऊ कर्मों से पण्डित होय जु,
कोऊक गुङ्ग जु बोलन धारा ।

कोऊक कर्मों से छाछ न पावत,
कोऊक दूध का हौद भण्डारा ॥
कोऊ कर्मा से राब न पावत,
कोऊ पञ्चामृत खाय सुखारा ।
'उत्तमराम' ये कर्मों की बाजी सो,
ऐसे ही बोलत संत है सारा ॥५॥

कोऊ कर्मो से टूटी ही टापरी,
कोऊक के धन महल अटारा ।
कोऊक के तन लीर न चीर ही,
कोऊक के पट पांव पैजारा ॥
कोऊ कर्मों से मांगत खावत,
कोऊक दान करे हद भारा ।
'उत्तमराम' ये कर्मो की बाजी सो,
एसे ही बोलत संत है सारा ॥६॥

कोऊ कर्मों ते बुद्धि में चातुर,
ग्रन्थ रचावत बात सुधारा ।
कोऊ कर्मों से बुद्धि मलीन हो,
बात बिगारत नाहि विचारा ॥
कोऊक सुन्दर रूप स्वरूप हो,
कोऊक को अङ्ग काग अचारा ।

'उत्तमराम' ये कर्मों की बाजी सो,
एसे ही बोलत संत सु सारा ॥७॥
तीन हूं लोक में कर्म प्रधान है,
सुख रू दुःख में जीव है सारा।
अर्ध रू ऊर्ध में कर्म की कार है,
वर्ण रू आश्रम त्रिगुण धारा॥
राव रू रंक में उंच रू नीच में,
हानि रू लाभ को भोगण वारा।
'उत्तमराम' अतीत है आत्तम,
हरदम साक्षी सु सिरजण हारा ॥८॥

दोहा छन्द

कर्मों मांहि सर्व जन, सात द्वीप संसार।
जीव चराचर कर्म वश, आत्तम परे अपार ॥९॥
ऊँच नीच सब विश्व में, तन धारी नर नार।
कर्म विपाक प्रबल अति, सब ही भोगणहार ॥१०॥
नर सुर यक्ष तन धारिलो, पीर सन्त अवतार।
पन्थ रू मत बहू सर्वजो, सब पे कर्म सवार ॥११॥
कर्म जाल माया मँहि, निःकर्म चेतन आप।
'उत्तमराम' सत संग लख, निज में पुण्य न पाप ॥१२॥
संचित प्रारब्ध कर्म में, कछू मिश्रित क्रियमाण।
कर्म बन्धन प्रगट सबे, निज चेतन निरवाण ॥१३॥

इति श्री उपदेश कर्म विपाक अष्टक सम्पूर्णम् (४)

श्री अमर पट्टा (मुक्ति छाप) प्रारम्भ (५)

चौपाई छन्द

सत गुरू हरि हर सन्त रू नूरा,
एक स्वरूप सदा भरपूरा।
नमो नमो अष्टाङ्ग प्रणामा,
वार अनंत अनंत नमामा ।।१।।

सत गुरू ब्रह्म स्वरूप कहाई,
नमस्कार गुरूदेव सदाई।
सत गुरू सामर्थ सिरजण हारा,
जाकी महिमा अगम अपारा ।।२।।

सत गुरू स्वामी अलख गोसांई,
ताकि महिमा कहि ना जाई।
सतगुरू करी कृपा सुखदाई,
ताते अमर पटा कहूं गाई ।।३।।

प्रथम जाय नमा गुरू चरणे,
साधन संग गुरू के शरणे।
विश्व आशक्ति सुरती तोड़ी,
गुरू वचनों में सहजे जोड़ी ।।४।।

विनती बारम्वार उचारी,
सुन हो सत गुरू दीन पुकारी।

यह जग मिथ्या सार ना काई,
भूल भ्रम में शठ भटकाई ॥५॥
झूँठ जान सब लीया शरणा,
भव दुःख काटो जनम रू मरणा ।
यासे कष्ट बहू युग पाया,
सावधान हो शरणे आया ॥६॥
आप बिना जग में नहिं कोई,
जासे ज्ञान ब्रह्म का होई ।
दया करो दया धर स्वामी,
आप सर्व के अन्तरयामी ॥७॥
कृपा करी दी युक्ति बताई,
सोजी पाय कहूं अब गाई ।
तन मन शीश दीया गुरू आगे,
जमका जोर कछू नहिं लागे ॥८॥
सत गुरू हाथ दीया वर माथे,
सोहं शब्द गुरू दीया साथे ।
'ॐ सोहं' निज आतम ज्ञाना,
मुक्त पट्टा यह गुरू बखाना ॥९॥
'अमर पट्टा' सत गुरू लिख दीना,
शिर साटे सत कर मैं लीना ।
ताके साथ युक्ति इक दीनी,
जाने सन्त रेश महा झीनी ॥१०॥

सत गुरू शब्द बखाना आदू,
रीत कही पुनि जाने सादू ।
'अचलराम' गुरू सत पाया,
अमर पट्टा निज ज्ञान बताया ॥११॥

ब्रह्म वेता सत गुरू फरमाया,
सोहं सुमिरण करो सवाया ।
सत शब्द सत गुरू उचारा,
सुन लो सत संग सार पुकारा ॥१२॥

श्री सत गुरू वाक्य ! शिष्य प्रति विश्वास !!
अमर पट्टा साधन व महिमा निरूपण !!!

प्रकट वचन साचो लख गाई,
भजन कीयों से काल न खाई ।
नाम जपे सोई मुक्ति पावे,
अमर पट्टा बिन मुक्ति न थावे ॥१३॥

यामे फेर सार नहिं कोई,
नाम बिना निज मोक्ष न होई ।
'अमर पट्टा' अचल निज ज्ञाना,
संत स्मृति दे परवाना ॥१४॥

ज्ञानी, आउम् रू सोहम् ध्यानी,
भक्त जपे सत राम निशानी ।

ओ३म् सोहम् राम जप तीनों,
गुरू गम मुक्ति पद को चीनो ॥१५॥
नाना संशय काम भ्रम मूरा,
डार टार कर चित ते दूरा।
रञ्चक भेद न विस्मत होऊ,
राम ओ३म् सों एक, न दोऊ ॥१६॥
'अमर पट्टा' निर्भय निर्वाणी,
मिटे चौरासी चारो खाणी।
'अमर पट्टा' से राखे हेता,
ताको यम दगा नहिं देता ॥१७॥
हंसा पकड़े सत का डोरा,
तब यम करे नहिं कुछ तोरा।
सोहं सुरती तार मिलावो,
त्रिवेणी तख्त में ध्यान लगावो ॥१८॥
इडा पिङ्गला सुषमरण सोजो,
ओम सोहं संग स्वासा खोजो।
स्वासा सुमिरण ध्यान लगावो,
सहजे दर्शन्न ब्रह्म मिल जावो ॥१९॥
अब हंसा आवे ना जावे,
अगम देश में उलट समावे।
यथा साधना प्रकट सुनाई,
भव का भव व्यापे ना कोई ॥२०॥

अथ हृदयोल्लास वाणी सुधा निरूपण

सत गुरू 'अचलराम' अनकरता,
जम जोरावर जासें डरता।
सत गुरू वचन निर्भय का भाखा,
'उत्तमराम' कहूं सत साखा ॥२१॥

सत गुरू स्वामी युक्ति बताई,
सत प्रतीत पलक में पाई।
सत गुरू दीवी युक्ति ऐसी,
करी साधना गाऊं तेसी ॥२२॥

सत गुरू देव दीया फरमाई,
करुं साधना मन चितलाई।
यह द्रढ धार करी द्रढ फेरी,
सोहं शब्द स्वास में टेरी ॥२३॥

'सत गुरू' सोहं नाम सुणायो,
सो निज सहजे हरदम ध्यायो।
युक्ति युत सोहं निज ध्याया,
जासे हंसा पार पठाया ॥२४॥

इड़ा पिङ्गला सुषमण सीधी,
सुरत शब्द तीनो में बींधी।
पांचो मिल एकता पाई,
सत नाम की फिरी दुहाई ॥२५॥

नाभि कँवल में लागी डोरी,
स्वासा सुरत चढी तब मोरी।
गुरू प्रसाद खुली उर ताड़ी,
सुरती पकड़ त्रिकूटी चाड़ी ॥२६॥
पूरक कुम्भक रेचक भीना,
प्राणायाम युक्ति सब चीना।
त्रिवेणी कँवल में ज्योति जागी,
दर्शण होते दुर्मति भागी ॥२७॥
सत देश का दर्शण पाया,
उज्वल हंसा निर्मल थाया।
सत नाम की डोरी झेली,
हंसा खेलत निर्भय हेली ॥२८॥
'अमर पट्टा' कस कमर बाधा,
अगम देश का मार्ग लाधा।
यासे हंस चल्यो जब आगो,
अगम देश के रस्ते लागो ॥२९॥
अगम देश का रस्ता आडू,
निगम देश में पहूंचे साडू।
गगन मण्डल का मार्ग बंका,
वहां भी जाय लगाया डंका ॥३०॥
गगन मण्डल में निर्भय पूगा,
सुन में भानू असंख्य ऊगा।

सत रूप का सोहं उज्वाला,
ऊँच नीच कूँची ना ताला ॥३१॥
पानी बिना ताल परि पूर्ण,
हँस अनन्त मिले परि तूर्ण।
ता पर बाग बगीचा देखा,
वर्षाधार नितो नित पेखा ॥३२॥
मोर चकोर गर्जे घनघोरा,
सारंग राग पपैया सोरा।
बाजा अनहद घुरि अलगूँजा,
राम रहीम एक कर सूजा ॥३३॥
राग छतीसों षट् जो रागा,
बिन प्रपंच बजे अनुरागा।
ज्ञान ध्यान बाजन के ऊपर,
बाजे अनहद निर्भय नूपर ॥३४॥
हरिया बाग छबि लख पाई,
जीव ईश का भेद विलाई।
बाग रू फल फले घन फूला,
तामे व्यापक एक रसूला ॥३५॥
अमृत फूल फूले नित रंगा,
संग असंग सर्व रस गंगा।
सो साहब सत निरमल नूरा,
ऊँच नीच में है भरपूरा ॥३६॥

दृष्ट मुष्ट निकट नहिं दूरा,
अकल अरूपी आप हजूरा।
घन रस रूप सच्चिदानन्दा,
जीव ब्रह्म का रञ्च न फन्दा ॥३७॥

अखण्ड आनन्द स्वरूप विराजा,
व्यापक हंस रू रंक न राजा।
निरभय रूप भया निज मस्ता,
धाम धरा गुण नाहिं रस्ता ॥३८॥

सब में पूरण आ ना जावे,
ऐसी गति कोई विरला पावे।
शूरा पूरा सन्त सु कोई,
ब्रह्म निष्ठी सत पहूँचे सोई ॥३९॥

पण्डित काजी ज्ञाता सोई,
देख अचम्भा ठाढे जोई।
पूरा खेल परसे कोई शूरा,
लेश अविद्या कर चकचूरा ॥४०॥

वक्ता पण्डित भेद न पावे,
पोथी थोथी बांच सुनावे।
निज पद माँहि झूलत सन्ता,
पण्डित खण्डित होय अनन्ता ॥४१॥

कहा कहूँ यह पट्टा परवाना,
गूंगा स्वाद कहो को जाना ।
'उत्तमराम' ब्रह्म घन पूरण,
लवन मिला जल आब न ऊरण ॥४२॥

'उत्तमराम' सन्त जाने कोई,
सत गुरू पाणी पूरा होई ।
आवन जावन पन्थ मिटाई,
निज पद हंसा रहा समाई ॥४३॥

गूंगा स्वप्ना कह नहि सकता,
निज पद में सब ही रंग थकता ।
'अचलराम' परम पद पहूंता,
'उत्तमराम' निर्भय अवधूता ॥४४॥

'अचलराम' गुरू सत पाया,
अमर पट्टा निज रूप लखाया ।
ब्रह्मवेता सत गुरूजी मेरा,
मेट दिया भव सिन्धु फेरा ॥४५॥
लख चौरासी का बन्धन मेटा,
सत सोहं जब हंसे भेंटा ।
'अमर पट्टा' सम्पुर्ण जाणो,
निज हंसो निर्भय निरवाणो ॥४६॥

'अमर पट्टा' सत पूरा भाखा,
वेद संत साहिब कह साखा ।
'उत्तमराम' सन्त ज्ञान आनन्दी,
रूप समाया गूदड़ गादी ॥४७॥

तुरिय अतीत रूप निज निष्ठा,
सर्व द्रश्य का मैं निज द्रष्ठा ।
'उत्तमराम' कछू साख सुनाई,
सत चित आनन्द रूप समाई ॥४८॥

कहा कहूं अब पार न आवे,
सन्त सु जान के सेन समावे ।
'उत्तमराम' स्वरूप सदाई,
'उत्तमराम' रहे थिर थाई ॥४९॥

अपना रूप पिछाने सागी,
जाके ज्योति गुरू मुख जागी ।
'अमर पट्टा' सम्पूर्ण पूरा,
'उत्तमराम' पुरण इक नूरा ॥५०॥

इति श्री अमर पट्टा (मुक्ति छाप) सम्पूर्ण ५

अथ श्री ब्रह्मात्म स्वरूप निष्ठा प्रदर्शन ६

इन्दव छन्द

आश नहिं कुछ वासन तुच्छ ही, धूल समान मिथ्या जगतारा।
तत्व जान निजानन्द आत्तम, तोड़ तृष्णा मद दोष विकारा ।।
निज परमानन्द निश्चय अखण्ड,सत अवधूत सदा निस्तारा।
'उत्तमराम' निष्ठा सत चेतन, पूरण ब्रह्म सनातन प्यारा ।१।

सत अधिष्ठाननित्यानन्द केवल, एक अद्वैत अनादि अपारा ।
सच्चिदानन्द स्वरूप सु व्यापक, नहिं दृश्य कछु द्वैत विकारा
अनव्यय अनन्य आप सु आपही, सन्त करे अवधूत विचारा।
'उत्तमराम' निष्ठा सत चेतन, पूरण ब्रह्म सनातन प्यारा ।२।

आत्तमराम प्रमानंद पूर्ण, ज्ञान विज्ञान अद्वैत अचारा।
भोग न रोग न योग संयोग न, कथा कपोल नहि विस्तारा ।।
राग न भाग न लाग अलाग न, आनन्द मङ्गल आप विचारा।
'उत्तमराम' अवधूतका निश्चय,एक निजानन्द ज्ञान भंडारा ।३।

ब्रह्म सनातन चेतन आनन्द, सत अधिष्ठान अखण्ड अपारा।
अस्ति भाति प्रिय अनन्य पूर्ण,सो खुद नूर अहं ब्रह्म न्यारा ।।
बरहक्क आत्तम हस्ति सरूर रू,इल्म अद्वैत परमान्द प्यारा।
'उत्तमराम' अवधुत का निश्चय,एक निजानन्द ज्ञान भंडारा ४

इति श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज कृत वाणी सम्पूर्णम् ।६।

ॐ

सर्व श्री स्वामी अचलरामजी महाराज के शिष्य श्री ब्रह्मनिष्ठ पण्डित

श्री स्वामी फूलरामजी महाराज कृत वाणी सुधा

भजन विकाश (१) राग आशावरी, टोडी, आशा।

साधो भाई ! भूमि संख्या जनाई।
गावत स्मृति व्यास सर्व ही, कोटि पचास बताई।टेर।
नव कोटि पर्वत के नीचे, तरूवर कोटि तेराई।
सतरह कोटि सागर के लेखे, सो पुराण में गाई ।।१।।
कोटि ग्यारह जन गण कबजे, कृषि/स्थान कराई ।।
कोटि छतीस तक भानु प्रकाशा, चवदों मणि चमकाई।२।
भूमि से लख योजन भानू, शशि लख दो ऊँचाई।
ताके ऊपर उडगण जानों, तीन लाख तुम भाई।३।
ऊपर दो लख भृगु स्थाना, तीन लाख सुर पाई।
पांच लाख गुरू का स्थाना, सप्त लाख ऋषि थाई।४।
ध्रुव स्थान योजन लख नव है, तहां बसे रघूराई।
सत संग करे हरि गुण गावे, हरि घर में सो जाई।५।
हरि घर में सत मौज घनेरी, दुःख क्लेश न काई।
'फूलाराम' हरि घर पहूंचा, हरि हम अन्तर नांई।६।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

ॐ

श्री १०८ श्री स्वामी उतमराम जी महाराज के शिष्य

स्वर्गीय सन्त कालूरामजी (हथोंगा-सिन्ध निवासी) कृत भजन

भजन विकाश (१) राग आशावरी व टोडी ।

साधो भाई ! सत गुरू सिरजण हारा ।
भक्तन हेतु सगुंण हो स्वामी, निर्गुंण निज करतारा ।टेर।
सृष्टा रजो उतिपत सारी, पांच तीन विस्तारा ।
नाना रंग ख्याल कर नाना, रहस्य वेद ' कारा ।१।
विष्णु सतो पालन क्षिति कर ही, विश्व पोषन वारा ।
ज चेतन जल थल नभ चारी, सब को देत अहारा ।२।
शंकर तमो प्रलय जग करही, दुष्ट निकन्दन सारा ।
शंकर रूप सदा शिव सामर्थ, कर भक्तन निस्तारा ।३।
सत गुरू रूप नित्य धर सुन्दर, भक्ति ज्ञान प्रचारा ।
'उत्तमराम' स्वामी ब्रह्म वेता, काटत मोह विकारा ।४।
निर्गुंण में संशय नहिं भ्राति, साक्षी नित सरदारा ।
'कालुराम' सदा गुरू शरणे, मुक्ति स्वरूप विचारा ।५।

भजन विकाश (२) राग झंझोटी पद

लख्योरि मैंने ! गुरू गम से निरधार ।टेर।
साधन सहित श्रवण कर मनन, निदिध्यासन इकतार ।१।
आप ही आप लख्या शुद्ध चेतन, सच्चिदानन्द अपार ।२।
साधन संग संशय तज सारा, शंकर रूप विचार ।३।
सतगुरू 'उतमराम' अबाणी, 'कालूराम' सुख सार ।४।

॥ श्री गुरु हरि सच्चिदानन्दाय नमः ॥
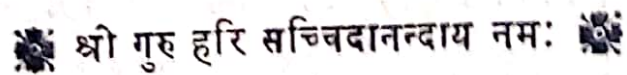
श्री श्री १०८ श्री मत्परम हस परिव्राजकाचार्य पीठ ब्रह्मनिष्ठ

श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के परम शिष्य

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशजी कृत

भजन पद प्रारम्भ

भजन विकाश (१) राग देश बधावा, धनाश्री पद

सईयों ! गुरू उत्तम पाया ए ।
उत्तम साधन सहित विराजे, उत्तम दरशाया ए ।टेर।
उत्तम ज्ञान लखाया उत्तम, उत्तम मनाया ए ।
उत्तम ध्यान शील गुण ऊपर, उत्तम बताया ए ।१।
उत्तम भक्ति वैराग्य साधन, उत्तम थाया ए ।
उत्तम ब्रह्मवेता गुण सागर, भक्तन भाया ए ।२।
उत्तम आनन्द हस्ति सरूरा, इल्म ध्याया ए ।
उत्तम अस्ति भाति प्रिय पूर्ण, सब में लखाया ए ।३।
'उत्तमराम' उत्ताम ब्रह्मज्ञानी, करि दाया ए ।
'उत्तम रामप्रकाश' बधावा, गुरू गम गाया ए ।४।

भजन विकाश (२) राग अर्द्ध भुजंगी लावणी

ब्रह्मचर्य के नियम पुकारूँ, धारे सो ब्रह्मचारी है।
दुर्लभ मिलना ब्रह्मचारी जग, सुलभ सभी व्यभिचारी है।टेर।
भोग्य बुद्धि कर नार निरीक्षण, स्मरण, नार प्रचारी है।
केलि, गुह्य भाषण, संकल्प, प्राप्ति, यत्नता भारी है।१।
सम्भोग प्रत्यक्षता आठो अङ्ग ये, त्यागे सो ब्रह्मचारीहै।
हस्त भोग, गुदादि मैथुन, त्यागे सभी विकारी है।२।
साधन सत संग गुरु की सेवा, पढन लिखन चितधारी है।
दृढ निश्चय परिपक्क पूर्ण, संत आदर अविकारी है।३।
शुभ लक्षण धारे ब्रह्मचारी, त्यागे संग अनारी है।
'रामप्रकाश' वैष्णव ब्रह्मचारी, प्रकट संत पुकारी है।४।

भजन विकाश (३) राग अर्ध भुजंगी लावणी पद

ब्रह्मचर्य बिन पालन किये, कोई आनन्द नहि आता है।
योग भोग भक्ति विद्यादि, ज्ञान आनन्द नहि पाता है।टेर।
ब्रह्मचर्य में तीन शब्द है, अर्थ भी तीन सुहाता है।
तीनों अर्थ धारे ब्रह्मचारी, अग्रश्रेणी मन भाता है।१।
ब्रह्म-शब्द वीर्य, वेद सु, ईश्वर वाचक धारी है।
चर्य-रक्षण, अध्ययन, चिन्तन, करिये योग विचारी है।२।
वीर्य रक्षण वेद अध्ययन कर, ईश्वर चिन्तन जाना है।
ब्रह्मचर्य बिन भोग न होता, फीका सभी रस खाना है।३।

अष्ट मैथुन को त्यागे बिन ही, योग सफल नहि होता है।
विषयाशक्त व्यक्ति जो होवे, बोध उसे नहिं होता है ।४।

ब्रह्मचर्य से हीन पुरुष सो, ब्रह्मज्ञानी दृढ नाहिं है।
ब्रह्मचर्य बिन पाक अलोना, 'रामप्रकाश' दरशाहि है ।५।

भजन विकाश (४) राग कान्हड़ा, चौपाई, पद।

परम स्वरूप योग का योई,
भिन्न भिन्न खोल लखाऊँ सोई ।।टेर।।

ओ३म् सोहंम् प्रणव ले साथा,
गुरू गम साधन संगत गाथा।
प्रथम हठ योग की धारा,
योग अष्ठाङ्ग प्रकट पुकारा ।।१।।
तामे यम है पांच प्रकारा,
अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य धारा।
अपरिग्रह, अस्तेय सुधारा,
पांचो साधन एक विचारा ।।२।।
द्वितीय साधन नियम बखाना,
शौच, शंतोष, तप को ठाना।
कर स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधाना,
यह पंच नियम योगी जन जाना ।।३।।
तृतीय साधन आसन पूरा,
संख्या लाख चौरासी तूरा।

तामे लख चौरासी प्रधाना,
सिद्ध, पदमासन मुख्य बखाना ।।४।।

ता पीछे षट् क्रिया ठाना,
धोति, बस्ती, नेति गाना ।
त्राटक, नौलि, कपाल सु-भाति,
षट् कर्म साधन कर दिन राती ।।५।।

फिर कर साधन चतुर्थ पूरा,
प्राणायाम गुरू मुख शूरा ।
इडा पिङ्गला सुषुमरण नाड़ी,
श्वास प्रश्वास की देखो बाड़ी ।।६।।

मन्त्र योग पूरक मन ठाना,
तामे मूल सु बन्ध लगाना ।
खेचरि मुख में करत बखाना,
ब्रह्म रंध्र धोय जिभ्या उलटाना ।।७।।

भूचरि नासा प्राण-अपाना,
चंचल मन ठहराय जपाना ।
करि उड्डियान बन्ध परवाना,
कुम्भक अष्ठ शीतली जाना ।।८।।

सूर्य भेदन, उजाई, सितकारी,
भस्त्रिका, भ्रामरि, मुर्छाधारी ।

अष्ठ प्लाविनि कुम्भक जाना,
चोंचरी मुद्रा नैन ठिकाना ॥९॥
मुद्रा अगोचरी श्रवण द्वारा,
ज्ञान सुरत मिले सुख धारा ।
आगे बन्ध जालन्धर ठाना,
पंचम मुद्रा उन्मुनि ध्याना ॥१०॥

रेचक करके साधन श्वासा,
निश्चय होय काट मन आशा ।
प्राणायाम चक्र षट् साधे,
माग मुक्ति का तब ही लाधे ॥११॥

मूलाधार मूल रंग लाला,
चव दल अक्षर, गणपति, भाला ।
स्वाधिष्ठान, उपस्थ, अज, पीला,
(षट्) दल वर्ण बहु विधि लीला ॥१२॥
मणिपूर, विष्णु, नाभि वासा,
(षट्) दल वर्ण हरीया जासा ।
अनाहत, हृदय, शिव, रंग स्वेसा,
द्वादश दल में वर्ण महा भेसा ॥१३॥

विशुद्ध, कण्ठ सु चन्द्र देवा,
शोसन रंग शोड़ष दल भेवा ।

आज्ञा चक्र त्रिकुटी जाना,
सूरज तेज दोय दल माना ॥१४॥

सहस्र दल भँवर गुफा पहिचाना,
सत्य देवाऽक्षर बावन भाना।
मूल में षट् शत श्वासा माना,
इतर सहस्र षट्, इक जप ठाना ॥१५॥

कर आसन पश्चिमोत्थाना,
नाभी नाग्नि का मुख पलटाना।
उलटा पवन त्रिकूटी सीधो,
दशवां चढो सुमेरू बींधो ॥१६॥

कर 'प्रत्याहार' साधन लख पूरा,
पंचम आचार शुद्धि संत शूरा।
वर लययोग 'धारणा' धारो,
षष्टम साधन कर सुविचारो ॥१७॥

सच्चिदानन्द 'ध्यान' सत माना,
सप्तम साधन है निरवाना।
ऋद्धि सिद्धि काटे सब फन्दा,
परम वैरागी पहूँचे बन्दा ॥१८॥

अष्टम 'समाधि' दोय प्रकारा,
निरविकल्प रू संकल्प धारा।

संशय भ्रम कलेश मिटाई,
निःसंशय पद पावो सांई ।।१६।।

पंच कलेश काट मन दूरा,
सहजे मुक्त योग में शूरा ।
राग रू द्वैष अस्मिता हारो,
अविद्या अभिनिवेश विडारो ।।२०।।

राज योग मिला इकसारा,
द्वैत अद्वैत रहा नहिं लारा ।
जीव न ईश, ब्रह्म नहिं माया,
तोय तरंग सम सिंधु समाया ।।२१।।

तन मन वाणी लय इक तारा,
गोचर निर्गुण नहिं अवतारा ।
अचल अखण्ड अद्वैत अबाना,
'रामप्रकाश' शुद्ध अधिष्ठाना ।।२२।।

भजन विकाश(५) राग कान्हड़ा, चौपाई छन्द ।

या विधि पिङ्गल करत उचारा,
नाना रंग कविता रस धारा ।।टेर।।
भिन्न भिन्न रूप गुरू मुख सारा,
अक्षर विद्या करत विचारा ।
फणीपत कीन बहू विस्तारा,
मोहन विद्या काव्य सुधारा ।।१।।

ज स र त अशुभ गण यह चारा,
म न भ य शुभ सदा निस्तारा।
य मा ता रा ज भा न स ल गू जानो,
अष्ट यही गण भेद पिछानो।२।

मगण फल लक्ष्मी महि देवा,
नगण बुद्धि नाक मित सेवा।
भगण यश शशि शुभ आशा,
यगण आयु जल देव सु दाता।३।

रगण दाह अग्नि गुरू पूरा,
सगण विदेश वायू गुरू सूरा।
तगण सुन्य नभ सम सत इष्टा,
जगण रूज गद रवि सु नष्टा।४।

शुभ अशुभ का कहूं विचारा,
आदि तज भज होय सुखारा।
वर्ण मात्रा कर प्रस्तारा,
विचित्र अल्प विशेष प्रचारा।५।

अतात्यनुप्रास भाव सम अङ्का,
पंच अनुप्रास कविता का डंका।
छेकानुप्रास वृत्यानुप्रासा,
श्रुत्यानुप्रास लाठानुप्रासा।६।

शंख्या, सूचि, नष्ट, प्रस्तारा,
मेरु पताका, उद्दिष्ठ विचारा।
जान मर्कटी अष्टम रङ्गा
आठ यही लख पिंगल अङ्गा।७।

भ झ घ र धो खा हा न उचारा,
आदि दद्धा अष्ट तज सारा।
मं ड प मध्य तजो सुख राशी,
झ ट क अन्त तज गल की फाशी।८।

नौ रस कविता के कवि भाखे,
वेद अङ्ग पिंगल ऋषि आखे।
शुभ गण आदि शारद ध्यावो,
परम सुखानन्द, भ्रांति ढावो।९।

वीर, रौद्र शांति रस शृँगारा,
करुणा, हास्य, भ्यानक, सारा।
विभत्सव अद्भुत नौ रस भासा,
आदि अन्त के वर्ण अनुप्रासा।१०।

तामे छन्द है दोय प्रकारा,
वर्ण मात्रा वृत विस्तारा।
तोड़ जोड़ व्युतिपति अङ्का,
भाष्य जोड़ काव्य ताटंका।११।

लक्षण, परीक्षा, उद्देश्य, मंडा,
कर कविता धारन त्रिदण्डा।
नाना छन्द कविता बहु भान्ति,
जानत ही उर आवे शांति।१२।
छन्द शंख्या कुल छन्नवे करोड़ा,
तामे नाना बहुत मरोड़ा।
कर्ण, करतल, पयोधर, विष्टा,
वसुचरण काल लिङ्ग शिष्टा।१३।
पूर्ण छन्द असंख्य बखाना,
दोहा, कवित, चौपाई, नाना।
नाना बात घात रस भाषा,
कवि गण कविता करत सुभाषा।१४।
भक्ति ज्ञान योग वैरागा,
जप तप शांख्य महिमा लागा।
देव स्तुति गुरू उपदेशा,
वर्णन कर शुद्ध लिपि लेशा।१५।
वर्ण मात्रा व्याकरण अनुकूला,
शब्द काव्य रच सानुकूला।
कर बहू अपिंगल तरंग अपारा,
नाना रूप छन्द रस भारा।१६।

जग में जीत परम पद पावे,
होय सु कीर्ति अति शुद्ध थावे।
सच्चिदानन्द सरूर अखण्डा,
'रामप्रकाश' मन वाणी खण्डा।१७।

भजन विकाश (६) राग आशावरी, आसा, टोडी पद।

साधो भाई ! पञ्चीकरण विचारा।
पंच भूत की महिमा भारी, जगत सर्व रच डारा।टेर।
सत सता ते आदि चेतन, ता फुरणा में सारा।
माया ता महतत्व इच्छा, त्रिगुण कीया विस्तारा।१।
रजो इन्द्रिय युग सतो देवता, पंच भूत तमो धारा।
भूमि, तेज, जल, वायु, आकाशा, याका सकल पसारा।२।
(१) नभ की शोक प्रसारण निन्द्रा, लार रोम पंच धारा
वास शीश रंग श्याम ही जाना, शब्दाऽशब्द अहारा।३।
निराकार गुरु रूप सुपूर्ण, विषय शब्द श्रवण द्वारा।
'श्रोत्र वाक' दो इन्द्रिय माना, कोश आनन्दमय पारा।४।
'शुन्याकार' व्यापक ही जानो, शब्द धुनि रणंकारा।
फीका स्वाद स्वरूप अवकाशा, कषाय तिक्त रस मारा।५।
(२) वायु की काम धावन तृषाकर, श्वेत त्वचापंच धारा।
नाभि वास हरा रंग पाया, गन्धाऽगन्ध अहारा।६।

हरि गुरू रूप जड़औ चेतन, स्पर्श घ्राण लख द्वारा।
'त्वचा पानी' युग इन्द्रिय जागी, कोश प्राणमय प्यारा।७।
'षट् कोणा' आकार दरशाया, शब्द सोंह लख प्यारा।
स्वाद खट्टादि वेग गमनादि, अम्ल तिक्त रस कारा।८।
स्फन्द निस्फन्द युक्ति दो धारा, दोष स्वभाविक प्यारा।
भिन्न भिन्न अर्था जाने गुप्ता, गुरू भक्त सचियारा।९।
(३) तेज की क्रोध वलन क्षुध्यादि, मुत्र नाड़ी पंच धारा।
पीता वास लाल लख रंगा, रूप कुरूप अहारा।१०।
रवि गुरू पाद चक्षु दो इन्द्रिय, विषय रूप नैन द्वारा।
कोश मनोमय शब्द भुकभुका, यह तिरकोनाऽकारा।११।
स्वाद कवड़ादि रूप तेजस्वी, कटु तिक्त रस मारा।
उष्ण स्वभाव स्वरूप दग्धादि, अरू प्रकाश विचारा।१२।
(४) जल की मोह चलन अरु क्रांति, शुक्र मांस पंच धारा।
भाल में वास सफेद ही रंगा, लिंग रसना रस प्यारा।१३।
गुरु अज लिंग द्वार पहिचाना, मुत्रका त्याग आहारा।
कोश विज्ञान शब्द निज चलचल, चन्द्र फांक आकारा।१४।
चर पर स्वाद रूप आत्तमा, स्वरूप द्रव्यता धारा।
शीतल स्वभाव तिक्त रसलौना, दक का सकल पसारा।१५।
(५) भुमि भय आकुचन आलस, शोणित हाड विचारा।
वास कलेजे गुरू चन्द्रमा, रंग पीला मुख द्वारा।१६।

'गुदा घ्राण' युग इन्द्रिय जानो, विषय गन्ध को धारा।
कोश अन्नमय किट किट शब्दा, चौरस/गोल ओकारा।१७।

स्वाद मीठा करु जड़ स्वभावा, कहत स्वरूप कठारा।
मधुर तिक्त रस रूप सर्वाधारा, खान पानादि आहारा।१८।

अधिक देख वर 'वृक्ष रूप में' पंच भूतन विस्तारा।
चेतन अव्यय अखण्ड निज न्यारा, नहिं तां जगदाकारा।१९।

सच्चिदानन्द सर्व का स्वामी, गाय श्रुति सन्त नारा।
'रामप्रकाश' परमानन्द केवल, पंच भूत जड़ सारा।२०।

भजन विकाश (७) राग आशावरी, आसा, टोडी पद।

साधो भाई ! चौदह लोक तन मांई। 5
सात द्वीप नव खण्ड याहि में, भिन्न भिन्न खोल दरशाई।टेर।

सप्त द्वीप के अन्तर नवो खण्ड, चवदह लोक ता आई।
एक एक के अन्तर मिलिया, अरस परस गम आई।१।

कुश द्वीप वाक में जानो, क्रौंच द्वीप कर ताई।
शालमली घ्राण, पलक्ष चक्षु में, जम्बु श्रवण में छाई।२।

पुष्कर पाद में वाश करत है, उदर शाक लख चाई।
सात द्वीप यह भनत श्रुति कर, गुरू बिन जाने नाई।३।

उत्तकल गुदा, नाभ लिंग में, किम्पुरुष नैंन कमाई।
वाम नैत्र भद्राश्व खण्डा, इलाव्रत श्रवण साई।४।

हिरण्यगर्भ वाम लख श्रवण, केतू माल नाकाई ।
नरहरि घ्राण वाम लख खण्डा, भरत नवो मुख पाई ।५।
अतल लोक उदर में जानो, वितल कमर के डांई ।
सुतल लोक साथल में मानो, जानू तलातल राई ।६।
पिंडी रसातल,महातल गिरिया,पादुका पाताल याई ।
सप्त लोक नीचे के योई, श्रुति वेद संत गाई ।७।
स्वरलोक नाभि में जानो, भूरलोक उर टाई ।
भुवर लोक छाती में वासा, जनलोक कण्ठ लाई ।८।
तपलोक घ्राण में वाशा, महर लोक मुख थाई ।
दशवां द्वार सतलोक कहत है, ऋषि मुनि सत सांई ।९।
शीश आकाश वायु लख घ्राणा, पीते अग्नि कह भाई ।
जल भाल में भुमि कलेजा, भिन्न भिन्न वास बताई ।१०।
सूर शशि स्वरोदय नैना, हरि हर भुजा कहाई ।
चतुरानन उर जान लेहु वर: उदर सर्व कह ठाई ।११
वाणी वेद, पर्वत अस्थि कर, रोम वनस्पति हाई ।
छिद्र लाख नव तारे जानो, ब्रह्मण्ड पिण्ड के घाई ।१२।
इडा गंगा है, यमुना पिंगला, सरस्वति सुषमण साई ।
सुमेर इक्कीस पीठ की गांठों, योगि जन फरमाई ।१३।
स्थूल पदार्थ पार न आवे, गिन कथ के थक जाई ।
'रामप्रकाश' सच्चिदानन्द न्यारा, आर पार इक राई ।१४।

— भजन विकाश (८) राग आशावरी, आसा पद ।

साधो भाई ! चार बाणी लख गाई । 5
कर निर्णय महरम कहूं साचा, सत गुरु राह लखाई ।टेर।
(१) नाम भेद चार लख बानी, बीज परा दरशाई ।
होय अंकूर पश्यन्ती जागे, बढे वृक्ष गत आई ।१।
दोय पात मध्यमा पूर्णं, वैखरी डाल फैलाई ।
डाल में बीज बीज में तरूवर, अरस परस गम आई ।२।
(२) प्रथम संकल्प नाभि कँवल में, परा ओम में थाई ।
हृदय पश्यन्ति करत विचारा, ध्यान ज्ञान ठहराई ।३।
कण्ठ मध्यमा मनन करत है, निश्चय कर परखाई ।
मुख में बसे बैखरी श्रवण, अक्षर उचार कराई ।४।
(३) गुरू महिमा, उपदेश, स्तुति, सोई वैखरी छाई ।
गुरू शिष्य प्रश्नोत्तर जामे, मध्यमा सो फरमाई ।५।
शांख्य कहै व्यापकता मैं हूं, सो है पश्यन्ति बाई ।
हूँ तूं नहिं ब्रह्म अद्वैता, सो पद परा अचाई ।६।
तुरिया रूप है वाणी चारों, भेद भाव विसराई ।
'रामप्रकाश' सन्त कहै ज्ञाना, लखे जिज्ञासू भाई ।७।

— भजन विकाश (९) राग आशावरी टोडी, आसा पद ।

साधो भाई ! षट् शास्त्र विगताना । 5
आप आप की पक्षपात में, निज स्वरूप नहिं जाना ।टेर।

'योग' पतञ्जलि मोक्ष मानते, पंच क्लेश नशाना।
'शांख्य' कपील ताप त्रय नाशन,मोक्ष स्वरूप बखाना।१।
'न्याय' गोतम प्रकृति पारा, मायिक दुःख विलाना।
'वैशेषिक' कणाद मोक्ष ही, न्याय अनुमत माना।२।
'पूर्वमीमांसा' जेमनि, भाखे, कर्म विधि परवाना।
'उत्तरमीमांसा' व्यासदेवजी, ब्रह्म ज्ञान अधिकाना।३।
परस्पर लागे खैंचा तान में, लखा नहिं अधिष्ठाना।
सब का सार एक रव भाखे, गुरू मुख सन्त पिछाना।४।
ताप क्लेश माया अज्ञाना, कर साधन कर्मांना।
'रामप्रकाश'जान्या निज आत्तम,तज पक्ष लख ब्रह्मज्ञाना।५।

भजन विकाश (१०)राग आसावरी ठोडो,संगीत पद।

साधो भाई ! गुरू मुख भ्रम विडारा।
जीवन मुक्ति के पंच प्रयोजन, मिले साधन में सारा।टेर।
विसंवादाऽभाव, ज्ञान की रक्षा, दुःख निवृत्ति धारा।
आनन्द प्राप्ति,तप लख पांचों, भिन्न भिन्न करूं पुकारा।१।
जल्पावाद, वितण्डा त्यागा, विसंवादा लख प्यारा।
ब्रह्माकार निरन्तर वृति, ज्ञान रक्षा इतबारा।२।
प्रतक्ष दुःख जग के लख नाना, दुःख निवृति सारा।
अचल अखण्ड निजानन्द प्राप्ति, चतुर्थ सुख अपारा।३।

शम दम तन मन वाणी निग्रह,पञ्चम तप यह धारा।
जीवन मुक्ति का फल यह पांचों, सन्त लहे विस्तारा।४।
होय निरभय विचरे जग मांहि,वन जग सिंह अचारा।
'रामप्रकाश' निःसंशय ज्ञानी, मग्न एक धुन वारा।५।

भजन संख्या (११) राग आशावरी टोडी, आस पद।

मन रे ! वह घर है समशाना।
जा घर सन्त पांव नहिं धारे, नहीं हरि कथा सुहाना।टेर।
जप तप योग यज्ञ नहिं पूजा, गुरू गम प्रेम बिगाना।
सत संग सन्त सेवा नहिं आदर, नहिं दृढ आतमज्ञाना।१।
हरि कथा स्मरण ना श्रवण,नहि सन्ध्या नहिं ध्याना।
पद अर्चन नहिं विधि विचारा,नहिं गुण गुंज बखाना।२।
मात पिता गुरू भ्राता द्रोही, तजिया वेद विधाना।
ऐसे नर ने वास लियो है, लास जीवित वह जाना।३।
भागवत पाठ रामायण नाही, नहिं हरि चर्चा ठाना।
'रामप्रकाश' तजो घर ऐसा, नर्क समान पहिचाना।४।

भजन संख्या (१२) राग आशावरी, टोडी, असा पद।

मनरे ! वह घर स्वर्ग समाना।
जा घर हरि मिलन की चर्चा, सन्त सेवा अधिकाना।टेर।
सत गुरू संग सज्जन की सेवा, योग यज्ञ ठहराना।
हरि अर्चन अतिथि सत्कारा, स्मरण ध्यान वरदाना।१।

झालर शंख संध्या वर वन्दन, हारा भ्रम अज्ञाना ।
वेद विचार शील संतोषा, अध्यात्म कथा पुराना ।२।
भगवत कथा गीतावर भागवत, रामायण लिव लाना ।
श्रवण मनन में प्रीति धारे, बसे सुराधि समाना ।३।
वां घर देव सर्व चलि आवे, तीर्थ कोटि निधाना ।
'रामप्रकाश' सदा सुख जीवो, भवन वैकूण्ठ सुहाना ।४।

भजन विकाश (१३) राग झंझोटी पद ।

आलीरी प्यारी ! सन्त सोई मस्तान ।टेर।
सत गुरू शरण साधन की पंगत, ले बैठे ईमान ।१।
प्रेम पी प्याला बहू मतवाला, असल भये गलतान ।२।
निज धड़ से 'हूं' शीश उत्तारे, जाति कुल· अभिमान ।३।
नाम मांहि सत संग में मस्ता, भक्ति वैराग संग ज्ञान ।४।
'रामप्रकाश' सत में नित झूले, खोई जग की कान ।५।

भजन विकाश (१४) राग झंझोटी पद संगीत ।

आलीरी प्यारी ! ध्यान धणी को धार ।टेर।
जोभन काया यह धन माया, मिथ्या विश्व सब छार ।१।
मात रू तात दारा सहोदर, दुषण को भण्डार ।२।
होय एकान्त सुमर मन साहब, श्रवण मन विचार ।३।
'रामप्रकाश' प्रेम भज विरह में, सहज मिले करतार ।४।

भजन विकाश (१५) राग झझोटी पद संगीत।

आलीरी प्यारी ! ध्यावो राम गोपाल ।टेर।
रमण करे सर्व में वो ही, वही करे प्रतिपाल ।१।
भक्त उभारे कष्ट निवारे, दीनन हित दयाल ।२।
सोई है स्वामी अन्तर्यामी, भूपन भूप भूपाल ।३।
'रामप्रकाश' ध्यावे जो हरि को, कृपा करे कृपाल ।४।

भजन विकाश (१६) राग झझोटी पद संगीत।

पीयाजी ! बिना तलफत हूँ दिन रात ।टेर।
नित नित विलखूं फिरुं उदासी, चैन जीव नहि पात ।१।
पीया ना पातीदुःखी दिन राती, विरह में रात जगात ।२।
पीया बिन सारे बड़े दुखः भारे, विष सम लागे भात ।३।
'रामप्रकाश' पिया बिन विरहनि, तलफ२ जीव जात ।४।

भजन विकाश (१७) झझोटी पद संगीत।

बटाऊ बीरा ! पिव को लावो सन्देश ।टेर।
दासी छोड़ चले हरि प्रीतम, जाय बसे प्रदेश ।१।
कहां बसे अरु कौन दिशा में, मुझ को यही अन्देश ।२।
विरह वियोगण भई वैरागण, पहना भगवां भेश ।३।
खान पान भोग पट भुषण, त्याग्या सब ही लेश ।४।
'रामप्रकाश' विरहनि तलफे, कर कर छूटा केश ।५।

भजन विकाश (१८) राग झंझोटी पद संगीत।

आलीरी ! प्यारी लागी विरह अपार ।टेर।
धान न भावे विरह सतावे, चेन न परत लिगार ।१।
सेज सो सूली पीया बिन भूली, भुक्षण पट शृंगार ।२।
हृदय तलपे जीवड़ा कलपे, बूझे ना कोई सार ।३।
'रामप्रकाश' विरहनि गावे, ढोल न बीण सतार ।४।

भजन विकाश (१९) राग झंझोटी सारंग, सोरठ पद।

आलीरी सखी ! लागी पीया से प्रीत ।टेर।
विरह के मांही भई वैंरागण, कोई नहिं जाने रीत ।१।
पीया जी मेरो अचल अखण्ड है, श्रुति गावत गीत ।२।
अज अविनाशी पीया हमारो, जामे हार न जीत ।३।
'रामप्रकाश' फकीरी पाई, पीया मिले परतीत ।४।

भजन विकास (२०) राग झंझोटी पद संगीत।

माई री ! मेरे लागी ज्ञान कटार ।टेर।
ब्रहकी बरछी धारा तिरछी, लागी हृदय मंझार ।१।
सत गुरू मारी पल में तारी, शब्द दीया टकसार ।२।
धर्म की धारा मूठ मर्म की, लागी उधारे धार ।३।
'रामप्रकाश' घायल मन पूरा, मरण न वारम्वार ।४।

भजन विकाश (२१) राग झंझोटो पद।

भईया प्यारा ! सत संगत ततसार ।टेर।

गावत सन्त सदा सुख पावत, नेति वार उचार ।१।
जीव अनन्त पार भव होवे, कर सतसंग निरधार ।२।
राजा रंक पुरूष औ नारी, पार होवे सचियार ।३।
जगमें जहाज जीवन हित योई,साधन गुरू गम प्यार ।४।
'रामप्रकाश' पाया सत संग में, उत्तमराम ! अपार ।५।

भजन विकाश (२२) राग झंझोटी पद संगीत।

बटाऊ बीरा ! छानी सुनाऊँ बोल ।टेर।
पीया कब आसी धीर बंधासी, विरह मचावत रोल ।१।
पिया बिन मेरो प्राण घनेरो, तलफत तन मन डोल ।२।
नींद न आवे धान न भावे, विरह घुरावत ढोल ।३।
'रामप्रकाश' पुकारे विरहनि, यही विरह के बोल ।४।

भजन विकाश (२३) राग झंझोटी पद संगीत।

आलीरी प्यारी ! लागी दरश की आश ।टेर।
तन शुद्धि हारी मन की मारी, सुख में श्वास निराश ।१।
चुन चुन मांस पक्षी तन फारे, पीड़ा नहिं प्रयाश ।२।
दोय नैन मत खावो हमारे, पिया दर्शन विश्वास ।३।
'रामप्रकाश' गुरू गम ज्ञाना, पाया पीया अविनाश ।४।

भजन विकाश (२४) राग झंझोटी पद संगीत।

आलीरी प्यारी ! लागी शब्द कटार ।टेर।
तन मन वाणी हृदय बींधा, निकली आरो पार ।१।

साधन संग गुरु गम साधी, विरह चढी मतवार ।२।
कटचा विकार हटचा दुःख सारा, भूल गई संसार ।३।
अपनो परायो शुद्ध नहि तनकी, भूली शुद्ध घर बार ।४।
'रामप्रकाश' पाया घट अन्दर, दिल ही में दिलदार ।५।

भजन विकाश (२५) राग झंझोटी पद सगीत ।

समझ मन ! या विध भ्रम निवार ।टेर।
सीप में रूपा सर्प रज्जु में, ठूंठ में भूत अचार ।१।
मृगतृष्णा जल धूप पपैया, स्वान मुकर मठधार ।२।
कूप में सिंह गिरा भ्रम से, बंझ्या स्वप्न सुत प्यार ।३।
फटिक शिला रंग नाना भासे, बुद्धि भ्रांति दे टार ।४।
या विध भ्रम जगत यह भासे, सत्य ब्रह्म सर्वाधार ।५।
'रामप्रकाश' दृश्य सब मृषा, सत द्रष्टा निज सार ।६।

भजन विकाश (२६) राग झंझोटी पद संगीत ।

आलीरी प्यारी ! द्वैत गयो सब टूट ।टेर।
सच्चिदानन्द अद्वैत पिछाण्या, फन्द गयो सब खूट ।१।
साधन संगत गुरू की कृपा, कर्म भर्म को कूट ।२।
द्रश्य विकार क्लेश बिलाया, माया कारज छूट ।३।
'रामप्रकाश' अनलहक्क चेतन, भ्रम गयो सब फूट ।४।

भजन विकाश (२७) राग झंझोटी, सारंग, सोरठ, पद ।

आरती तेरी ! है नित ही सुखकार ।टेर।

अचल अखण्ड अनामो पूर्ण, ऊँच नीच इकसार ।१।
परम प्रकाशी सत सुख राशी, अविनाशी करतार ।२।
अजर अमर धन विश्व में पूर्ण, सच्चिदानन्द अपार ।३।
'रामप्रकाश' सो द्वैत गमाया, नहिं दिली दिलदार ।४।

भजन विकाश (२८) राग कालिंगड़ा प्रभाति ।

करो भजन करतारा मनवा, दोष दशो छिटकाई रे ।टेर।
हिंसा, चोरी, तज दे यारी, तीन दोष तन गाई रे ।१।
चिन्ता, तृष्णा, औगुन परके, दोष तीन मन माई रे ।२।
झूँठ, चपलता, निन्दा, कठोरा, बोल दोष चव पाई रे ।३।
सतसंग गुरू संग क्षमा धारो, नियम करो सुखदाई रे ।४।
'रामप्रकाश' त्याग मन दश को, जीवत मोक्ष पद जाई रे ।५।

भजन विकाश (२९) राग कालिंगड़ा, प्रभाति पद ।

विद्या पढलो प्यारे लड़कों, विद्या ही धन भारा रे ।टेर।
देश विदेशों विद्या सहायक, माता सम हितकारा रे ।१।
भाई भुजा सम रक्षक विद्या, मित्रन के सम प्यारा रे ।२।
चोर न लूटे दीया न खूटे, भांई बांटे नहिं न्यारा रे ।३।
भक्ति ज्ञान बोद्ध पढ विद्या, कर विद्वान विचारा रे ।४।
क्षमा शील धर्म रति सतसंग, सहजे होय सुधारा रे ।५।
'रामप्रकाश' पुकारे लड़कों, विद्या पढलो सारा रे ।६।

भजन विकाश (३०) राग कालिंगड़ा, प्रभाती पद।

ऐसे होय सुधारा प्यारे, जग से होय किनारा रे। टेर।
सत संग गुरू साधन भक्ति से, भव से नैया पारा रे। १।
क्षमा अहिंसा सत्य पालन, मृदुता का नारा रे। २।
शम दम करके मित्रचारा, सुखी गृहस्थ घर बारा रे। ३।
उत्तमकाम उत्तम कर सौहबत, दुरस उत्तम दीदारा रे। ४।
'रामप्रकाश' विद्या पढ धीरज, मुक्ति होय इतबारा रे। ५।

भजन विकाश (३१) राग रामगिरि प्रभाति पद।

यह सत रूप हमारा साधो, यह पूर्ण इतबारा वे।
सच्चिदानन्द अपेची आत्तम, नाम रूप से न्यारा वे। टेर।

अचल सनातन व्यापक पूर्ण, स्वयं प्रकाशी प्यारा वे।
एक असंगी नित्य अनव्य, सो अविनाशी धारा वे। १।

अव्यय अनावृत प्रमा चेतन, भूमा ब्रह्म अपारा वे।
द्रष्टा अतंगी निज निर्वाना, द्रश्य सभी असारा वे। २।

अस्ति भांति प्रिय केवल, अनल हक्क इकसारा वे।
हस्ति इलम सरूर अखण्डा, नहिं त्रिगुण विस्तारा वे। ३।

अद्वैत गफूर प्रमानन्द विष्णु, अटल अमलनिराधारा वे।
'रामप्रकाश' अफुर अधिष्ठाना, तुम मम नाहिं हमारा वे। ४।

भजन विकाश (३२) राग मंगल, अरिल्ल, प्यारी पद ।

प्यारी ए ! भटके मूढ अजांण, माया जाल पसार है ।
समझे सन्त सुजांण, निर्वांणी निराधार है ।१।
रज्जू में भासे नाग, सीपी भोडल सार है ।
मृग तृष्णा जल थाग, यूँ ही जाण संसार है ।२।
बन्ध विषय के माहि, मोक्ष भोग विसार है ।
सत संग गुरू गम पाहि, विरला पावे पार है ।३।
तोड़ी कुल की कान, हर्ष शोक को टार है ।
रामप्रकाश मस्तान, आपा लख्या अपार है ।४।

भजन विकाश (३३) राग कल्याण संगीत पद ।

लखोरे जना ! अपना रूप निज आप ।
अपना आप लख रूप निजानन्द, तोड़ सकल सन्ताप ।टेर।
अचल अनन्त कुटस्थ अधिष्ठाना, भूमा ब्रह्म अनाप ।१।
सतचित आनन्द परम अज चेतन, माया रहित त्रिताप ।२।
अस्ति भाति प्रिय अखण्डित पूर्ण, पञ्च न रञ्च प्रलाप ।३।
हस्ति इल्म सरूर अनलहक्क, 'रामप्रकाश' सोई आप ।४।

भजन विकाश (३४) राग कल्याण संगीत पद ।

भजो रे मना ! कृष्ण नन्द गोपाल ।
गोविन्द राम गोपाल हरि भज, करिये भक्ति ख्याल ।टेर।

शीश मुकुट पीताम्बर शाला, उर वर बाहु विशाल ।१।
कर में बंशी सोहे सुन्दर, गल में है वनमाल ।२।
गोकुल माहि सखियां संग में, करते नाना ख्याल ।३।
कुञ्ज वृन्दावन में खेलत श्यामा, संग सखे वृज बाल ।४।
'रामप्रकाश' की अरजी सुनके, आय करे प्रतिपाल ।५।

भजन विकाश (३५) राग कल्याण पद संगीत ।

भजोरे मना ! शिव शंकर सुख धाम ।
शिव शंकर सुख धाम भज, न कर दे चित को विश्राम ।टेर।
हाथ में डमरू वर तिरशूला, मुण्डन माल सुहाम ।१।
अङ्ग विभूत तले बाघम्बर, जय जय जय अभिराम ।२।
वामाङ्ग शिवा रू वृषभवाहन, भुक्षण भुजङ्ग विहाम ।३।
शीश जटा गङ्गा की धारा, चन्द्र भाल विराम ।४।
'रामप्रकाश' नमो शिव तोकूं, शिव शिव भज श्रीराम ।५।

भजन विकाश (३६) राग कल्याण संगीत पद ।

भजो रे मना ! गोविन्द दीन दयाल ।
गोविन्द दीन दयाल कृपानिधि, गोविन्द परम कृपाल ।टेर।
राधा रमण मुकुन्द विहारी, सीताराम रसाल ।१।
दुष्ट निकन्दन भक्त सुरञ्जन, नरहरि कृष्ण विशाल ।२।

माधव मोहन स्वामी गिरिधर,ख्याली सु राम ख्याल ।३।
'रामप्रकाश' को नमो नित प्रभु को, काटत जगत जंजाल ।४।

भजन विकाश (३७) राग कल्याण पद ।

करो रे मना ! सत संगत सुख धाम ।
सत संगत मन लाय के करिये,सो सतसंग सुख धाम ।टेर।
परम हरिजन ज्ञान बतावे, अमृत वाणी ठाम ।१।
निजानन्द सत रूप लखावे, खो त्रिताप कु काम ।२।
भव सागर से पार पठावे, केवट सन्त गुरू श्याम ।३।
कोटि तरे सत संगत करके, उँच रू नीच तमाम ।४।
'रामप्रकाश' करो निशि वासर,तज दोष जप श्रीराम ।५।

भजन विकाश (३८) राग छन्द भैरवी पद ।

ओम सोहं वर राम के, पद चार कहूँ भिन्न भिन्न है।टेर।
प्रथम अकार अग्नि को पाया,त्वम्पद फल वैराग्य तपाया ।
कहत रकार कर्म भस्माया, तृष्ठा रजोगुण श्याम के ।।
उचरत हृदय घन घन हैं ।।१।।
द्वितिय उकार भानू सम गावे,ततपद फल सत ज्ञान सुनावे।
भनत अकार प्रकाश लखावे, विष्णु सतोगुण नाम के ।
शुद्ध बुद्धि ज्ञान धन धन है ।।२।।

तृतीय मकार शशि सम जाना, असिपद फल भक्ति को पाना।
लखत मकार त्रिय ताप विलाना, शंकर तमो विश्राम के।
निज शंकर रूप मन मन है ॥३॥

अर्ध बिन्दु शान्ति गम्भीरा, सतपद फल मुक्ति निज सीरा।
'उत्तमराम' व्यापक सुख नीरा, निर्गुण ब्रह्म आराम के।
सत 'रामप्रकाश' घर बन है ॥४॥

भजन (३९) राग छन्द भैरवी पद।

निज राम नाम धुन लायके, सत पाया ब्रह्म अपारा ।टेर।
रंणकार की सब ही माया, घट घट रमता राम कहाया।
व्यापक विष्णु गया न आया, उर सोंहं साहम् गाय के।
निज अपना किया विचारा ।१। रूप नाम अक्षर गुणि लीजे।
चौगुण पांच मिलावा कीजे, दुगुणा कर वसु भाग सु दीजे।
जो शेष रहे सो पायके, सत तत्व करो निरधारा ।२।
भुषण हाटक मिश्री मिठिया, शास्त्र लोहा एक तमासा।
बासण भू अंश व्यापक भासा, त्यो द्वैत उपाधि ढाय के।
लखसच्चिदानन्द इकसारा ।३। 'अचलराम' ने राम सुणाया।
'उत्तमराम' ने सो गुण गाया, 'रामप्रकाश' चित्त चेतन ध्याया।
संत सतगुरु शरणे आय के, सब भ्रम अज्ञान विडारा ।४।

भजन (४०) राग छन्द भैरवी पद।

नित ज्ञानीज्ञान धुन लाय के, निज फकर फिकर नहिंधारा ।टेर।

राव रंक दोनों सम होई, दुर्जन सज्जन की दृष्टि खोई।
कर निन्दा झक मारो कोई, या महिमा करो बधाय के।
द्वंद दोनों दूर विडारा ।१। मैं मस्ताना गुरू का चेला।
गुरू शब्द संग बांध्या बेला, महा चतुर हूँ पूरण गेला।
जो तन से होता आयके, नहिं इच्छा रूप हमारा ।२।
चाहै जीवन रहे या मरना, हरि कथा रस सुनना करना।
जग माने ना माने डर ना, हाथी के पीछे जाय के।
ज्यों कूकर भुसे हजारा ।३। मन आवे ज्यों मूरख बकता।
रमझ ज्ञानी की कोई न लखता, गद्दहा लात मार कर थकता।
बिजली नभ चमकाय के, सत 'रामप्रकाश' उचारा ।४।

भजन (४१) राग झन्द भैरवी पद ।

धन फूल फकीरी पाय के, मैं फकर हुआ मस्ताना ।टेर।
गुरू गम सतसंग साधन भीना, भक्ति युक्ति का संगम कीना।
मार्ग शोधन संतन का लीना, सब जग से मोह हटाय के।
निज पाया केवल ज्ञाना ।१। गुरू गम सार शास्त्र की जानी।
दोष भेद का नाश निदानी, परम निजानंद मुक्ति ठानी।
सत महा उर वाक्यलाय के, निज एक यर्थार्थ जाना ।२।
पूर्व भाग पुरूषार्थ जागया, सतगुरू संग में मनवा लागया।
भ्रम कर्म संशय सब भागया, सत आतम दरशाय के।
कछु द्वैत रहा नहीं दाना ।३। 'उत्तमराम' गुरू दीना डंका।
सोई 'रामप्रकाश' निशंका, अपना आप सीधा नहीं बंका।
सत केवल पूर्ण थाय के, निज मस्ती में गलताना ।४।

भजन (४२) राग छन्द भैरवी पद ।

मन मगन भया गुणगाय के, दे मस्त फकर की फेरी ।टेर।
इडा पिंगला सुषुमण धारा,स्वासा संग में सुरति विचारा ।
गुरू का शब्द हृदय ला प्यारा,सब दुर्मति विकार नशायके ।
निज निर्गुण माला हेरी ।१।त्रिकूटी महल में ज्योतिजागी ।
दर्शन करके दुविधा भागी, रणंकार की चौकी लागी ।
सब घट में रही गरणाय के, दश बाजा अनुभव भेरी ।२।
सुरत शब्द पवना संग पूगा, सुन महल में सूरज ऊगा ।
कोटि भानु सम उज्वल मूंगा, सब देव बिराजे आय के ।
नहीं पाव पलक की देरी।३। 'रामप्रकाश' लख्या तत सोई ।
अजर अमर गुणराशी वोई, अपना आप और नहीं कोई ।
निज 'रामप्रकाश' लखाय के, सब मिट गई मेरी तेरी ।४।

भजन (४३) राग पद संगीत गाने का हरजस

नर भजले सिरजणहार, थोड़ी ऊमर में ।टेर।
बीतो स्वासा की नहिं कछु आशा, भूलो मत करतार ।१।
दम दम जावे फेर न आवे, नहीं जीना एक सूमार ।२।
मात पिता धन कुल बन्धु न्याती, सब ही रहसी लार ।३।
राम नाम धन साथी तेरा, तूं लोक परलोक सुधार ।४।
काया माया का नहीं भरोसा, क्षण में होवे छार ।५।
'रामप्रकाश' मुक्ति मन पावे, गुरू शरणे निस्तार ।६।

भजन (४४) राग पद संगीत गाने का

सब कथा सुणो मन लाय, मुगति पावो रे ।टेर।

एक जगह थिर आसन बैठो, सूधा मत चित लाय ।१।

पाँव पसार ऊँचा मन बैठो, गप शप दूर भगाय ।२।

बीड़ी-तमाखू व्यशन मिटावो, गुरू मुख सुगरा थाय ।३।

हरि कथा सत संग की महिमा, सुणलो प्रेम लगाय ।४।

साधन सार परमानन्द पावो, चौरासी टल जाय ।५।

'रामप्रकाश' कथामृत सुन्दर, सादर मो मन भाय ।६।

भजन (४५) राग पद सगीत गाने का लूहर हरजस

नर जीवन महीना चार, वरषे बादलियो ।टेर।

पूण्य का बादल सुख की बूँदो, वरसत आनन्द कार ।१।

जीवन स्वास शुक्रत का वायु, शीतल मंद गन्धदार ।२।

ज्ञान ध्यान हरि भक्ति जप तप, गुरू मुख खेत सुधार ।३।

बालापन तरूणापन बूढा, अंत मृत्यु सेज संवार ।४।

'रामप्रकाश' पक्के तब पूरा, जन्म मरण दुःख टार ।५।

भजन (४६) राग पद संगीत लूहर, हरजस

भज राम नाम निरधार, जीवड़ों तरसीरे ।टेर।

मोह बन्धन में भ्रमे भूलो, जनम मरण भव धार ।१।

माया काया तेरे संग न चाले, सब ही रहसी लार ।२।

कर्म धर्म तेरे साथी संगी, गुरू गम नाम विचार ।३।

म्हारी थारी मद लोभ पटक दे,सब कटे चौरासी मार ।४।

'रामप्रकाश' संत समझावे, तूँ अपनो पंथ सुधार ।५।

भजन (४६) राग पद संगीत लुहर पद ।

ले गुरू गम खोज विचार, मुक्ति पावेला ।टेर।
शुद्ध साधन संग श्रवण करले, मनन निदिध्यासन सा· ।१।
स्वासा के संग सुरत रोधले, निज शब्द सोंह उरधार ।२।
शम कर तन मन बाणी शुद्धकर,लख परमानन्द उदार ।३।
'रामप्रकाश' उलट घर देखो, निज का निज दिदार ।४।

भजन (४७) राग आशावरी ,टोडी, आशा पद ।

सा ो भाई ! मानव वपु मैं पाई ।
गुरू कृपा साधन की पंगत, मुक्त भया मन माई ।टेर।
कुटुम्ब समझ जिन मोह बांधिया,सो गये नर्क सिद्धाई ।
भेदवाद मत वैर बांधिया, सो गये मूल ठगाई ।१।
पक्ष पात कर वैर साधिया, तिन पाया फल भाई ।
अपयश निन्दा चुगली ठानी, सो सब भये पछुताई ।२।
जैसा कर्म तैसा फल पाया, मोह मुकुर की झांई ।
सात्विक रूप अनूप पुरुषोतम,जाणिया मुक्ति में जाई ।३।
खर की लात रू धूड़ उछाले, रवि के लागें नाई ।
अपनी करनी पार उतरनी, जाति पाति विसराई ।४।
मेहरम जाणिया तिन पद पाया,युक्ति भक्ति गम लाई ।
सगुंण रूप समझ्या कर डूबा, छल कपट चतुराई ।५।

हानि लाभ नहीं घटिया मोमे,ज्यों का त्यों थिरथाई ।
'रामप्रकाश' उतम पद गहिया, आवा गमन मिटाई ।६।

भजन (४८) राग अशावरी टोडी पद ।

साधो भाई ! कहता संत सचियारी ।
बिन साधन सुख मुक्ति नाहीं, बातों करो हजारी ।टेर।
साच कहू तो लड़ने आवे, झूँठे कर पतियारी ।
सतसंगत को रंग न लागो, भटक मरे दुखियारी ।१।
सतसंग करे सुणे कह बाणी, मति आचार भुलारी ।
नीति मर्यादा कछु ना समझे, बकता मन मुखयारी ।२।
मन आवे ज्युं बकता करता, व्यशनी भूत विकारी ।
रमझ समझ नहीं मन में धरता, उलटी लागे खारी ।३।
गुरू बेमुख मन वातों घड़ता, जावे नरक मंझारी ।
गुरू को नाम लजावे नुगरा, रीति कछु ना धारी ।४।
'रामप्रकाश' उपदेश सुनावे, रति लगे नहिं कारी ।
श्वान पूँछ सीधा नहीं होवे, कोटि उपाय विचारी ।५।

भजन (४९) राग आशावरी पद-प्रश्न

साधो भाई ! क्या तूँ रोल मचाता ।
ज्ञान न आवे बात बनावे, मन मुख भजन सुनाता ।टेर।
सृष्टि की उत्पति कहो कैसे? कारण कार्य क्या गाता ?
खोल सुनादे मानूँ ज्ञानी, मन में क्यों घबराता ।१।

जो आवे तो खोल सुनादे, नहिं तो क्यों पछुताता ।
गुरू सहिता चेला मूँडूँ, निर्भय ज्ञान बताता ।२।
साचे का मैं दास सदाई, झूँठा मन नहिं भाता ।
पाखण्डी का करूँ चूरमा, मूल सहित मिटवाता ।३।
परा पार की बातें करता, सुन शिखर घर माता ।
'रामप्रकाश' एक नहिं माने, साची कह दरशाता ।४।

भजन (५०) राग आशावरी पद-उत्तर

साधो भाई ! रोला भूल मिटाता ।
ज्ञान स्वरूप सदा बे अंगी, गुरू मुख से विगताता ।टेर।
सत सताते आदि पुरूष से, फुरणा महतत गाता ।
ता इच्छा अमात्र तुरियेगा, ताते तीन गुणाता ।१।
ताके मूल ओम भई उत्पति, त्रिगुण जाल बनाता ।
सतो ज्ञानेन्द्रिय देव अन्तःकरण, रजो कर्मेन्द्रिय ठाता ।२।
तमो सहिता पांचों तंत सो, पृकृति सो जग लाता ।
कारण दोय माया सतोगुण, मलिन अविद्या भाता ।३।
'उत्तमराम' सदा शुद्ध चेतन, व्यापक एक सुहाता ।
'रामप्रकाश' अद्वैत अनामी, नहिं आता नहि जाता ।४।

भजन (५१) राग आशावरी पद-प्रश्न

साधो भाई ! खोल भ्रम का ताला ।
संशय मेट के भेंट परमानन्द, जो हो गुरू का बाला ।टेर।

ईश्वर जीव माया ब्रह्म इनमें, कौन अनादि ख्याला ?
कौन अनन्त सदा अविनाशी ? अजर अमर निरवाला ।१।
कौन जपे जप माला कैसी, कैसे रहे मतवाला ?
बिन आसन हो बैठा अधर में, कैसा जपने वाला ।२।
निर्गुण का अवतार धार के, कैसे सगुण भाला ?
कर्म बिना आया किस हेतु? जावेगा कहाँ आला ।३।
उत्तर बिना भ्रम नहिं टूटे, छोड़ पाखण्ड का जाला ?
'रामप्रकाश' ज्ञानी तब मानू, जो काटे जँजाला ।४।

भजन (५२) राग आशावरी पद-उतर

साधो भाई ! खुल्या भ्रम का ताला ।
शब्द कुंची गुरू गमकर लागी, गुरू मुख भया मतवाला ।टेर।
ईश्वर जीव माया ब्रह्म चारों, सदा अनादि ख्याला ।
भेद सम्बन्ध बिना ब्रह्म इनमें, सदा अनन्त निर वाला ।१।
स्वासा मणिया हरदम गणिया, उनमुन धुन मतवाला ।
आसन बिना अधर नितं निर्गुण, आप ही जपने वाला ।२।
निराशक्त ज्ञानी शुभ कर्मन, निर्गुण सगुण भाला ।
नियम प्रकृति साक्षी उज्वल, धर्म रक्षा हित आला ।३।
सतगुरू 'उतमराम' ब्रह्मज्ञानी, काटचा भेद जंजाला ।
'रामप्रकाश' ज्ञानी गम निर्मल, जीवन मुक्त अकाला ।४।

भजन (५३) राग आशावरी पद-प्रश्न

साधो भाई ! कहो आदि स्थाना ?
गुरू बिना गम नाहीं आवे, मिटे न भ्रम गुमाना ।टेर।
सात द्वीप के खण्ड बखानो, कितने है ? विगताना ।
समुन्द्र, नदि, पर्वत प्रस्तारा, कर गिणती परमाना ।१।
कैसा योगी युक्ता-मुक्ता, अपना भेद बताना ।
कहा नाम क्या रूप तुम्हारा ? क्या परिणाम सुहाना ।२।
जो ज्ञानी तो भेद बतादो, नहिं तो धर दो बाना ।
सांग उतार धरूँ सांगी का, साज बाज रख जाना ।३।
जो बोले तो बोल न देऊँ, खोऊँ मूल निशाना ।
'रामप्रकाश' निर्भय दे डंका, गुरू मुख से समझाना ।४।

भजन (५४) राग आशावरी पद-उत्तर

साधो भाई ! मैं आदि ब्रह्म निरवाना ।
गुरू मय चेला सदा अकेला, नहि आना नहि जाना ।टेर।
नौ पैंतीसा दोय मिला कर, सात द्वीप खण्ड माना ।
नदि पर्वत खण्ड होय छयालिस, समुन्द्र सात परमाना ।१।
योग न योगी युक्ता-मुक्ता, सदा अभेद सुहाना ।
नाम रूप बिन चेतन सोई, निरन्तर एक महाना ।२।
ज्ञान ध्यान का खोज उडाया, कैसा बूझे स्याना ।
सदा निशंका मेरा डंका, बाजत डंका ज्ञाना ।३।

'उत्तमरामप्रकाश' अनामी, मूल न तूल निशाना ।
'रामप्रकाश' अणघड़ गुरू ज्ञानी, अपने में गलताना ।४।

भजन (५५) राग आशावरी पद संगीत ।

आतम रस सदा एक इकसारा ।
व्यापक वाद कहा नहिं जावे, जान अजान ना धारा ।टेर।
अगम निगम की गम सब थाकी, नहिं बेगम विस्तारा ।
नाम रूप रंग एक न दरसे, सदा अपेची न्यारा ।१।
न्यारा भेला वाणी थाकी, नहिं चारों का चारा ।
अटल अबाणी सबका जाणी, निज साक्षी शुद्ध प्यारा ।२।
सदा अजात अनामी एकरस, नहि द्वैत विस्तारा ।
जीव ईश माया ब्रह्म नाहि, नहिं माया प्रस्तारा ।३।
'उत्तमराम प्रकाश' आप ही, हूँ तूँ शब्द विडारा ।
'रामप्रकाश' है स्वयं प्रकाशी, शुद्ध अगोचर वारा ।४।

भजन (५६) राग आसावरी, टोडी पद

ब्रह्म निज शुद्ध अद्वैत मतवारा ।
परम सदानन्द चेतन पूर्ण, व्यापक एक अपारा ।टेर।
माया नाम रूप सब नासी, नहिं जीव का चारा ।
ईश्वर ब्रह्म षट् चेतन सब ही, एक न दर्शन वारा ।१।
नहिं अप्रमा भ्रम रू भ्रान्ति, अयथार्थ ना धारा ।
नहिं अध्यास द्वंद का दर्शन, वाणी नाम विडारा ।२।

ख्याली नहिं खलक से न्यारा, खिलका आप पसारा ।
सदा अलोगत अविगत महिमा,कहण सुनण सब हारा ।३।
ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप परमानन्द, आतमराम अपारा ।
'रामप्रकाश' अद्वैत निरञ्जन,ज्यों का त्यों निरधारा ।४।

भजन (५७) राग आशावरी पद संगीत का

साधो भाई ! सही बात सुन प्यारा ।
पिण्ड में जीव ब्रह्मण्ड में ब्रह्म है, निरंजन माया पारा ।टेर।
मन हृदय में पवन नाभि में, हंस शिषर धुन धारा ।
अनहद नाद गगन में गरजे, माया में काल विचारा ।१।
मैं शुद्ध ब्रह्म सदा सत चेतन, नहिं अज्ञान उजारा ।
मेरा खेल विवृत हो भासे, अनावृत सुखवारा ।२।
सदा अजात अवर्ण कुल नाहीं, भ्रम भ्रांति मय सारा ।
नाम रूप चौरासी नाहीं, जीव मान भ्रम चारा ।३।
पृकृति प्रलय यम मर्यादा, मै तूं मांहि भ्रमारा ।
मोक्ष रूप अनामी अनघड़, दृढ अपरोक्ष सुधारा ।४।
'उत्तमराम' गुरु कह उत्तम, ज्ञान वृति विस्तारा ।
'रामप्रकाश' गुरु मय पूर्ण, सदा अद्वैत मतवारा ।५।

भजन (५८) राग आशावरी पद-प्रश्न

साधो भाई ! सुन प्रशन सुज्ञाना ।
उत्तर दे मन सम्मुख गुरु के,निश्चय धार ठिकाना ।टेर।

तुम हो कौन कहाँ से आये? कौन स्वरुप सुजाना ?
क्या कारण बन्धन में बंधिया? जड़ चेतन क्या माना ।१।
युक्त रूप या मुक्तरूप हो, कर्म कितने है जाना ।
कौन कर्म की मुक्ति युक्ति? कौन भुक्त मुक्ताना ।२।
लख चौरासी ते ब्रह्महैं न्यारा, तो व्यापक किम लाना ।
जो व्यापक तो नहिं चौरासी, यह भरम भेद मिटाना ।३।
'रामप्रकाश' का निर्भय डंका, जो ज्ञानी दे ज्ञाना ।
संगत सार मिटे मन शंका, संगत में फिर आना ।४।

भजन (५९) राग आशावरी पद-उत्तर

साधो भाई ! सुनो उत्तर सुज्ञाना ।
उत्तर ज्ञान ज्ञानी गुरु भाखे, काटे भ्रम अज्ञाना ।टेर।
मैं हो जीव बेगम से आया, चेतन स्वरूप सुजाना ।
इच्छा कारण बन्धन बाधा, माया जड़ कर माना ।१।
युक्त माया संग मुक्त ज्ञानते, कर्म त्रिविधि गुण जाना ।
संचित कटे मिटे क्रियमाणा, ज्ञान युक्ति युत लाना ।२।
प्रारब्ध भोग अनाशक्त मुक्ति, यह निश्चय निरवाना ।
परमार्थ में नहीं चौरासी, परम पुरुष निरमाना ।३।
चेतन एक सकल घट पूर्ण, नभ निर्लेप निधाना ।
'रामप्रकाश' गुरु गम जाने, दृष्टा आप सधाना ।४।

भजन (६१) राग आशावरी पद

साधो भाई ! ज्ञान अखाड़ा मेरा ।
गुरू गम हस्ती मारे कुस्ती, काम न कायर केरा ।टेर।
साधन सार मार मद आशा, मस्ता धुन में डेरा ।
हरदम रस्ता नित ही सस्ता, अपने आप को हेरा ।१।
रमझ समझ साधन की युक्ति, काटना यम का घेरा ।
चौरासी का टूटा लेखा, नहीं वहाँ साँझ सवेरा ।२।
द्वैत भ्रम का मूल मिटाना, एक गुरू मय चेरा ।
अपना शुद्ध सनातन चेतन, दृष्टा घन घनेरा ।३।
दृश्य दृष्टा नाम मात्र है, ख्याल त्रिपूटी सेरा ।
अजर अमर अविनाशी सोई, नहिं है मेरा तेरा ।४।
पूर्व भाग से पाया सतगुरू, 'उत्तमराम' गुरू नेरा ।
'रामप्रकाश' युक्ति मय मुक्ति, प्रपंच सभी बिखेरा ।५।

भजन (६२) राग आशावरी पद

साधो भाई ! भूला जगत असारा ।
मूर्ख जीव मोद मानते, लखे न साँझ सवारा ।टेर।
मृग कस्तूरी नहिं सबूरी, बिन पारख तकरारा ।
सूआ भूल हूआ बंध माही, लख्या नहि ततसारा ।१।
मर्कट मोह बन्ध कर अपने, माया करत पसारा ।
मकरी जाल पसारे मुखते, जाल न होवे न्यारा ।२।

यावविध जीव भूला शुद्ध अनुभव, अपना रूप उजारा।
वाणी गावे मर्म न पावे, भूला आप अधारा।३।
'उत्तमराम' गुरू महरम दीन्हा, कर विवेक उरधारा।
'रामप्रकाश' समर्थ की कृपा, तुरंत हुआ भव पारा।४।

भजन (६३) राग आशांवरी पद

साधो भाई ! निर्भय ज्ञान निशंका।
निज बिना सत और न कोई, शुद्ध अद्वैत अशंका।टेर।

देश काल परिच्छेद वस्तु बिन, निर्गुण लागा डंका।
शुन धुन सोवन शिखर से आगे, एक अखण्डी बंका।१।

गगन मण्डल का नाम निशान न,नहीं राव नहीं रंका।
अगम निगम वाणी नहिं खाणी, लूटी भव की लंका।२।

बेगम की गम गई थकानी, मिटचा कर्म का अंका।
नाम रूप का खोज विलाया, महतत्व माया पंका।३।

कहण अकहण सुणण नहीं गैबी, रही न कोई शंका।
'उत्तमराम प्रकाश' अनामी, हल्वा भार न टंका।४।

भजन (६४) राग आशावरी पद टोडी।

साधो भाई ! ऐसी रहन हमारी।
गुरू गम ज्ञान साधन की कृपा, जानत कोई विचारी।टेर।

घटबिन घाट औघट बिन करणी,माया गति से न्यारी।
आदि अंत मध्य सब से पहले, एक अमाप अपारी।१।

सदा अलोगत अविगत सोई, त्रिगुण परे कर धारी।
अव्यय शुद्ध अद्वैत अनादि, अटल अजाप अखारी।२।

अचल अनन्त अखूट अजीता, परम अगोचर वारी।
षट्चक्र नहीं सोवन शिषर बिन,नहिं कोई श्वास उतारी।

नामरूप नहिं गगन मण्डल है, अपना आप निहारी।
'उत्तमराम प्रकाश' एक सो, बेहद ब्रह्म उचारी।४।

भजन (६५) राग आशावरी पद टोडी।

साधो भाई! मुक्ति स्वरूप चित लाया।
मोह गति मन मैं नहीं माही, शब्द अतीत समाया।टेर।

१-मुक्ति सालोक्य देव लोक है, वैकुण्ठ लोक सुहाया।
इष्ट देव के लोक वास में, अपना वास बसाया।१।

२-मुक्ति सामीप्य दास-सखा ज्यों, सेवक सेव सजाया।
इष्टदेव के पास वास कर, मुक्ति मन द्रढाया।२।

३-मुक्ति सामीप्य पुत्र-भाईज्यों, विधि गतिरूप लखाया।
इष्टदेव के आत्मीय रूप में, मुक्ति हेतु बताया।३।

४-मुक्ति सायुज्य ध्रवलोक में, चतुर्भुज शोभा माया।
इष्ट देव के रूप एक रस, सभा सौम्य ललचाया।४।

५-मुक्ति सार्ष्टिता दोय विधि है, जीवन-विदेह कह गाया।
जीवन ज्ञान मय मोद मान कर, ममता मोह विलाया।५

विसंवादाऽभाव ज्ञान की रक्षा,दुःख निवृति थाया।
परमानन्द की प्राप्ति विधि से, तप का तेज फलपाया।६।
निज मुक्ति सतगुरु गम पाई, भाव अभाव अमाया।
'उतमरामप्रकाश' अगोचर, अद्वय अमाप अथाया।७।

भजन (६६) राग आशावरी पद टोडी।

साधो भाई ! क्या मुक्ति को गावे।
मोह गति बिन मोक्ष न मुक्ति, ज्ञान गुरू गम पावे।टेर।
धोखे मुक्ति बिन युक्ति से, बिन गुरू नाहि लखावे।
जो मुठी में मुक्ति माने, उलझे देखे दावे।१।
शब्द रूप या भाव से, कैसा रूप बतावे।
मुक्ति नाम जाहि को कहिये, क्या वो दृष्टि आवे।२।
'उत्तमराम' उतम गति पूरी, समझ रमझ समझावे।
'रामप्रकाश' मुक्ति मय आतम, नहीं आवे नहीं जावे।३।

भजन (६७) राग आशावरी, टोडी प्रश्न-उतर पद।

साधो भाई ! दोय गति संत जाना।
ज्ञानी जावे सो आवे नाहि, एक धरे देह नाना।टेर।
कई संतो ने वाणी भाखी, ताका करूँ बखाना।
निर्गुण से सगुण हो आवे, भक्त न होवे आना।१।
जीवों हेतु वपु धरि आवे, नाना धारे बाना।
उतर कहूँ सुन हो जिज्ञासु, बुद्धि कर ठोड़ ठिकाना।२।

संत गति है तीन प्रकार की, जानत होय कल्याना ।
वर वरियान वरिष्ठ को जानो, विवरण परख विज्ञाना ।३।
तीन भूमिक पावे जिज्ञासू, सो भक्ति पथ गाना ।
चौथी भूमिका वर पद ज्ञानी, समझे संत सुजाना ।४।
वर अवतार धरे कई वारा, कर्म भोग परमाना ।
निमित पाय वरियान पधारे, भक्तों हेतु निदाना ।५।
पंचम भूमिका सो वरियाना, वरिष्ठ सष्ठमी माना ।
वरिष्ठ मुक्ति आप समावे, शास्त्र संत विधाना ।६।
केवल रूप समावे अपने, मुक्त रूप निरवाना ।
वरिष्ठाति वरिष्ठ तुरिय सप्तमी, चेतन पुरुष पुराना ।७।
'उत्तमराम' गुरु शरण आय के, सुधरे जीव बेगाना ।
'रामप्रकाश' द्रढ निष्ठा पूर्ण, जीवन्मुक्त अबाना ।८।

भजन (९८) प्रश्न ? राग आसा पद ।

अब तुम ! कहा करत हो भाया ?
कहाँ से आया चल करके अब, कहाँ को जाय समाया टेर
कैसा रूप तुम्हारा आदू? कैसा नाम बताया?
किस से बन्धन किस से मुक्ति? आप स्वरूप कहलाया ।१।
जो दीखे सो क्या है प्यारा? कैसा जाल बिछाया?
कहाँ तक हद है इसी जाल का? दौड़ कहाँ तक धाया ।२।
साधन मुख्य बतावो कोई? मूल साधन का गाया?
जड़ चेतन का भेद लखावो? मूल बात दरसाया ।३।

जो आवे तो कह दरसावो, रामप्रकाश परसाया ।
नहिं आवे तो सौगंध गुरू की, आगे मत बढ छाया ।४।

भजन (६९) उतर-राग आसा पद

अब हम ! गुरू गम रत हों भाया ।
परम धाम से मैं ही आया, निज पद माहि समाया ।टेर।
सदा अरूप शूक्ष्म हो रहता, नाम अनाम सुहाया ।
बन्धन अज्ञान वाहू ते मुक्ति,सत चित स्वरूप उलाया ।१।
द्रष्टी में द्रश्य सोई माया, भ्रम जाज कहवाया ।
त्रिगुण रूप गो गोचर सोई, ताकी दोंड़ मन-माया ।२।
साधन मूल सतसंगत कहिये, गुरू गम खोज लगाया ।
चेतन ब्रह्म ईश्वर जीव एको, जड़ माया दरसाया ।३।
सत गुरू गंध अनन्त गुना है, तामे द्रश्य विलाया ।
'रामप्रकाश' गुरू मय चेला, एक अद्वैत अमाया ।४।

भजन (७०) प्रश्न ? राग आसावरी पद

साधो भाई ! प्रश्न व्यवहार लखाई ।
समझ यथार्थ उत्तर दीजो, जो ज्ञानी लख गाई ।टेर।
जाकर के फिर आती नाही, सो अवस्था काई ।
आकर के फिर जाती नाही, कहो अवस्था भाई ।१।
मातृ पक्ष के भाई केते, जग में धूम मचाई ।
पितृ पक्ष के भाई कहदो, गृहस्थी कुटुम्बी पाई ।२।

मीठा जहर जगन में क्या है? कहीये सो दरशाई।
घटे घटे वो नित घटे क्या? बढे नित्य क्यां आई। ।३।
'रामप्रकाश' ज्ञानी का चेला, कहता शंख बजाई।
गुरू समेता चैला मूंडं, नहीं तो बता गोसांई ।४।

भजत (७१) उत्तर! राग आसावरी पद

साधो भाई! उत्तर व्यवहार सदाई।
बिना ज्ञान नहीं ज्ञानी होता, समझ यथार्थ दाई ।टेर।
बाल जवानी आती नाहि, गई गई सो गाई।
वृध्द अवस्था जाती नाही, आई आई सो आई ।१।
मातृ मामा मौसी का सुत, मात अंश त्रय लाई।
पितृ ताऊ भूआ बाप सुत, चार कहत यह भाई ।२।
मीठा जहर विषय पंच पूरा, युग युग मार दिलाई।
घटे घटे नित आयु प्राणी, बढे तृष्णा पतियाई ।३।
'रामप्रकाश' उत्तम का चेंला, नटे सदा न कटाई।
सतगुरू सदा व्यवहार सुधारे, सोई परम पद पाई ।४।

भजन (७२) राग छन्द भैरवी पद पारवा

है मुश्किल काम तमाम रे, है करणी से कहणी सस्ती ।टेर।

वीणा, सतार, जल, तंरग अपारा,
ढोलक, ढोल, डफ, चंग विचारा,

बंशी, बाजा, सहनाई सुधारा,
ले सकते सब दे दाम रे, मुश्किल है गायन गस्ती ।१।

ढाल, बन्दूक, तीर, हथ गोला
शस्त्र विविध युध्द टैंक अमोला
भाला, बर्छी, बहु धनुष बिचोला,
ले सकते सब ही काम रे, मुश्किल है वीरता हस्ती ।२।

छन्द, ज्योतिष, वैद्यक, विज्ञाना
गणित, वेद, व्याकरण, पुराना
दर्शन, वेदांत, भाषा विधि नाना,
ले सकते शास्त्र बबु नाम रे, है मुश्किल विद्वता कस्ती ।३।

माला, तिलक, भेष, पन्थ बाना,
मठ–मन्दिर रचना कथ गाना,
असन, वसन, साहू मंगताना,
बन सकते फकीर अलाम रे, है मुश्किल फकीरी मस्ती ।४।

'उत्तमराम' खर्च बहु खाना ।
'रामप्रकाश' है पलटा जमाना ।
आदत में सब है बैगाना ।
बन सकते गरीब बदनाम रे, है मुश्किल साहू बस्ती ।५।

भजन (७३) राग आशावादी पद

साधो भाई ! साधु नाम धराया ।
साधन क्रिया नहीं साधना, भेष पहन शरमाया ।टेर।

गुरू मर्यादा आसन नीति, तन साधन कहलाया ।
मन निर्बंध विचार साधना, मन को मार मनाया ।१।
वाणी संयम शुद्ध उच्चारण, शब्द अर्थ समझाया ।
तन मन वाणी क्रिया साधना, सो नहीं ध्यान लगाया ।२।
कर्म साधना भक्ति साधना, ज्ञान साधन नहि लाया ।
विद्या शील धर्म तप साधन, ता बिन जीवन गमाया ।३।
भगवां पहन भेंठ ले पूजा, मूँडे शिष्य मस्ताया ।
मंगतापण में राजी रहता, गृहस्थी भृष्ट भ्रमाया ।४।
बाहर जावे तब भगवां पहने, घर में आ उतराया ।
खेती कर व्यापार चलावे, घर नारी घुरकाया ।५।
दोय नाव पर करे सवारी, यह डूबण का साया ।
'रामप्रकाश' सुमिर गुरू समर्थ, साधु नाम सवाया ।६।

भजन (७४) राग आसावरी पद

साधो भाई ! ऐसे बहु है भाया ।
साधु साधु सब एक समझ के, वृथा जग भ्रमाया ।टेर।
दिन को गुफा में जाय विराजे, रात पड़े घर आया ।
त्याग दिखावे जग भ्रमावे, गांजा भांग छकाया ।१।
वातों ज्ञान समता की करता, मन में भेद भराया ।
भूत भ्रम का भागा नाहीं, ज्ञान कैसा उर लाया ।२।

सिर पर जट्टा बाबा बट्टा, अंग उधार रहाया ।
जब चाहै तब दूर पटक के, जग का सांग बनाया ।३।
देखा कईक खेला जग में, कहूँ तों क्रोध कमाया ।
'रामप्रकाश' मन मान अचम्भा,कथ के भजन सुनाया ।४।

भजन (७५) राग आशावरी पद

साधो भाई ! साधु नाम लजाया ।
गौरा बलद भेष सब रंगिया, साधन हीन अजाया ।टेर।
जोग विजोगा सदा निजोगा, खाया माल पराया
थारी म्हारी में पंच पच सारा, जीवन वृथा गमाया ।१।
चन्दा चिट्ठा मांगरण जाता, माँगत लाग लगाया ।
लेवरण खातिर चेला चांटी, नाहि ज्ञान सुनाया ।२।
फूट लूट कर मोटा बनता, हठ अपना ठहराया ।
भक्ति ज्ञान साधन नहीं देख्या, भेष पहन भ्रमाया ।३।
जग में देखा कईक भूला, जीवन को अलुझाया ।
'रामप्रकाश' कहूँ मान अचम्भा, मन को कह समझाया ।४।

भजन (७६) राग छन्द भैरवी पद

सब प्रपंच में अलुझाय के, क्या गृहस्थी भेष बनावे ।टेर।
घरबारी हो भगवाँ धारे, माला गल कर कमंडल सारे ।
कफनी धोती गेरूआँ वारे,सब करणी को छिटकायके ।
उभय लोक भृष्ट हो जावे ।१।

आप ब्रह्ममें मुख से कहता, दुःख में रोता घर में रहता।
चेला मूँड़ धन लावे लहता, ले बेटा-बेटी परणाय के।
फिर साधु सांग लजावे ।२।

घर नारी को भगवां देवे, पूजा भेंट प्रतिष्ठा लेवे।
त्यागी के बराबर रेवे, नहीं जाने अपने आय के।
सब शुभ कर्म दूर हटावे ।३।

'रामप्रकाश' राम रत रहत्ता, साची बात सदाई कहता।
संकट भांति प्रपंच न सहता, शुद्ध सीधी चाल चलाय के।
निज मुक्ति माहि समावे ।४।

भजन (७७) राग छन्द भैरवी पद

क्या गजब समय की चाल है, ले भगवां गृहस्थी हाले ।टेर
बिन सामग्री राजा होता, जीवन मांही खावे गोता।
बिना आचार विचार बिगोता, नहीं साधन ज्ञान संभाल है।
विषयों में मस्ता चाले ।१।

नामधारी जो लखपति होवे, क्या पहने रंक क्या वो धोवे।
लीर चीर तन तप मे खोवे, यों समझ गृहस्थी ख्याल है।
क्यों भगवां तन पर माले ।२।

तार बन्दी पर भगवें लटके, घर नारी का लहंगा अटके।
वहीं पर चीर रंगीले खटके, सब टींगगर रोले राल है।
तब नारी टुकड़ा घाले ।३।

घर में आला तामे गीता, शास्त्र वेदांत अनेकों जीता।
तापर पड़िया लहंगा रीता, क्यार हरणी तरणी मिसाल है।
फिर होड विरक्त की साले ।४।

परम हंस बन बाहिर पुजावे, घर आवे तब ज्ञान भुलावे।
ब्रह्म ज्ञान में हौठ हलावे, सब युक्ति रीत बिन काल है।
अंत मांहि दुःख को पाले ।५।

'रामप्रकाश' गुरू पद रहता, साची बात निर्भय से कहता।
पाखण्ड मूल रंच नाहि सहता, सब माया विचित्र विशाल है।
कोई ईश्वर कृपा टाले ।६।

भजन (७८) राग भैरवी छन्द

सुन साची कहूँ दरसाय के,क्यों गृहस्थी होड हलावे ।टेर।

गृहस्थी जनक कबीरा होया, और अनेकों ऐसा जोया।
ताकी रहणी करणी ढोया, वो कर्म उपासन लाय के।
निज निष्ठा ज्ञान द्रढावे ।१।

आज गृहस्थी बनकर साधू, भगवांधारी बने असाधू।
गुरू मर्यादा रंच न बाधू, नहीं संत सेवा मन भाय के।
विरक्त की होड चलावे ।२।

जो अपने को साधु भाखो, नारी को माता ज्यों राखो।
कर्म उपासन कर्त्ता लाखों, निज निष्ठा चित में लाय के।
लो ज्ञान आनन्द सुखपावे ।३।

'रामप्रकाश' मुक्ति से नीका, बिन युक्ति वैरागी फीका।
गृहस्थी साधु कूटे लीका, कोई मानो विवेक लगाय के।
बिन युक्ति मुक्ति न पावे ।४।

भजन (७९) राग छन्द भैरवी पद

क्या भगवां भेष बनाय के, गृहस्थी को मुक्ति पावे ।टेर।
कामड़िया ज्यों गा कुरलावे, भगवां पहन के भेष लजावे।
बात करे ब्रह्म बने बनावे वह होड करे भरमाय के।
संत चोखा सांग बनावे ।१।
बाहर सिद्ध ज्ञानी कहलावे, पूजा प्रतिष्ठा बहुती पावे।
फिर कर घर में जब ही आवे, घर नारी हुक्म मनाय के।
महा सेवा साज सजावे ।२।
रंग भगवें से मुक्ति होगी, गधा को ओढावे जोगी।
पद पावे फिर सस्ता रोगी, क्यों होड में हाड गलाय के।
विरक्त की शकल जमावे ।३।
'रामप्रकाश' गुरू गम कहता, बिना कहे कोई नहीं रहता।
ज्ञानी जन पद मुक्ति लहता, नहीं माला भेष सजाय के।
निर्भय पद विरला पावे ।४।

भजन (८०) राग छन्द भैरवी

क्या गृहस्थी भेष बनाय के, पथ दोंनो पार पठावे ।टेर।
कपड़ा रंग कर होया राता, कर्म धर्म से तोड़चा नाता।
नारि सुत का ले लंबा खाता, संग योग भोग को पायके।
दो नाव सवार कहावे ।१।

कपड़ा रंग कर मुक्ति न पावे, बाधा यमपुर ऐसा जावे।
नाम धारी साधु दरसावे, ना इत के उत के गाय के।
ग्रध बिच में गोता खावे ।२।

मुंख से ज्ञान ब्रह्म को कहता, लहँगा सारी भगवाँ रहता।
शास्त्र पर घर वस्त्र सहता, क्या युक्ति को संवराय के।
वो कैसे मुक्त समावे ।३।

'रामप्रकाश' सतगुरू के शरना, साची कहते कैसी जरना।
गुरू मुख ज्ञानी जीवत मरना, गृही ज्ञान ध्यान विसराय के।
सुत एवरणा में गल जावे ।४।

भजन (८१) राग छन्द भैरवी पद

ले भेष गृहस्थी ठाय के, कर करणी से पद पाता ।टेर।
गृहस्थी ज्ञाना भैंस स्नाना, गृहस्थी बाना हस्ति न्हाना।
ज्ञान ध्यान का थोथा ठाना, ले माला तिलक बनाय के।
रंग कपड़ा भेष बनाता ।१।

गृहस्थी होय के भेष संवारे, कर चेला पद पूजा सारे।
प्रतिष्ठा के भूखे भारे, चित लालच लोभ लगाय के,।
मन नाना चाह लगाता ।२।

लापर चापर करता भारी, बोद्ध सभा बिच बोल न धारी
निश्चय ज्ञान न रंच लिगारी, नित बातों में भरमाय के।
कर युक्ति बहुत लगाता ।३।

'रामप्रकाश' साची कह जरता, ज्ञानी जनना क्रोध जु करता।
साची कहते संत न डरता, निज साची कहे बजाय के।
मन मानता मौद बढाता ।४।

भजन (८२) राग आशावरी पद

अपने आप में, नहिं मेरा नहीं तेरा।
परम अद्वैत अनामी पूर्ण, ब्रह्मानन्द अखेरा ।टेर।

त्रिकूटी भ्रकुंटी भँवर गुफा पर, नहिं अनहद का घेरा।
गगन मण्डल ना सोनन शिवर पर, नहिं दशवाँ का डेरा ।१।

बेगम की गम उपर बाजे, ज्ञान नगारा मेरा।
आप ही सुनता आप ही घुरता, आप बनाय बिखेरा ।२।

ओर छोर का नहीं मसाला, त्रिगुण मूल उखेरा।
तन मन माया कारज कारण, नहीं देवों का फेरा ।३।

'उतमरामप्रकाश' गुरू शिष्य, नहीं द्वैत का केरा।
सार अबाणी अनव्य चेतन, लखता भखता सेरा ।४।

भजन (८३) राग आशावरी पद

ऐसा हम ! सृष्टि खेल रचाया।
हम से परे न पहले कोई, नहीं ओम की माया ।टेर।

अकार उकार मकार ते त्रिगुण, स्थूल वैराट उपाया।
अर्ध बिन्दु साक्षी हो रहिया, द्रष्टा अविगत राया ।१।

त्वंपद ततपद सोई असीपद, तुरिया सोहं ठाया।
कारण-कारज हम ही सारा, और उपाधि ढाया।२।
अध्यस्त आप आप अधिष्ठाना, द्रष्टि सृष्टि लाया।
भूषण सोना, शस्त्र लोहा, मिश्री खिलौना खाया।३।
सीपी में भोड़ल ज्यों कागज, समझ सुजान सवाया।
मेंहन्दी में रंग ताने पेटे, वस्त्र सूत समझाया।४।
'उत्तमरामप्रकाश' अद्वैत सो, स्वयं प्रकाश प्रकाशा।
सतगुरू पूर्ण ब्रह्म अनामी, अनव्य अखण्ड अमाया।५।

भजन (८४) श्री सत गुरूजी का उतर-राग आशावरी

सुन शिष्य ! साची भक्ति धारो।
श्रद्धा प्रेम विचार हरिमें, गुरू सनमुख सचियारो।टेर।
सतसंग करो गुरूमुख हाजर, निर्गुण नाम उचारो।
भव का भय जीव गति लागे, सुमति ज्ञान विचारो।१।
गुरू कि सेन समझ घट भीतर, पोपट बंध विडारो।
प्रमेय गत प्रमाण विपर्यय, शंशय दूर निवारो।२।
मन की ममता आसा मेटो, कर्तव्य करो उजारो।
सतसंग गंगा न्हाय निर्मला, ताप पाप दुःख तारो।३।
दसौ दोष व्यसन सब त्यागो, पुरूषार्थ मुख सारो।
गुरू कृपा मुक्ति पद पावो, कर निश्चय निरधारो।४।
गुरू भक्ति संत साधन संगा, निर्मल स्वभाव सुधारो।
'रामप्रकाश' प्रगट कहु धारा, जीव ब्रह्म इक सारो।५।

भजन विकाश (७९) राग नट कल्याण आरती पद

आरती! सनातन सन्त की कीजे, जांके वचन सुधारस पीजे टेर
सन्त गुरू परब्रह्म सदाई, यामे रंच भेद नहिं काई ।१।
ज्ञान सुनाया भ्रम भगाया, निज स्वरूप अचल दर्शाया ।२।
सतसंग खोली अनुभव बोली, नाना वचन सिंधूवत छोली ।३।
जीव जगाये बन्ध कटाये, भव सागर भव फन्द मिटाये ।४।
'रामप्रकाश' नमो सन्तन को, सत्य लखाया ब्रह्मसत घनको ।५।

भजन विकाश (८०) राग लावणी पद

सत चाल सुहावन धारण करना, मानव धर्म सुहाता है ।
सत्य आचार विचार धार मन, मानव धर्म कहाता है ।टेर।
त्याग नशे कुकर्म कुसंगत, व्यर्थ हानि करवाता है ।
दारू मांस तमाखू चोरी, त्याग सर्व दुःख दाता है ।१।
जूवा वेंश्या हिंसा तज सारे, तृष्णा चिन्ता तज नाता है ।
निन्द्या चुगली चपलता त्यागो, दुंव्यशनों से दुःख पाता है ।२।
तन धन मान हानी हो इन संग, त्याग व्यशन सब छाता है
शील विचार शंतोष रू सतसंग, धारण कर मन भाता है ।३।
व्यर्थ खर्च तज मान बड़ाई, सूधा जीवन गाता है ।
लोक प्रलोक बने हित दायक, यह रामप्रकात्र ! समझाता है ।४।

भजन (८५) राग नट कल्याण आरती

आरती! श्रीराम गगवाना, सकल गुणन युत कृपा निधाना ।टेर।
कर में बाण धनुष विराजे, पीताम्बर दुपट्टा अंग साजे ।१।
अनुज जानकी संग शुभ साजे, नाम लेत सकल भय भाजे ।२।
वीर बजरंग भरतसेवा धारी, है शत्रुधन लक्षमण सुखकारी।३।
'रामप्रकाश' नमो श्री रामा, भक्ति दो उर में कर धामा ।४।

भजन विकाश (८६) राग नट कल्याण आरती

आरतीकीजे बजरंगबाला की, बाला की भक्तनके लालाकी।टेर।
लाल लंगोटा करमे सोटा, केशरि सुवन पवन का ढोटा ।१।
रामको पायक सब गुणनायक, शिवको नन्द सदा सबलायक।२।
शूर धीर बुद्धि सिंधु पूरा, दुष्ट विनाश करे चकचूरा ।३।
'रामप्रकाश' नमो हनुमाना, कर कृपा बल दो वर दाना ।४।

भजन (८७) राग आशावरी पद टोडी

साधो भाई ! लयचिंतन दरशाया ।
प्रथम पाद स्थूल प्रक्रिया, ज्ञान योग गुण गाया ।टेर।
अकार उकार मकार तीसरा, अर्ध बिन्दु समपाया ।
विश्व तेजस प्राज्ञ समझो, साक्षी अलोगतराया ।१।
वैराट हिरण्यगर्भ और आव्यकृत, चेतन सो फरमाया ।
जाग्रत स्वप्न जान सुषोप्ति, तुरिय अवस्था लाया ।

स्थूल शूक्ष्म कारण देखो, महाकारण तज काया।
रजोगण तमोगुण सतोगुण सोई, निर्गुण आप समाया।३।
चर्मद्रष्टि रु दिव्य द्रष्टि, समद्रष्टि शुध्द ताया।
तीनों सृष्टि त्याग उपाधि, चतुर्थ चेतन छाया।४।
'उत्तमराम' उत्तम गुण ज्ञानी, द्रश्य-द्रष्टा थाया।
'रामप्रकाश' तत्वज्ञ अपना, द्वैत-अद्वैत विसराया।५।

भजन (८८) राग आशावारी, वेदान्त प्रक्रिया पद

साधो भाई ! आतम एक इकसारा।
आवागमन आवे रहीं जावे, व्यापक परम करतारा।टे।
सो निज रूप सदा निज केवल, पूर्ण विश्व मंझारा।
नाम रूप मिथ्या सब माया, ना तत्व कर्म विचारा।१।
चार शरीर, मुक्ति पुनि चारों, भोग भाव लख चारा।
शक्ति, चार वेद, महावाक्य, वाणी चार पुकारा।२।
अन्तः करण मात्रा चारों, तत्व संख्या प्रस्तारा।
पांच कोंस, भूमिका सातों, काण्ड, देव, गुण धारा।३।
अवस्था स्थान सुचार पिछानों, अभिमानी लख प्यारा।
सर्व पिछान द्रष्टि कर निश्चय, आतम एक निरधारा।४।
१-जाग्रत नैंन वैखरी वाणी, क्रिया शक्ति अथर धारा।
थूल स्थूल भोग अन्योना, अयंमात्मानंद ब्रह्म न्यारा।५।

तत्व ब्यालिस रजोगुण ब्रह्मा, कर्म मात्रा आकारा।
अन्न-प्राण मय कोश लख दोनों, मुक्ति सालोक्य नारा।६।
विश्व चर्म, त्वंपद मन ही, शुभ इच्छा सुविचारा।
तनुमानस तृतीय भूमिका, यह पूर्ण इतबारा।७।
२-स्वप्न कण्ठ मध्यमा वाणी, ज्ञान शक्ति यजु धारा।
शूक्ष्म लिंग भोग दिव्य प्राज्ञ, अहं ब्रह्मास्मि न्यारा।८।
सप्तदश तत्वा ओ३म उकारा, विष्णु सतो बुध्दि दारा।
मनो विज्ञान उपासना पूरी, तेजस सामीप्य भारा।९।
सत्वापति भूमिका लेहू, ततपद ईश विचारा।
सबते परे कुटस्थ धन पूरा, है निरलेप सुखारा।१०।
३-सुषोप्ति हृदय पश्यन्ति, द्रव्य शक्ति पसारा।
शाम वेद, तत्वमशि वाक्य, प्राज्ञ चितोऽहं प्यारा।११।
कारण आनन्द भोग प्रध्वंशा, मुक्त सारूप्य मकारा।
तमो तेज रूद्र नेति ज्ञाना, आनन्द कोश उंचारा।१२।
अंशशक्ति भूमि सम पञ्चम, आवर्ण अविद्या पारा।
त्वं तत के परे असीपद, जीवशीव इकधारा।१३।
तुरिय मुर्ध्दनि परालख बानी, महाकारण तन न्यारा।
तुरिय प्रत्यज्ञ आतम चेतन, एकोऽहं निरधारा।१४।
इच्छाना आभास तुरिय पद, अर्ध मात्र विस्तारा।
ऋग प्रज्ञानमानन्द तत्व हैं, मुक्ति सायुज्य आरा।१५।

गुणातीत मतो सत निरमल, कोशातीत अपारा।
साक्षी चेतन अत्यन्ताऽभावा, महा पद विस्तारा।१६।
पदार्थाभाविनी भूमिका षष्ठी, तुरियातीत अखारा।
सत चित आनन्द केवल पूर्ण, सर्वातीत निरधारा।१७।
महासृष्टि महाद्रष्टि अद्रष्टि, क्रिया सर्व प्रहारा।
निज पद में सब उलट उडाया, समझे संत उजारा।१८।
शून्य शून्य के आगे शून्य, व्यापक अक्षय आधारा।
भ्रान्ति दोष निवृति संशय, सर्व कर्म दह डारा।१६।
घट मठ तन्तु पट में व्यापक, अविरल आप इकसारा।
सकल कला सत रूप अनादि, नित निरलेप सहारा।२०।
सब में सता सता से न्यारा, आप सता सम सारा।
अविगत अखंण्ड अगोचर सोई, द्वेताऽद्वैत विडारा।२१।
सो मति रूप गति नहीं जाके, शुद्ध अपेची न्यारा।
अपनी गति आप ही लखता, नहीं मीठा नहीं खारा।२२।
माया पुरूष क्लीबे ना दरसे, सगुंण निगुंण अवतारा।
पिण्ड ब्रह्मण्ड द्रश्य ना दरसे, निश्चल एक रहारा।२३।
बाणी खाणी द्रष्ठ न मुष्ठा, ना प्रकृति ईशारा।
गणित प्रक्रिया थके सर्व ही, नहीं अनहद फूँवारा।२४।
है अनव्य अविनाशी अयवय, घनानन्द सुख सारा।
पारब्रह्म शुध्द लेश न रंच ही, अद्वय अद्वैत विचारा।२५।

सत चित आनन्द हस्ति अनलहक्क, इल्म सरूर संवारा ।
राघवप्रसाद गफूर मस्ताना, अपना पेच पुकारा ।२६।
'उत्तमराम' सदा परिपूर्ण, अस्ति भाति प्रिय प्यारा ।
'रामप्रकाश' रूप निज जाण्या, आद्व स्वरूप हमारा ।२७।

श्री स्वामी रामप्रकाशजी महाराज 'अच्युत' कृत

गुरू ज्ञान-सम्प्रदाय पंच मात्रा

ॐसतगुरू शरणा जीवत मरणा, धीरज धरणा कारज करणा
ततगुरू दीन्हा जीवन आला, पावेगा सतगुरू का बाला ।१।
भ्रम भेद अँधकार मिटाया, कर्म काट उज्वाला थाया ।
सत लखाया सत समाया, सत बिना कुछ मर्म न भाया ।२।
ज्ञान गूदड़ी टोपी युक्ति, शील कौपिन कंथा कर्म मुक्ति ।
संयम क्रिया आडबन्द भाई, कसिया कर्मकमर बन्दलाई ।३।
सुरति सुई विवेक का धागा, युक्ति थैकलियाँ सीवन लागा ।
सतगुरू दर्जी निरत सिलाई, वो पहनेंगे सब गुरू भाई ।४।
सत्य शैली उपराम उपवीता, बटुआ ध्यान गुणन कर गीता
पांच रंग पंच तत्व लाया, फल शांति का पाठ पढाया ।५।
दश गज धर्म अंग है चोला, पहने गुरूमुखि बाला भोला ।
इच्छारहित भावना झोली, माला मनन गुरू गम बोली ।६।

श्वासा सांग अनूप सुहाया, संतदास गूदड़ की माया।
कण्ठी सुमिरण रहनी चादर, श्रध्दा पाटी प्रतीति आदर ।७।
ब्रह्म अंचला धारे अवधूता, शिवविभूति ब्रह्म अनुभूता ।८।
कफनी मर्यादा पालन करनी, सुत संतोष भेष श्रम जरनी ।
जाप जांघियाँ लज्जा कर्ण कुण्डल, प्रेम पूजा यश तर्पण मुदग्ल
निर्भय नगरहै मठ निराशा,भोजन भाव जीव अविनाशा।९।
शर्त निर्लेप मोरछल लाया, द्वैष हीन जंग डोरा भाया ।
गुण उडयनि स्वाँग सुहाया,अनाहत नादश्रृंगी नाद बजाया१०
हरि भक्ति मृगछाला प्यारी, गुरू पुत्र पहने सो ब्रह्मचारी ।
त्रिगुण चकमक भाव भोजना,परम अमृतपेय परम योजना११
पात्र अपात्र विचार फरूहा,बहुगुणी तूम्बा कमण्डल किस्तूहा
गुरूज्ञान का दीपक पाया,ऋद्धि भण्डार स्थिरता माया ।१२
अमरत्व दण्ड रू धैर्य कुदाली, तप खड्ग तत्व कर झाली ।
वशीकार वैरागण टेका, समद्रष्टी चौगान विवेका ।१३।
मन का घोड़ा विरक्ति का जीना, प्राणायाम पोलो में दीना
इडा पिंगला पागड़े फेरा, ईश्वर नाम कँवल से घेरा ।१४।
सुषुमन से आ डेरा दीया, सीतल साधन भीतर लीया ।
अभरा सभरा सतसंत गाया,जीवत ओढ्या मूंआ बिछाया १५
तत्व जोड़ा वेश बनाया, निर्गुण ढाल बल बाण सजाया ।
शम दम फर बाणों के लागा,बोद्ध र्कोष संयम शस्त्र जागा १६

करणी कटार धार कर शूरा, फकर फिरिया विषम गढ़ पूरा
माया गढ़ जीतेगा बाला, ब्रह्म पद निज पावे लाला ।
स्वागत गुरु मय चेला पावे, निर्मलता धोती को लावे ।१८।
यज्ञोपवीत अखण्ड आनन्दा, सोहं माला सच्ची सन्दा ।
गुरु मंत्र की शिखा हमारे, हरि नाम गायत्री धारे ।१९।
स्थिर आसन कबहुं न डोले, सोहं सोहं हरदम बोले ।
तिलक पूर्ण ब्रह्म का ध्याना, नहीं जहां ज्ञ ज्ञाता ज्ञाना ।२०।
सन्ध्या निर्वैरता धारी, ब्रह्मानन्द का भोग लयारी ।
ब्रह्म प्रीति पीताम्बर धारा, छाप साक्षात्कार सुधारा ।२१।
ममता की मृगछाल बिछाई, तापर बैठे सब गुरु भाई ।
पंचकेशी जब पास हमारे, पाँचों को बैरी कस कस मारे ।२२।
चिंतन चेतन साक्षी पूरा, उत्तमराम निरखे गुरु नूरा ।
घटे बढे नहीं नित सवाया, नौ का अंक स्थिर रहवाया ।२३।
कोई अकेला अंकगण लीजें, छः से गुण कर, नौ संग दीजे ।
भाग तीन के भजन फल आवे, तामे पन्द्रह अंक मिलावे ।२४।
जोड़ ताहि भागदो दीजे, भजन फल सुविधा लख लीजे ।
ताते लिया अंक कम कीजे, शेष अटल अंक नौ लखीजे ।२५।
रामप्रकाश उत्तम का शरणा, साधु जीवन भव से तरणा ।
योपूरे सतगुरुका बाला, एक सौ आठश्री का रखवाला ।२६।
नामाक्षर गनि चौगुन करना, पांच मिलाय दुगुना धरना ।
भाग आठ से शेष रहावे, रमता राम सो उत्तम लखावे ।२७।

रामनन्द श्री राम दुहाई,'राघवप्रसाद' सदा मन भाई ।
साधु अखारा कोई न छेरे, जो छेड़े जा भव के फेरे ।२८।
'रामप्रकाश' पंच मात्रा गावे, साधु रक्षा सदाई पावे ।
सगुंण निर्गुण शुक्ष्म स्थूला, सब उपाधि निबरे मूला ।२९।
'उत्तमराम' गुरू वर ज्ञानी,ब्रह्मवेता ब्रह्म रूप अबानी ।
'रामप्रकाश' गुरू मय होई, उत्तम रामप्रकाश है सोई ।३०।

* कलि प्रभाव अष्ठक *

भेषधारी ज्ञानी संत, देख के ठठोल करे ।
माला देख देख नर, मखौल मचावे है ।।
साधु को भिखारी कहै, मंगता को साधु कहै ।
मर्यादा को ठेस ठौक, हांसी को उडावे है ।।
वृध्द, गुरू, मात, पिता, ज्ञानी संत वर मता ।
'राघवप्रसाद' ताहि, शीश ना नमावे है ।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो ।
राम के दुलारे संत, ताहि नहिं भावे है ।१।

पन्थ ग्रन्थ नये काढि, चेलों की करे है बाढि ।
गुरू की मर्यादि साढि, मूल ते बगावे है ।।
फैसन के बाल भेस, साधुता ना रही लेस ।
आप की अनूप ऐस, अनोखी मनावे है ।।

गृहस्थ हो प्रपंच भरे, त्यागी सो हो सांग करे ।
शिष्य मूड़ धन लाय, ब्याज को कमावे है ।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो ।
राम के दुलारे संत, ताहि नहीं भावे है ।२।
भेष को बनाय कर, संत की नकल करे ।
नाचना गावना कर, ताल को बजावे है ।।
तिलक बनाय ठाठ, गुरू की प्रणालि काट ।
आप महा बन गुरू, लोक ते पुजावे हैं ।।
भांग गांजा मांस दारू, तम्बाकू की अचे बोड़ी ।
मठधारी बन रहे, रंच न लजावे है ।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो ।
राम के दुलारे संत, ताहि नहि भावे है ।३।
राग ताल ठाठ तान, शास्त्र को प्रमान आन ।
नट भाति नाटय लाय, सांग को बनावे है ।।
पढ लिख तर्क कारी, पाक-रस दर्वी भयो ।
साधन ते शुन्य शील, तन को बढावे है ।।
साधु रीति प्रीति नीति, सब ते अनूठि चाल ।
बात ते महान बने, गुरू से सजावे है ।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो ।
राम के दुलारे संत, ताहि नहि भावे है ।४।

अन्याय को न्याय कहैं, अनीति को नीति सहैं।
बड़ा छोटा नांहि अहं, मन मानी गावे है।।
हिये ते न ज्ञान आय, देख देख करे जाय।
मोल की कविता लाय, नाम को पुजावे है।।
संतन सों ठाने रार, संसारि सों करे प्यार।
देखो ये जमाना यार, देख हांसी आवे है।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो।
राम के दुलारे संत, ताहि नाहि भावे है।५।

पहाड़ में रहन ते, होय जो महान संत।
स्यार सिंह वन्य पशु, सैल वन जावे है।।
भूखे प्यासे रहन ते, संत जो मानत जन।
रोगी-भोगी, हीन - जीव, भूख ते सड़ावे है।।
जटाधारी, बालकटे, ताहि को जो त्याग कहैं।
अजा भेड़ अन्य जन्तु, जाहि को वो चावे है।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो।
राम के दुलारे संत, ताहि नांहि भावे है।६।

आकास वृति के संत, भक्तन की भेंट आय।
परोपकार संपति को, मूढ बोले धावे है।।
ताहि की रक्षा को जन, मानत न थूल जन।
दीन हीन गरीब जे, देख शरमावे है।।

संत परिभाषा मान, कहा जाने जग जीव ।
तुच्छ मति चर्म दृष्टि, ताहि मन लावे है ।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो है ।
राम के दुलारे संत, ताहि नहीं भावे है ।७।

कल्पना की बात माने, जाति पाति आन जाने ।
सिद्धि पर्चा कहे छाने, पन्थ पोल ठावे है ।।
ग्रन्थ पन्थ दन्त कथा, ताहि को बनाय करि ।
प्रमाणित ठोस बात, हांसी में उडावे है ।।
संत गति जाने बिना, सिद्धाँत को छाने बिना ।
आप जैसे संत जाने, पोल में पुजावे है ।।
एसे जन जाहि पर, कलि को प्रभाव भयो ।
राम के दुलारे संत, ताहि नहि भावे है ।८।

* श्री उत्तम ज्ञान परिचय को अंग *

इन्दव छन्द

उत्तम ज्ञान विज्ञान सु उत्तम, उत्तम भक्ति रू नीति उचारे ।
उत्तम केवल भाव सु उत्तम, आनन्द उत्तम उत्तम प्यारे ।।
उत्तमराम सु उत्तम कृष्ण रू, उत्तम माधव ईश विचारे ।
'उत्तमरामप्रकाश' विचारत, सो गुरू उत्तमराम हमारे ।१।

उत्तम ध्यान पूजा जप उत्तम, उत्तम यज्ञ रु योग सुधारे ।
उत्तम देव देवी गण उत्तम, उत्तम लोक सु उत्तम धारे ।।
उत्तम मात पिता गुरु उत्तम, उत्तम वन्दन उत्तम वारे ।
'उत्तमरामप्रकाश' विचारत, सो गुरु उत्तमराम हमारे ।२।
उत्तम हरि हर तीर्थ उत्तम, उत्तम सो गुरुद्वार पधारे ।
उत्तम न्हावत सतसंग जावत, उत्तम आवत सोंहि सिधारे ।
उत्तम सागर ताल नदी सब, उत्तम नीर झुलावत सारे ।
'उत्तमरामप्रकाश' विचारत, सो गुरु उत्तमराम हमारे ।३।
उत्तम के बिन और न उत्तम, उत्तम सूझत उत्तम प्यारे ।
उतम के बिन संत न उतम, उतम एक अनेकन वारे ।।
उत्तम के बिन गुरु ना उत्तम, उत्तम ज्ञान गिरा गुण सारे ।
'उत्तमराम प्रकाश' विचारत,सो गुरु उत्तमराम हमारे ।४।
उत्तम गूदड़ पन्थ उजागर, उत्तम गुरु परम्परा प्यारे ।
उत्तम ज्ञान विद्या धन उत्तम, उत्तम संत महन्त उदारे ।।
उत्तम ग्रन्थ जपे जप उत्तम, उत्तम मोद अनूप उजारे ।
'उत्तमरामप्रकाश' विचारत, सो गुरु उत्तमराम हमारे ।५।
उतम भेष सुहावत मंगल, उतम रूप स्वरूप सुधारे ।
उत्तम पंचकेशी वर राजत, उतम चद्दर पावन पारे ।
उतम तिलक वैष्णव उतम, उतम तेमद चोला सुधारे ।
उतम रामप्रकाश विचारत, सो गुरु उतमराम हमारे ।६।

दुर्बल भाव विचारहु दुर्बल,दुर्बल तन मन वाणी विचारा।
दुर्बल के बल एक हरि गुरू, आस भरोस हु दुर्बल धार।
दुर्बल द्वार पुकार हु दुर्बल,दुर्बल अशरण शरण दातारा।
दुर्बलदास हु नेक सुदुर्बल, दुर्बल रामप्रकाश उचारा।७।
दुर्बल जप तप दुर्बल भाव सु, दुर्बल यज्ञ न योग आचारा।
दुर्बल करणी रू रहणी हु दुर्बल,दुर्बल कथनि नेक न वारा।
दुर्बल क्या बल पौरूष हु कर,सतगुरू आगिल शब्द पुकारा।
दुर्बलदास हू नेक सु दुर्बल,क्या मुख ते अरदास उचारा।८।
ओमहि निर्गुण ओम हिसुर्गुण,ओम ब्रह्मण्ड पिण्ड रु पसारा।
ओम हि शब्द अगोचर गोचर,विश्व विशाल अनूप अखारा।
ओम हि त्रिगुण ओम सुधाकर, ओम दिवाकर ओम उजारा।
ओमहि रामप्रकाश परमानन्द,ओमहि उतममंत्र विचारा।९।

त्रिभंगी छन्द

सतगुरू का शरणा,निडर विचरणा,औदर भरणा,नहीं शंका।
कर भिक्षा फिरणा, नाम सुमरणा,धर उर जरणा,राव रंका।
भ्रम भेंद विसरणा, कारज करणा, जीवत मरणा, दे डंका।
संत रामप्रकाशा, ज्ञानी भाषा,ब्रह्म विलासा; हो निःशंका।

❀ सत्य धर्म प्रचार को अंग ❀

बनाम

दशा धर्म गप्प दर्शन

◌ दोहा छन्द ◌

धर्म प्रकार विधि जो अहै, सो अवतार को वाद ।
रामप्रकाश प्रकट कहै, सुनुहुँ कोविद कवि साद ।१।
हरि १. हर २. अम्बा ३. धर्म जग, सन्त धर्म ४. विस्तार ।
वैष्णव शैव शाक्तम्बरी, ज्ञान रूप निरधार ।२।
(१.) श्री विष्णु के धर्म में, वैष्णव साख प्रचार ।
मुख्य चौबीस अवतार से, फैल्यो धर्म अपार ।३।
(२.) शंकर के शैव धर्म में, रूद्र ग्यारह अवतार ।
विविध पूजा प्रकट भई, साखा धर्म विचार ।४।
(३.) शक्ति पन्थ में शाक्त के, विविध रूप अवतार ।
नौ दुर्गा पुनि गणित ना, फैल्यो मायिक वार ।५।
यह तीनों पन्थ जगत में, व्यवहारिक व्यवहार ।
वैदिक धर्म साखा भई, भांति अनेक विस्तार ।६।
(१.) विष्णु के अवतार हो, कर्म धर्म के अंग ।
विविध कर्म विस्तार करि, नीति दीयो प्रसंग ।७।
(२.) शिव के रूद्र अवतार ते, शर्म धर्म भयो भार ।
तामस प्रकृति जगत की, ताते शर्म गई हार ।८।

(३.) शक्ति उपासन शाक्त में, आन धर्म अन्याय ।
शुद्धा शुद्धि विसरी सबे, बहचो जगत सब जाय ।९।
कर्मधर्म रू शर्मधर्म, आनधर्म यह तीन ।
हरि हर शक्ति ले चले, धर अवतार प्रवीन ।१०।
(४.) परमधर्म जग ते परे, मोक्ष ज्ञान के मान ।
त्रिगुण रहित निज को लखे, पावे जन कल्यान ।११।
एक धर्म बहु रूप ले, साखा भई अनेक ।
हरि १. सतो, हर है २. तमो, शक्ति ३. रजोगुण नेक ।१२।
(१.) हरि सतो के गुण लहै, भये चौवीस अवतार ।
समय समय पर प्रकट हो, कीन्हो धर्म विस्तार ।१३।
(२.) शिव तमोगुण धार के, रूद्र एकादश जोय ।
आसुरि धर्म को पौषते, विविध रूप भी सोय ।१४।
३. शक्ति रजोगुण प्रकृति, लागी सब के लार ।
लीली सूकी हो रही, शूक्ष्म थूल अपार ।१५।
मांई हिंगलाजी पन्थ में, रामदेव अवतार ।
ज्योति जगे पर्दा करे, बीसा विषय व्यवहार ।१६।
राजस पन्थ हिंगलाज को, पर्दा धर्म पसार ।
रूप अनेकों देवि के, सभी विषय व्यवहार ।१७।
रामदेव अवतार को, वैदिक नहीं प्रमाण ।
अन्ध विश्वासी जगत में, शाक्त धर्म परवाण ।१८।

देव देव सब ठौर पर, कई सतो, तम रूप।
दैविक दैत्यकि रूप दो, सर्वत्र कह्यो अनूप ।१९।
गीता सोलहवें अध्याय में, प्रकट कहै पुकार।
देवि-आसूरि रूप दो, दीहुन में अवतार ।२०।
(३) निजिया धर्म प्रमाण कह, रामदेव को ज्ञान।
धर्म हिंगलाजी देवि के, प्रकट पाट दिवान ।२१।
पाट गादि आचार्ज की, गादि साखिया होय।
बीर गादि के पास में, गादि जोगणी जोय ।२२।
भैरवि चक्र के फेर में, ज्योति धर्म में आन।
माईपन्थी, दशा कहि, दन्त कथा घड़ि गान ।२३।
चार गादि के बीच में, थपे पाट को थाट।
मनमुखि मंत्र बोलता, गावे पर्दे घाट ।२४।
हुक्म होय हनुमान को, आज्ञा ईश्वर वाख।
शाक्त उपासक आवता, परदा में पद पाख ।२५।
चरण धोय सब संत के, कोटवाल महराण।
जो आवे सो सन्त है, परदा के पर वाण ।२६।
खावे-जीमावे एकट्ठा, कौली करत बखाण।
हाथ धुलावे सबन का, एक ठाँव म आण ।२७।
चरणोदक हस्तोदकी, चरणामृत प्रसाद।
एक घाट मुख पीवता, कर कर प्रेम अहलाद ।२८।

एक थालि के बर्तना, एकण घाटे एह।
राजा–प्रजा जहँ रुचे, प्रेम प्रसादी लेह।२९।

तरखण, सीढी, पूतला, दर्भ बांधण बन्धांण।
पांच सात नौ बारह को, लटकावे नभ तांण।३०।

रुई तागा जोड़ के, पहुँचावे परवाण।
आग लगावे ओचती, स्वर्ग तणा सहनाण।३१।

जय मांई हिंगलाज की, बोलत प्यारा बोल।
जय रामदेव बोलता, आन धर्म का तोल।३२।

पाट थाट पर दीपता, मोटी–ज्योति प्रमाण।
चार कौने वारायती, ज्योति चार धर आण।३३।

हरिश्चन्द्र, प्रहलाद रु युधिष्ठर, बलि को है प्रसंग।
पांच, सात, नौ, बारह में, तैतीसों लौ संग।३४।

उलटा कहै इतिहास को, कलि में बलि को गाय।
हींया फूटा ओचता, बकता ज्यों मन आय।३५।

तरखण सरखण लाय के, ज्योति से हि जलाय।
स्वर्ग पहुँचावे पूतला, माल मस्खरा खाय।३६।

स्वर्ग पहुँचावे पूतला, हींडे में हुलराय।
जप तप साधन की हसी, योंहि पहुँचता जाय।३७।

रोल मची है जगत में, पोल भरी अज्ञान।
झोल पड़ी मिटती कठिन, बोल खुले कहूँ जान।३८।

युक्ति यह चारों तणी, रात जगावे चोर ।
सीरा, पुड़ी पकवान को, छुप कर खावे ओर ।३९।
कोली बाहर ना जावती, पर्दे को प्रसाद ।
मन मानी मुक्ति कहै, है केसी ? मर्याद ।४०।
शंख ढाल को अर्थ लो, दशा–बीसा एक ।
छोटा–मोटा अन्तरा, समझ्या सही विवेक ।४१।

○ कुण्डलिया छन्द ○

पोल धँसी आ जगत में, गाँगीरोलो गीत ।
चार बारायती होवता, दशा धर्म की रीत ।।
बड़ा धर्म की रीत, पाट पर्दे थरपावे ।
डाँभ पूतला स्वर्ग में, माल पर्दे में खावे ।।
चार जोत कोणे धरे, एक हिंगलाजी रोल ।
'रामप्रकाश' सांची कहैं, मची रोल में पोल ।४२।

एक मरे फिर जगत में, चलती रहे जु रीत ।
पाट बैठा पीढि करे, है आँधों की भींत ।।
हैं आँधों की भींत, कड़ी में कड़ी जड़ावे ।
कनफूँका कनफूँकता, कानगुरू पन्थ चलावे ।।
योंहि मुक्ति जो मिले, (क्यों) भटकत फिरे अनेक ।
'रामप्रकाश' युक्ति बिना, कल्पित मार्ग एक ।४३।

दोहा छन्द

पाट पूर तारे बहू, अपनी खबर न कोय।
आप मरे तब तारता, और कोई जो होय ।४४।
आप तरे बिन तारता, यह गति मूरख मान।
ज्ञानी विवेकी यों लखे, रामप्रकाश हैरान ।४५।
(४) परम धर्म उपकार मय, सन्तन को अवतार।
संत महापुरूष जगत को, नित्य प्रति करत उद्धार ।४६।
रामानन्द, शंकर पृभृत्य, व्यास, वशिष्ठ, दत्त आदि।
नानक, गोरख, कबीर मत, दादू आदू अनादि ।४७।
आध्यात्मिक उपासना, शुद्ध सतोगुण रूप।
जन्म मरण भय खेद हर, लखता आप अनूप ।४८।
भ्रम भ्रान्ति भेद को, मूल अविद्या अज्ञान।
सर्व निवृति दुःख की, करे सन्त कल्यान ।४९।
आत्म लखावे आप को, जन्म मरण की हान।
भ्रम को भूत भगाय के, निर्भय करत कल्यान ।५०।

* बात करामात-घनाक्षरी छन्द *

मंत्र जप कथा बात, देवी देव प्रसन्न की।
प्रणव गुरू शिक्षा बात, सिद्ध साधु जान है ।।
तन्त्र यन्त्र मन्त्र बात, भूत नाग जप बात।
कथा संग कुसङ्ग ते, पाप पुण्य मान है ।।

रीति काव्य रस नीति, बात ते नरेस माने ।
अर्थ-शास्त्र कला बात, लाख फरमान है ।।
'संत रामप्रकाश' यों, भरणत रुकम सुनो ।
मनुष्य के गात बात, करामात गान है ।१।
मंत्र जप नाना बात, प्रणव शिक्षा सभी बात ।
प्रीति रीति गीत ज्ञान, विज्ञान बतात ते ।
शास्त्र रू पुराण षट्, नव चार अष्टादश ।
वेद भेद सारी बात, काम नाम बात ते ।।
शिक्षा दिक्षा योग भोग, उपदेश अनीति नीति ।
न्याय सांख्य दर्शन ते, बात को बखान ते ।।
'संत रामप्रकाश' यों, भरणत रुकम सुनो ।
यश अपयश जग, बात करामात ते ।२।
प्रेम नेम ध्यान धर्म, ज्ञान रू विज्ञान कर्म ।
चार वाणी अनुभव सो, बात ही की बात है ।।
शिक्षा दीक्षा भिक्षा भ्रम, न्यायादि दर्शन सब ।
उपदेश अज्ञात बात, श्रवणादि से ज्ञात है ।।
संत गुरू वैद्य याद, वकील विवाद वाद ।
कवि संत वणिज आद, बांत ही की जात है ।।
मुक्ति युक्ति भुक्ति बात, यश अपयश बात ।
'संत रामप्रकाश' ये, बात करामात है ।३।
परा रू पश्यन्ति बात, मध्यमा रु वैखरी बात ।
मन इन्द्रिय ज्ञान जात, अनुपम बात है ।।
हाथ, पाँव, मुख, नैन, अनुभव बात सैन ।
कहै सुने लखे ऐन, बात ही की जात है ।।

करामात सारी बात, बात ही की करामात ।
बात मात्र सृष्टि जात, शास्त्र सुनात है ।।
'संत रामप्रकाश' ये, मनुष्य के गात मांही ।
लखत सुजान जन, बात करामात है ।४।

इन्दव छन्द

काहू के जात जमात को बल है,काहूके बस्ती - खेड़े पटेहै
काहू के चेले रु सेवक को बल,काहू के सोना रु चांदी खटे है
काहू के जर जकात बाहूबल,काहूके विद्या को मद छटेहै ।
रामभरोसो है रामप्रकाशके,और सभी बल मूल कटे है ५

दोहा छन्द-अनुप्रास

दो रुपये दोहरा, छः रुपये छन्द ।
कलि बेचे फिरते कवि, मोल लेत मति मन्द ।१।

कनक कसोटी-दोहा छन्द

पाहिमाम गुरू चरण में, उत्तम देव दयाल ।
त्राहिमाम गुरू शरण में, करहु पाल कृपाल ।२।
S ISI II III S- III SI ISI

कनक कसोटी-पयोधर, दोहा छन्द - अनुप्रास

उत्तम करत सत ओपमा, तुले बोध के तोल ।
III III IISIS- IS SI SSI
वरण भरत वर वेद के, बने शोध के बोल ।३।

कनक कसोटी-करभ, दोहा छन्द

मोल करे सत ज्ञान से, तोल बोध के तोल ।
SI IS II SIS- SI SI SSI
पावत वेद विलोय के, साध शोध ले बोल ।४।

ॐ

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज के शिष्य

संत किशनराम जी महाराज कृत पद्य

भजन (१) राग जिला काफी पद

सतगुरू साहिब दीन दयालू, शरणे मुझ को लीजो।
कृपा कीजो।टेर।
मेरे अवगुण नाथ विसारो, कर कृपा अब जन्म सुधारो।
सिर पर हाथ धरीजो, कृपा कीजो।१।
हम हैं बालक निपट अयानें, तेरा रूप नहीं कुछ जानें।
अपनी दया से रीजो, कृपा कीजो।२।
तुम हो हमरे परम गोसांई, घट घट में हो बाहिर मांई।
हमरे दोष हरीजो, कृपा कीजो।३।
'उतमरामा' आदि अनादू, शरणे आवे सारा सादू।
'किशनदास' पर धीजो, कृपा कीजो।४।

भजन (२) राग काफी पद

मनवा उलट देख लिया घटमें, झिल मिल ज्योति जागी।
दुविधा भागी।टेर।
मेरी तेरी छोड़ भ्रमना, सुरत भजन में लागी।१।
सुमिरण सारो भज प्रभू प्यारो, गुरू चरण में रागी।२।
वृति मोड़ भजन में जोड़ी, जग से हुआ अलागी।३।
साधन खोजा डारया बोजा, किसनदास वैरागी।४।

ॐ

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमराम जी महाराज के शिष्य-

सन्त हरिदासजी महाराज कृत वाणी

भजन विकाश (१) राग देश बधावा पद।

सईयों ! सत गुरू घर आया ए।
संशय शोक मिटचा मेरे मन का, भ्रम विलाया ए। टेर।
सत गुरू आया शब्द सुणाया, द्वैत उडाया ए।
नाना भूल भेद बहू भ्रान्ति, त्रिगुण ढाया ए।१।
उड़ गई नींद नैन भया निर्मल, तिमिर हटाया ए।
दुर्मति दोष मिटचा दुःख सारा, परमानन्द थाया ए।२।
पाप रू ताप कटचा सब फन्दा, साधन छाया ए।
भक्ति ज्ञान बोध निज पूर्ण, निश्चय ठहराया ए।३।
'उत्तमराम' दया के सिन्धु, ब्रह्मवेता निरमाया ए।
कहै 'हरिदास' अमर सत आतम, गुरू गम पाया ए।४।

भजन विकाश (२) राग झंझोटी पद गाने का

पधारो पिया ! मो अबला के सेणा। टेर।
श्याम बिना रंग रूप अलूणो, काजल फीके नेणा।१।
प्रीतम कारण काग उडाऊँ, जोय रही दिन रेणा।२।
निर्बल अर्ज करे नित हरदम, सुणो गोपी के बेणा।३।
कह 'हरिदास' मिलो मन मोहन, विरहनि को सुखदेणा।४।

ॐ

श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के शिष्य

स्वर्गीय सन्त प्रहलादरामजी वैष्णव कृत

भजन (१) राग आशावरी पद

साधो भाई ! द्रढ निश्चय निज आया ।
गुरू कृपा उत्तम गुरू पाया, शंशय भेद मिटाया ।टेर।
साधन सार चार चित अन्तर, भक्ति तत्व पाया ।
तन मन बाणी गुरू चरण में, सर्वस भेंट चढाया ।१।
श्रवण मनण धार निदिध्यासन,सधर विचार पजाया ।
तत त्वं पद शोधन कर साधन, संग शील सत ध्याया ।२।
सत्य आचार द्रस्टि सम निर्मल, कर्म कलेश हटाया ।
सत अद्वैत सच्चिदानन्द पूर्ण, साक्षी ब्रह्म अमाया ।३।
सतगुरू उत्तमराम! ब्रह्म ज्ञानी, सत अधिष्ठान द्रढाया ।
भक्त 'प्रहलाद' स्वामी नहिं सेवक,निज में द्वैत विलाया ।४।

भजन (२) राग पद लुहर संगीत

रामहै रामहै रामहै जी,गुरू आत्तमराम सतराम है जी ।टेर।
ज्ञान लखावत भेद नसावत, देत अखण्ड विश्राम है जी ।१।
भेद गमाया निज निज पाया, ज्ञान भक्ति के धाम है जी ।२।
ओम सोहं निजानन्द रमता, दीया राम सत नाम है जी ।३।
जनम मरण भव संशय काटा,सदा किया निष्काम है जी ।४।
साधन संग सब दोष निवारे, पावत सोई आराम है जी ।५।
'उत्तमराम' गुरू उत्तम पूर्ण, करे 'प्रहलाद' प्रणाम है जी ।६।

भजन (३) राग कान्हड़ा, लंगड़ी छन्द पद

विनति वार वार दीजो कान दीन की,
नमस्कार है दास आधीन की ।टेर।
हाथ जोड़ हाजिर रहूँ हरि,
कृपा करो गुरू पार करी ।
सत तत्व की सार भरी,
माला दो हरदम झीन की ।१।
भव सागर का दुःख बहु भारी,
भरयो हलाहल विपति उजारी ।
संत विलाई आतम सारी,
वृति शब्द मय लीन की ।२।
श्री गुरू पुरूषोत्तम पूरा,
काटो कर्म भ्रम अँकूरा ।
द्रष्टि दीन पर रहे हजूरा,
मिटे ममता जग हीन की ।३।
महरम गुरू पूरा दरशाया,
प्रेम प्याला दया कर पाया ।
अखण्ड नशा उर अन्तर आया,
वृति हरदम गम गीन की ।४।
'उत्तमराम' गुरू शरणे आया,
आतमराम हृदय मे ध्याया ।
'प्रहलाद' रत्न गुरू गम पाया,
माया मिटी अब तीन की ।५।

ॐ

श्री श्री १०८ श्री स्वामी रामप्रकाशजी महाराज के शिष्य अमृतराम (बड़ौदा निवासी) कृत

भजन (१) राग आशावरी पद-अर्जी

परम गुरू ! ऐसी अरज हमारी ।
अरजी सुन उत्तर माने दीजो, जाऊँ थाँने बलिहारी ।टेर।
सतसंग करूँ समझ नहीं आवे, किन का बनूं पुजारी ।
कैसा जाप जपुं हृदय में, मने समझ नहीं आरी ।१।
ज्यूँ पोपट पींजर में फँसग्यो, किसविध आवे बारी ।
ईस विध आय फँस्यो जुग माई, लेवो आप उभारी ।२।
त्यागी बनूं त्रांस मने लागे, मात पिता सुत नारी ।
ऐसी आग लगी अब तनमें, जग लागे सब खारी ।३।
कहा करूँ कह्यो नही जावे, मन माने न लगारी ।
कईक पाप कीया मारी काया, दोष लगा अति भारी ।४।
पल पल छिन छिन आयु घटत है, और घटे मझधारी ।
गुरू बिन ज्ञान गेलो नहीं सूझे, कहै 'अमृत' पुकारी ।५।

भजन (२) पृष्ट १०४ के भजन ८४ का प्रश्न राग आसावरी

अब हम ! गुरू से प्रीत लगाई ।
लागी प्रीत कबहू नहीं टूटे, छूटी मान बडाई ।टेर।
सतगुरू मेंरा समरथ ज्ञाता, आदि जुगति के माई ।
धरीया शीस चरण सतगुरू के, सतगुरू महर कराई ।१।
गुरू की महर हुई हम ऊपर, सो मेरे मन भाई ।
करम भरम का तोड़या मोरचा, सत की तोप चलाई ।२।

सत को पकड़ असत को त्यागा, काल बलि ठुकराई ।
ब्रह्मज्ञान सतगुरु पढाया, जीव का बंध छुड़ाई ।३।
'रामप्रकाश' मिला गुरु ज्ञानी, ऐसी सेन बताई ।
'अमृतराम' चरण में लोटे, भवजल पार लगाई ।४।

दोहा-सम्वत् युग नभ एक गुण, कुम्भ मास सिंहवार ।
रत्न तिथि पक्ष शिवनिशा, ग्रन्थ प्रकाश विचार ।१।
श्लोक-तावग्दर्जन्ति शास्त्राणिजम्बुका विपिने यथा ।
न गर्जन्ति महा शक्तिर्यावद्वेदान्त केसरी ।१।
श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थ कोटिभिः ।
ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव केवलम् ।२।
दोहा-ब्रह्मरूप अहै ब्रह्मवित, ताकी बानी वेद ।
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद ।१।
दोहा-संवत् सहस दो चौवालिस, मास वैशाख प्रमान ।
द्वितीय संस्करण छाप्यो भले, रामप्रकाश शुभजान ।२।

❋ शान्ति पाठ ❋

ओं३म् द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति पृथ्वी शान्ति रापः ।
शान्ति रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवा ॥
शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्वं घूं शान्ति रेवः शान्ति सामा ।
शान्ति रेधि, ओ३म् शान्ति ! शान्ति!! शान्ति!!! ।१।

ॐ

मानव जीवन उपयोगी ज्ञानवर्द्धक सचित्र उत्तम साहित्य

"हरीसागर' **चतुर्थावृति**

(समस्त ज्ञानों का भण्डार)

यह पुस्तक योगीराज श्री हरिरामजी महाराज विरचित कविता के 28 भागों में विभक्त है, जैसे- (1) गुरुमहिमा (२) अजाणी (3) जाणी (4) गुरु पिछान (5) गुरु अवस्था (6) गुरु शिष्य संवाद (7) पापी को अंग (8) मूर्ख को अंग (9) भक्त चतुर (10) षट्दर्शन सार (11 चौदह विद्या (12) राजनीति (13) माया का अंग (14) त्याग (15) पतिव्रता (16) व्यभिचारिणी (17) शील (18) सुमिरण (19) जोग चाणक (20) योग (21) गूदड़ पुराण (22) मन (23) चाणक (24) साधु (25) विचार को अंग (26) स्वामी जीयाराम जी कृत अनुभूत वाणी (27) कबीरजी और सुखराम जी महाराज के प्रश्नोत्तर (28) अचलरामजी महाराज कृत ब्रह्म प्राप्ति मार्ग सैलाणी इत्यादि विषयों से विभूषित एवं अन्त में 111 वर्ष का अनुभूत कैलेण्डर तथा कई छन्द-भजन भी दिये है, जो अनुभव का बेजोड़ उदाहरण है।

वाणी प्रकाश (छः महात्मा) **चतुर्थावृति**

इसमें श्री हरिरामजी, श्री जीयारामजी, श्री सुखरामजी, श्री अचलरामजी, श्री उत्तमरामजी और संत रामप्रकाशजी, इन छः महात्माओं की वाणियों का विभिन्न राग रागनियो में संकलन है, जो प्रत्येक सत्संगी पाठक के योग्य है। अंत में पिंगल मत का चमत्कार भी दिया है।

अचलराम भजन प्रकाश **नवमावृति**

संगीत की इस अद्धितीय पुस्तक में वेद, वेदान्त, गीता, उपनिषद, योग, सांख्य, मीमासाँ आदि आर्ष ग्रन्थों के सिद्धान्तों का सार भरा

है। भक्ति, ज्ञान, पाखण्ड-खण्डन, उपदेश आदि मुक्ति के साधनों युक्त वर्णाश्रम धर्म तत्वों को चटकीली राग रागनियों में कूट कूट भरा है और समस्त रागनियों के नाम तथा ताल-स्वर एवं समय प्रत्येक भजन के ऊपर दिये गए है और भूमिका में हारमोनियम बजाने-सीखने की विधि भी बतलाई है, जिससे शास्त्रोक्त संगीत का पाठकों को सहज में ही बोध हो सकता है, आठ महात्माओं के दर्शनीय सचित्रों सहित परिवर्द्धित प्रकाशन है।

उत्तमराम-भजन-प्रकाश **द्वितीयावृति**

इसमें ब्रह्म, प्रकृति, मुक्ति-तत्व तथा भक्ति, योग, वैराग्य और आत्मज्ञान, सदाचार सम्बन्धी सब प्रक्रियाओं आदि का गूढ़ रहस्य सरल भाषा में संगीत की चटकीली राग रागनियों में कूट कूट कर भरा हैं। समाज शिक्षा राजस्थान सरकार द्वारा तहसील वाचनालयों एवं विकास खण्ड पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत आध्यात्मिक पाठ्य पुस्तक जो सगुंण निगुंण के उपासक प्रत्येक सतसगी के पास रखने योग्य उपादेय चार सौ छन्दों व भजनों का सागर है।

अवधूत ज्ञान चिंतामणि **द्वितीयावृति**

इस पुस्तक में साहित्यक काव्य गुणों से पूरित सैंकड़ों छन्द, झूलना, इन्दव और भजनों का गहरे अर्थ विवेचना सहित पिंगल, योग, वेदान्त ज्ञान का रहस्य भरा है। राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग (बीकानेर) द्वारा प्रादेशिक डिवीजनल एवं जिला पुस्तकालयों के लिये मान्यता प्राप्त है।

भारतीय-समाज-दर्शन **शास्त्रीय विवेचन**

इस पुस्तक में प्राचीन वैदिक काल से लेकर इस समय तक के हिन्दू धर्ममय सामाजिक वर्ण व्यवस्था शैली के सब सिद्धान्तों और

प्राचीन एवं अर्वाचीन शासन व्यवस्था का आलोच्य स्वरूप तथा उसमें लाभ एवं हानियों आदि विषयों को कूट कूट कर अर्थात् इस छोटी सी पुस्तक रूप "गागर" में विशाल हिन्दू धर्म रूपी "सागर" भरा है। अतः यह पुस्तक सब धर्मों, शिक्षाओं की खान और सब ज्ञान का भण्डार है, जो सबके पढने योग्य हैं।

जैसे जीव, मानव की उत्पति कैसे हुई? समाज का निर्माण कैसे? समाज में चार वर्ण क्यों बने ? जातियों की उत्पति कैसे हुई ? हिन्दू धर्म और मुसलमान, पारसी, यहुदी, जैन, बोद्ध, ईसाई इत्यादि धर्मों की उत्पति स्थान विशेषताओं की संक्षिप्त जानकारी तथा वर्ण आश्रम के शास्त्रीय स्वरूप व अधिकार चयन को एवं आज के सामाजिक अध्ययन को पक्षपात रहित रोचकता पूर्ण तुलनात्मक विवेचनीय रहस्य को लिखा है। जिसमें वेद,पुराण उपनिषद्, इतिहास, स्मृत्यादि पांच सौ आर्ष ग्रन्थो के सैकड़ों प्रमाणों,उदाहरणों टिप्पणियों में प्रचुर सामग्री द्वारा समाज के उत्थान और पतन रूपरेखा का वर्णन किया गया है,जो प्रत्येक समाज प्रेमी मानव के लिए पढनें योग्य उपयोगी ग्रन्थ हैं। राज्य शिक्षा विभाग द्वारा पुस्तकालयों हेतु मान्य हैं।

विश्वकर्मा-कला-दर्शन

इस पुस्तक में पूजा, मुहुर्त एवं कला के तीन अनुच्छेदों में विविध प्रकार से शिल्प कला का महत्व, गज के एक एक इञ्ची पर प्राकृतिक दैविक अंश कलाओं का निवास, सर्व प्रथम लाभ मुहुर्त से गज को ग्रहण करने का विधान बताते हुए विश्व की समस्त कलाओं में काम आने वाले 36 औजारों के नाम सहित सारा कथन राजमिस्त्रियों एवं शिल्प विद्यार्थियों के लिए अत्युपयोंगी है।

नशा-खण्डन-दर्पण

आधुनिक प्रचलित व्यसनीय मादक पदार्थ जैसे चाय, तम्बाकू, हीरोइन,

अफीम, भांग, गांजा, चरस, कोकीन, दारू इत्यादि सार्वभोम पच्चींस नशों का ऐतिहासिक विवरण हजारो डॉक्टरों, वैद्य, हकीमों तथा धर्म -शास्त्र,पुराण,बाईबिल कुरान,आदि आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणों उदाहरणों की रोचकता सहित उन्नतिशील गद्य और मौलिक पद्यात्मक प्रवाह में इन्दव, घनाक्षरी, दोहादि संकड़ों छन्दों में हानि और लाभ के ज्ञान सम्पन्न नशा सीखने के कारण एवं नशा छोड़ने के अचूक उपाय तथा अन्त में वैदिक शिक्षा बत्तीसी, पिंगल के गूढ़ तत्व भी दिये है । पुस्तक अनमोल रत्न और अपने पुस्तकालय में रखने योग्य उपादेय है । जिस पर समाज-विशेषज्ञ महानुभावों द्वारा हजारों सम्मतियों का प्राप्त होना एव प्रादेशिक नशाबन्दी समितियों द्वारा खरीदना ही हमारी इस पुस्तक की उपयोगिता का प्रदर्शन है ।

गूढार्थ-भजन-मंजरी

अनेक ऐतिहासिक खोज भरे वंदना के 108 दोहे टिप्पणी सहित देकर पुस्तक को अति उपयोगी बनाई है, जिसे पढ़ते ही एक बार पाठक के मस्तिष्क को साहित्यिक प्रांगण में कसरत करनी पड़ती है ।

आदर्श शिक्षा — **एकांकी नाटक**

भारतीय पात्रों को रंचमंच पर दिखाकर समाज सुधार हेतु पतनकारी मादक, व्यशन निरोध जनक शिक्षा तथा अन्त में कई विवेक प्रक्रिया के भजन देकर छोटा मोती बना दिया है ।

रामरक्षा-अनुष्ठान संग्रह — **तृतियावृति**

इसमें प्रसिद्ध रामानन्दजी, रामदेवजी, कबीरजी, दादूजी, नानक देवजी, हरिरामजी, रामदासजी इत्यादि21 से अधिक सन्त महापुरुषों द्वारा कही गई रामरक्षाओं का संकलन करके साधन विधि सहित भूत, प्रेत, ग्रह-बाधा, रोग, संकट-निवारण, परीक्षा, नौकरी-आजीविका मुकदमा-विजय आदि धन प्राप्ति की सफलताओं के प्रदाता मन्त्रों को

को लिखा है, जो प्रत्येक साधक के लिये पास रखने में उपयोगी है।

बजरंग पच्चीसा

इनमें त्रिभंगो छन्दों द्वारा गुरू परम्परा के आचार्य श्री हनुमान वीर उपासना की महत्वपूर्ण वंदना है,जोउपरोक्त रामरक्षा गत सम्पन्न लाभ सुविधाओं से पूर्णविधि सहित है।

पिंगल रहस्य **छन्द विवेचन**

इस पुस्तक में हिन्दी व्याकरण का शास्त्रीय रूप वर्ण और मात्रा के भिन्न भिन्न संख्या, सूची,प्रस्तार, नष्ठ, उदिष्ठ, मेरु, पताका, मर्कटी आदि के चित्र, शोड्ष कर्म, अंग विस्तार तथा प्रमुख अष्ठाङ्गो का सचित्र विपरीतिकरण विभिन्न काव्यालङ्कार, रस-अनुप्रास भेद, श्लेष, यमकादि तथा कई छन्दों को जातियां, रूपक, उदाहरण विधि लक्षण एवं पर्यायवाची, बहुवाची, एकार्थ वाची, विलोमादि संज्ञाओं का बाहुल्य-देकर विधेय रीति से नव अनुच्छेंदों में लिखा गया है, जो प्रत्येक कविता-भावुक, विद्वान-विद्यार्थियों के देखने पढ़ने तथा संग्रह करने योंग्य अनुपम पुस्तक है। राजस्थान शिक्षा विभाग (बीकानेर) द्वारा कक्षा ९ से ११ में मान्य है।

अपूर्व लाख वर्षीय कैलेण्डर

एक 12" 12" इञ्ची साइज के मानचित्र में सन् 1 से लेकर ईसवीं से आने वाले एक लाख वर्षों का अर्थात् सृष्टि के अनन्त काल तक के वार, तारीख, महिने एवं वर्ष को देखने की सरल विधि सहित विधान दिया है।

उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली **द्वितीयावृति**

इसमें ज्योतिष सम्बन्धी वर्ष विचार, साधारण मुहूर्तों को ६७० दोहा छन्द चुटकुलों में देकर जनता के सुविधा हेतु प्रसार किया गया है, जैसे-बिना पंचांग नक्षत्र, योग या दैनिक चन्द्र निकालने की विधि

यमघट, सिद्धि, अभिजित योग आदि निकालने के सरल उपाय बताये है। लाख वर्ष कैलेण्डर को कण्ठस्थ करने, भाग कर गये मनुष्य, चोरी गई वस्तु, घर से निकले पशु तथा अनेक आश्चर्य प्रदायक परिवर्द्धित उत्तम बाल ज्योतिष योग दर्शाये है।

उमाराम अनुभव प्रकाश **सचित्र चतुर्थावृति**

इसमें बनानाथजी वैरागी के परमशिष्य अवधूत स्वामी उमाराम जी महाराज कृत तथा सुखरामजी, अचलरामजी, उत्तमरामजी एवं रामप्रकाशजी कृत संगीतमय भजन 153 व 371 छन्दों का अनूठा संगम है, यह स्वामी अचलरामजी द्वारा मूल संशोधित एवं रामप्रकाशजी द्वारा परिवर्द्धित अनुमार्जित शुद्ध संस्करण हैं। जिसमें आध्यात्मिक अद्वैत वाद का बेजोड़ दर्शन कराया गया हैं।

रामप्रकाश शब्दावली **प्रथमावृति**

प्रस्तुत पुस्तक में आध्यात्मिक समर के विजयीभूत प्रश्न-उत्तर के अनूठे भजन हैं। अन्त में वेदान्तबोध शब्द सग्रह देकर पुस्तक को प्रत्येक पाठक के उपयोगी बनाया है।

रामप्रकाश शब्द सुधाकर **प्रथमावृति प्रथमभाग**

इसमें पाखण्ड-खण्डन प्राचीन पौराणिक भूगोल के सात द्वीपों में ४६ खण्डों का वर्णन करते हुए गुरु-भक्ति युक्त नीति पूरित बोध मय भजनों के साथ व्यवहारिक, यौगिक एवं आध्यात्मिक संगम में गृहस्थोपयोगी अनूपम हरि ज्ञान गर्भ चेतावनी देकर विशिष्ठ निखार लाया गया है।

अचलोत्तम गुरु ज्ञान गीता **भाषानुवाद**

इसमें महेश्वर-पार्वती के संवाद में गुरु-महत्व, गुरु-शब्दार्थ, अचल उत्तम राम गुरु स्वरूप ज्ञान प्रसाद का श्लोकानुवाद करके सरल भाषा में गुरु तत्व का सगुण-निगुण विवेचन कहा है।

अन्त्येष्ठि संस्कार दर्पण शवयात्रा

इसमें चार सर्गाध्याय कथन करके रोगी रुग्णावस्था सेवा, प्राण-त्याग विधि, अन्त्येष्ठि दाह संस्कार, अग्नि प्रदीप्न, अस्थि प्रक्षालन मृतक दशान्ह क्रिया आदि हिन्दू संस्कार सनातन नीति का कथन है।

रामप्रकाश भजन माला तृतीयावृति

इसमें आध्यात्मिक विषय पर अनेक राग रागनियों में बने भक्ति ज्ञान मय कुल 117 बोध्द मय उपदेश के भजन है।

सत्यवादी वीर तेजपाल तृतीय संस्करण

इसमें राजस्थान के प्रसिद्ध वीर तेजाजी के अपूर्व सम्पूर्ण जीवन चरित्र को विस्तार से सरल भाषा में लिखा है। जिसके अन्त में लोकगीत भी है।

रामदेव ब्रह्म पुराण दशवां संस्करण

रामदेवजी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र सायर मेघवाल के घर जन्म से लेकर समाधि तक एवं उनकी अनूठी सिद्धियों का सरल भाषा मे वर्णन हैं।

गोरख बोध वाणी संग्रह सरल भाषा में

इसमें मच्छन्द्रनाथजी और गोरखनाथजी का प्रश्नोंतर श्री दत्तोत्रेय स्वामी एवं गोरख संवाद प्राचीन छन्दों का सरलानुवाद सरल भाषा टीका में किया गया है, अन्त में कई भजन भी दिये है। यह दो सौ वर्ष पुरानी हाथ लिखी पुस्तक का प्रकाशन है।

देवीदान कल्पतरू अर्थात् सुगम उपचार दर्शन

इसमें कई प्रकार की जड़ी बूटियों, देशी आयुर्वेदिक दवाईयों के परीक्षित नुस्खे, सेंकड़ों रोगों के अनेक घरेलू उपचार जो आज से पचास वर्ष पहले प्रसिद्ध महात्मादेवीदानजी द्वारा संकलित एक देवीदान अनुभव प्रकाश पुस्तक छपा था, जिसे पूर्ण रूप से आकारादि क्रम से संशोधित. संकलित एंव परिवर्द्धित करके नये अर्थानुकूल नाम से छपाकर तैयार करवाया गया है। (तृतीयावृति तैयार है)

❁ मंगल मय प्रार्थना ❁

जय जग वंदन नन्द के नन्दन, पाण्डू सयन्दन हांकन हारे।
र्चचित चन्दन कष्ट निकन्दन, ग्राह गयन्द निग्राह विदारे॥
इन्द्र फणीन्द्र कविन्द्र मुनिन्द्र रू, छन्द गुणी गुण वृन्द उचारे।
ग्रानन्द कन्द मुकुन्द गोविन्द, करो दुख द्वन्द निकन्द हमारे॥१॥

गज को तराया चढ, ग्रावने को जावने को।
राग रूप सुनने को, गणिका तराई है॥
तारा है जो रविदास, ताबरा बनावने को।
ताफा बनवाने को ही, तारया सैना नाई है॥
तारा है जो दतात्रेय, भागवत सुनने को।
रोटिया पकावने को, तारी मीराबाई है॥
कहत मुराद मान, सुनो हरि ग्रष्ठयाम।
बिना काज तारो प्रभु, ग्राप की बड़ाई है॥२॥

तण्डुल के काज प्रभु, कञ्चन महल किये।
बेर काज भीलनी को, विमान बिठाई है॥
ग्रंगुलि पे लागा जब, चूनरी का चीर दिया।
सभा बीच द्रोपदि की, इज्जत बचाई है॥
विदुर की देख भाजी, खाते मन हुग्रा राजी।
सैना दुर्योधन सारी, क्षण में खपाई है॥
कहत मुराद मान, सुनो हरि ग्रष्ठयाम।
बिना काज तारो प्रभु, ग्राप की बड़ाई है॥३॥

तूं ही नाम तारण, सभी काम सारण, धरो उस बारण, निवारण करेगा।
नथा दांत वाको, दिया दूध मांको, खबर है खुदा को, सबर जो करेगा।
मुरादन कहै यार मुक्कद्दर के ग्रन्दर, जहं टक मारा, न टारा टरेगा।४।

❀ उत्तम आश्रम जोधपुर का प्रसिध्द उत्तम साहित्य ❀

1 हरिसागर (स्वामी हरिरामजी वैरागी कृत)
2 वाणि प्रकाश (छ: संतों की वाणी)
3 अचलराम भजन प्रकाश (४२५ भजन, सैलाणी)
4 उमाराम अनुभव प्रकाश (संशोधित संस्करण)
5 उत्तमराम भजन प्रकाश (ग्लेज कागज) द्वितीयावृति
6 अवधूत ज्ञान चिंतामणि (झूलना, इन्दव, दोहा, चौपाई, भजन)
7 पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन) शोड्ष कर्म सचित्र विधि
8 भारतीय समाज दर्शन (वर्ण व्यवस्था का प्राचीन रूप)
9 नशा खण्डन दर्पण (२५ नशों की त्याग विधि, इतिहास)
10 विश्वकर्मा कला दर्शन (कला, मुहूर्त, पूजन त्रय अनुच्छेद)
11 रामप्रकाश शब्दावली, (प्रश्नोत्तर भजन, वेदांत-पदार्थ)
12 रामप्रकाश शब्द सुधाकर (७ द्वीप, ४६ खण्ड, गर्भ चेतावनी)
13 रामप्रकाश भजनमाला (११७ भजन विविध रागों में)
14 राम रक्षा अनुष्ठान संग्रह (२१ रक्षाऐं, साधन विधि सहित)
15 गुढार्थ भजन मंजरी (१०८ दोहा, सटिप्पणी)
16 अचलोत्तम गुरुज्ञान गीता (सरल भाषानुवाद, बड़े अक्षर)
17 अन्त्येष्ठि संस्कार दर्पण (शव यात्रा) चार सर्ग में विधि
18 गोरख बोध वाणी संग्रह, (प्रश्नोत्तर, टीका सहित)
19 देवीदान सुगम उपचार दर्शन, (औषधि कल्पतरू)
20 रत्नमाल चिंतामणि (प्रथम भाग) प्रश्नोत्तर, उपदेश दोहा
21 रामायण मन्त्र उपासना (रामायण की सिद्ध चौपाईयाँ)
22 एक लाख वर्ष का पत्राकार कैलेण्डर (ई. सन्.मास तारीख)
23 उत्तम बाल योग रत्नावली (कर्म, स्वर, ज्योतिष का योग)
24 रामदेव ब्रह्म पुराण (भाषा) रामदेवजी का जन्म-जीवन
25 निर्गुण राम भजनावलि (वेदान्त प्रक्रिया संगीतमय १२५ भजन)
26 सत्यवादी वीर तेजपाल (सम्पूर्ण इतिहास भाषा)
27 उत्तमराम अनुभव प्रकाश (३२१ भजन, वेदान्त, उपदेश पद्य)
28 उपासना का अनावरण (८० प्रश्न, रामदेव गप्प दर्शन)
29 उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली [६७० दोहे]

सम्पर्क करे:- उत्तम प्रकाशन कागासागर जोधपुर-342006

अपने शहर के प्रसिध्द पुस्तक विक्रेता से खरीदें।